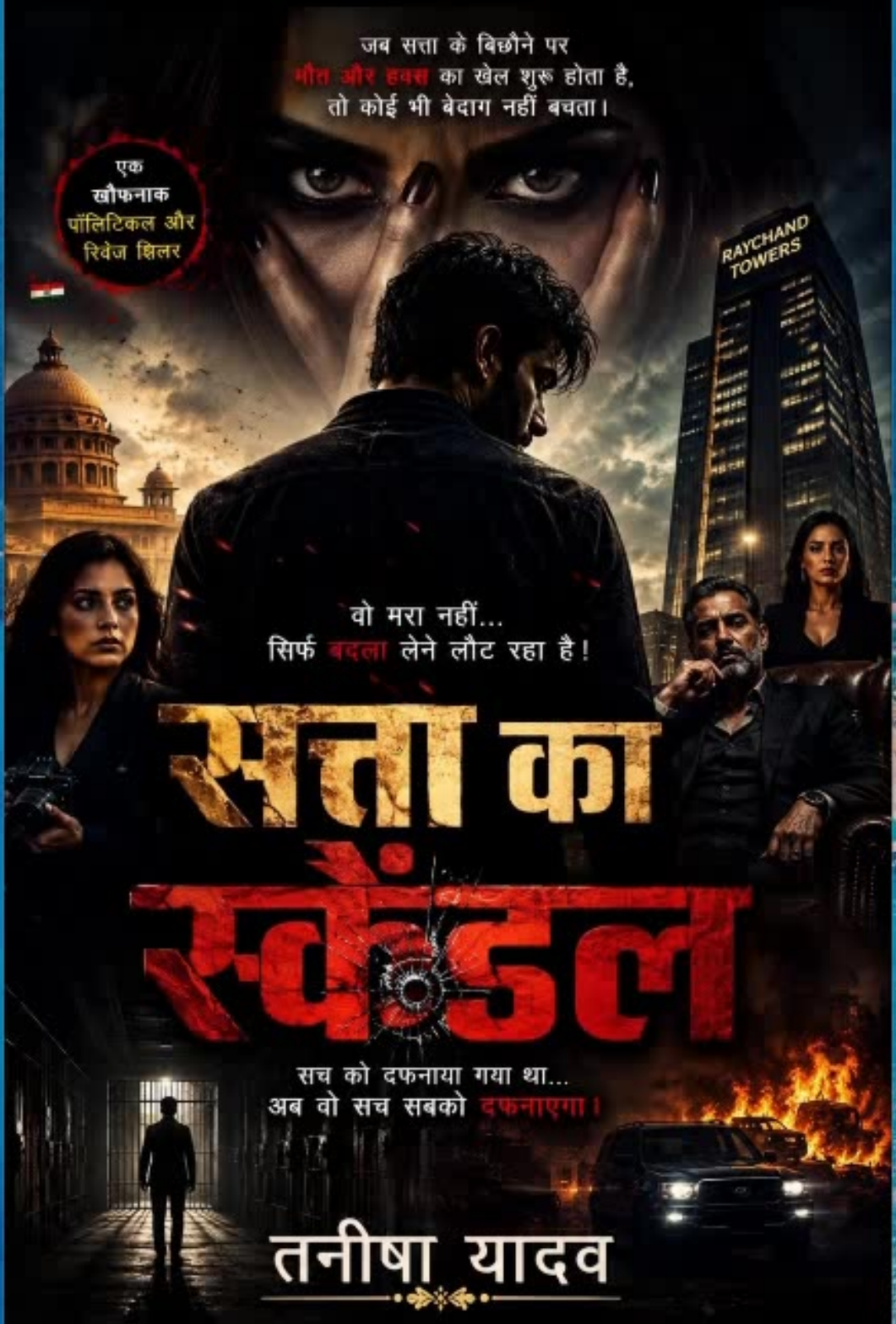
जब सत्ता के बिछौने पर
मौत और हवस का खेल शुरू होता है,
तो कोई भी बेदाग नहीं बचता।
एक
खौफनाक
पॉलिटिकल और
रिवेंज थ्रिलर
RAYCHAND
TOWERS
वो मरा नहीं...
सिर्फ बदला लेने लौट रहा है!
सत्ता का
स्कैंडल
सच को दफनाया गया था...
अब वो सच सबको दफनाएगा।
तनीषा यादव

# सत्ता का स्कैंडल

## डिस्क्लेमर

**यह कहानी पूर्णत: काल्पनिक है। इसमें वर्णित सभी पात्र, घटनाएँ, स्थान, संवाद और परिस्थितियाँ लेखक की कल्पना की उपज हैं। यदि इनका किसी वास्तविक व्यक्ति (जीवित या मृत), संस्था, समुदाय, स्थान या वास्तविक घटना से कोई साम्य दिखाई देता है, तो उसे मात्र संयोग समझा जाए।**

**इस कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन और साहित्यिक प्रस्तुति है। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति, धर्म, जाति, समुदाय, संस्था या विचारधारा की भावनाओं को आहत करना, उनका समर्थन करना या उनका विरोध करना नहीं है।**

**पाठकों से अनुरोध है कि इस कहानी को केवल एक काल्पनिक रचना के रूप में पढ़ें और वास्तविक जीवन से जोड़कर न देखें।**

## अध्याय 1:

राजधानी की हवाओं में आज एक अलग ही तरह की सरगर्मी थी। अक्टूबर की हल्की गुलाबी ठंड ने दस्तक दे दी थी, लेकिन इलेक्शन कमीशन के हेडक्वार्टर के बाहर का तापमान जैसे उबल रहा था। मेन गेट के बाहर ओबी वैन्स की लंबी कतारें लगी थीं और कैमरा पर्सन्स अपने ट्राइपॉड सेट करने के लिए एक-दूसरे से धक्का-मुक्की कर रहे थे। हर बड़े न्यूज़ चैनल का रिपोर्टर माइक हाथ में लिए लाइव पीटीसी दे रहा था। अंदर प्रेस कॉन्फ्रेंस रूम खचाखच भरा हुआ था। कैमरों की फ्लैशलाइट्स और पत्रकारों की कानाफूसी के बीच, चीफ इलेक्शन कमिश्नर ने अपनी कुर्सी संभाली, चश्मा ठीक किया और माइक को अपनी तरफ खींचा। पूरे कमरे में पिन ड्रॉप साइलेंस छा गया।

"देवियों और सज्जनों," कमिश्नर की भारी आवाज़ स्पीकर्स के ज़रिए पूरे देश में गूंज उठीं। "राज्य विधानसभा चुनाव की तारीखों को लेकर जो कयास लगाए जा रहे थे, आज हम उन पर विराम लगा रहे हैं। चुनाव अगले महीने की 15 तारीख को एक ही चरण में संपन्न होंगे। और नतीजे 20 तारीख को घोषित किए जाएंगे। इसी के साथ राज्य में मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है।"

यह महज़ एक घोषणा नहीं थी, यह उस राजनीतिक युद्ध का शंखनाद था जिसका इंतज़ार सत्ता के गलियारों में पिछले पांच सालों से हो रहा था।

शहर के सबसे पॉश वीआईपी इलाके, लुटियंस ज़ोन के एक आलीशान सरकारी बंगले में, आर्यन प्रताप की नज़रें दीवार पर टिकी 75 इंच की टीवी स्क्रीन पर जमी थीं। 38 साल का युवा, ऊर्जावान और बेदाग छवि वाला सांसद। आर्यन महज़ एक राजनेता नहीं था, वह एक यूथ आइकॉन था। उसका शार्प जॉलाइन, फिटनेस, कॉटन के सफेद कुर्ते के साथ स्लीक एप्पल वॉच पहनने का स्टाइल और उसकी बेबाक स्पीचेस युवाओं को पागल कर देती थीं। लोग कहते थे कि राजनीति की इस सड़ी हुई कीचड़ में आर्यन वो अकेला कमल है जिस पर कभी भ्रष्टाचार या किसी स्कैंडल का कोई दाग नहीं लगा।

लेकिन आज, चुनाव की तारीख सुनते ही उसकी आंखों में जीत की चमक के बजाय एक गहरी, ठंडी सोच तैर गई। उसके चेहरे की मांसपेशियां तन गईं।

तभी ओक-वुड का भारी दरवाज़ा खुला और गोविंद सिंह अंदर दाखिल हुआ। गोविंद—पार्टी का जनरल सेक्रेटरी, आर्यन का सबसे पुराना दोस्त और उसका सबसे भरोसेमंद पॉलिटिकल स्ट्रैटेजिस्ट। गोविंद की उम्र पैंतालीस के करीब थी। उसके बाल हल्के सफेद हो चुके थे, जो उसके तजुर्बे की गवाही देते थे। वह हमेशा एक परफेक्ट टेलर्ड डार्क सूट पहनता था और उसके चेहरे पर हमेशा एक सधी हुई, रहस्यमयी मुस्कान रहती थी, जो कभी उसके असली जज़्बातों को पढ़ने नहीं देती थी। गोविंद उन चंद लोगों में से था जो बंद दरवाज़ों के पीछे सरकारें बनाने और गिराने का माद्दा रखते थे।

"रणभेरी बज चुकी है, आर्यन," गोविंद ने अपने हाथ में पकड़ी लेदर की फाइल टेबल पर रखते हुए कहा और टीवी का वॉल्यूम म्यूट कर दिया। "दिल्ली हाईकमान से अभी-अभी कन्फर्मेशन कॉल आ चुका है। कल सुबह पार्टी प्रेसिडेंट ऑफिशियल प्रेस कॉन्फ्रेंस करेंगे और ऐलान कर दिया जाएगा कि तुम ही हमारे सीएम फेस हो।"

आर्यन ने एक गहरी सांस ली और सोफे से उठकर कांच की बड़ी खिड़की के पास चला गया। बाहर लॉन में उसके समर्थक जुटना शुरू हो गए थे।

"सीएम फेस... सुनने में बहुत अच्छा लगता है, गोविंद। लेकिन तुम जानते हो, विपक्ष इसे आसानी से हज़म नहीं करेगा। करंट गवर्नमेंट एंटी-इन्कंबेंसी से जूझ रही है, उनके पास खोने को बहुत कुछ है। माया चौधरी की नज़र मेरी हर हरकत, हर सांस पर होगी। वो औरत इलेक्शन जीतने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है।"

"माया चौधरी एक ब्रिलियंट स्ट्रैटेजिस्ट हो सकती है, लेकिन तुम्हारे खिलाफ उसके पास इस्तेमाल करने के लिए कुछ भी नहीं है," गोविंद ने आर्यन के कंधे पर हाथ रखते हुए बेहद कॉन्फिडेंस के साथ कहा। "हमारा सबसे बड़ा वेपन तुम्हारी इमेज है। तुम्हारी स्लेट एकदम क्लीन है, आर्यन। कोई स्कैम नहीं, कोई कॉन्ट्रोवर्सी नहीं, कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड नहीं। जनता एक ऑनेस्ट लीडर चाहती है और तुम उनके लिए परफेक्ट चॉइस हो। हमें बस इस नैरेटिव को इलेक्शन डे तक मेंटेन रखना है।"

**क्लीन स्लेट?**

गोविंद के इन शब्दों ने आर्यन के सीने में एक अजीब सी चुभन पैदा कर दी। दिमाग के किसी अंधेरे, दबे हुए कोने में सालों पुराना एक फैसला, एक भयानक रात, एक गलती और एक खौफनाक राज़ अचानक दस्तक देने लगा। आर्यन के कानों में अचानक तेज़ बारिश की आवाज़ और किसी के चीखने की गूंज सुनाई देने लगी। एक ऐसा राज़ जो अगर बाहर आ गया, तो सीएम की कुर्सी तो बहुत दूर की बात है, उसका पूरा पॉलिटिकल करियर, उसकी इज़्ज़त, सब कुछ एक झटके में खाक हो जाएगा। उसने ज़बरदस्ती मुस्कुराते हुए अपने इस गहरे खौफ को गोविंद से छुपा लिया।

"तुम सही कह रहे हो, गोविंद। हमें बस अपने कैंपेन पर फोकस करना है," आर्यन ने कहा, लेकिन उसकी आवाज़ में वो पुराना आत्मविश्वास नहीं था।

वहीं दूसरी तरफ, शहर के बीचों-बीच स्थित 'द नेशनल ट्रुथ' न्यूज़ चैनल के शोर-शराबे वाले न्यूज़रूम में एक अलग ही तरह का पागलपन छाया हुआ था। टेलीफोन्स लगातार बज रहे थे, प्रोड्यूसर्स चिल्ला रहे थे और इंटर्न्स स्क्रिप्ट्स लेकर इधर-उधर दौड़ रहे थे। इसी अफरातफरी के बीच, देश की सबसे तेज़-तर्रार और खूंखार मानी जाने वाली इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिस्ट, **तनिशा**, अपनी कॉर्नर डेस्क पर बैठी थी।

तनिशा की उम्र महज़ 30 साल थी, लेकिन उसके नाम से बड़े-बड़े कैबिनेट मिनिस्टर्स खौफ खाते थे। वो बिना मेकअप के, बिखरे हुए बालों और एक ओवरसाइज़्ड डेनिम शर्ट में बैठी थी। उसकी स्क्रीन पर आर्यन प्रताप की तस्वीर फ्लैश हो रही थी, जिसके नीचे ब्रेकिंग न्यूज़ का बैनर चल रहा था: *आर्यन प्रताप होंगे अगले मुख्यमंत्री!*

तनिशा ने अपनी ब्लैक कॉफी का एक बड़ा घूंट लिया और स्क्रीन पर आर्यन की मुस्कुराती हुई तस्वीर को ऐसे घूरा जैसे वह उसकी आंखों के पार देखना चाहती हो। उसका मानना था कि हर राजनेता एक बहुत अच्छा एक्टर होता है, और यह आर्यन प्रताप तो ऑस्कर डिज़र्व करता था।

तभी तनिशा का बॉस, चैनल का एडिटर-इन-चीफ, **पाटील सर** अपने केबिन से बाहर आए और सीधे तनिशा की डेस्क के पास आकर खड़े हो गए।

"तनिशा, मेरे केबिन में आओ। अभी," पाटील सर ने अपने चिर-परिचित सख्त लहज़े में कहा और वापस मुड़ गए।

तनिशा ने अपना लैपटॉप बंद किया और पाटील सर के केबिन में दाखिल हुई। पाटील सर अपनी लेदर चेयर पर बैठे थे। न्यूज़ इंडस्ट्री में उनका नाम बहुत बड़ा था, और उनका अनुभव उनके सफेद बालों और चेहरे की झुर्रियों से झलकता था।

"इलेक्शन डिक्लेयर हो गए हैं। पूरा स्टेट आर्यन प्रताप के नाम पर पागल हो रहा है। हर ओपिनियन पोल कह रहा है कि वो क्लीन स्वीप करेगा," पाटील सर ने डेस्क पर उंगलियां टैप करते हुए कहा। "लेकिन मुझे इस मिस्टर परफेक्ट की कहानी में कुछ मिसिंग लग रहा है। एक आदमी इतना बेदाग कैसे हो सकता है? मुझे एक एक्सक्लूसिव एक्सपोज़ चाहिए तनिशा। मुझे आर्यन प्रताप का असली चेहरा चाहिए, वो चेहरा जो उसने पब्लिक से छुपा रखा है।"

तनिशा के होठों पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान तैर गई। "सर, पॉलिटिक्स में क्लीन जैसा कुछ नहीं होता। हर सफेद कुर्ते के पीछे एक ऐसा दाग होता है, जिसे धोने के लिए किसी न किसी का खून बहा होता है या कोई तिजोरी टूटी होती है। आर्यन प्रताप कोई संत नहीं है। वो बस दूसरों से ज्यादा स्मार्ट है।"

"तो जाओ और साबित करो," पाटील सर ने डेस्क पर हाथ मारते हुए कहा। "तुम्हारे पास एक महीना है। मुझे आर्यन प्रताप की पूरी जन्म कुंडली चाहिए। उसके फाइनेंसेस, उसके पुराने दोस्त, उसकी पर्सनल लाइफ, सब कुछ खंगाल डालो। अगर उसके पास कोई सीक्रेट है, तो वो प्राइम टाइम पर हमारे चैनल पर ब्रेक होना चाहिए।"

"इन बॉस," तनिशा ने पूरे कॉन्फिडेंस के साथ कहा। "मैं उस आदमी का वो सच बाहर निकालूंगी जो उसने खुद से भी छुपा कर रखा होगा।"

तनिशा केबिन से बाहर निकली। उसे चैलेंजेस पसंद थे। आर्यन प्रताप उसके लिए सिर्फ एक असाइनमेंट नहीं था, वो सत्ता के उस अहंकार को तोड़ने का एक मौका था जिससे उसे सख्त नफरत थी। सच उसके लिए हमेशा रिश्तों, भावनाओं और किसी भी इंसान की इमेज से बहुत बड़ा था।

राजधानी के इस हाई-वोल्टेज ड्रामे से लगभग चार सौ किलोमीटर दूर, एक छोटे से ज़िले में इलेक्शन का असली और ज़मीनी रंग दिख रहा था। यहां धूल भरी सड़कों पर लोकल रिपोर्टर्स की अपनी ही एक अलग दुनिया थी।

बंटी और गोलू, एक लोकल वेब पोर्टल 'तीखी मिर्ची न्यूज़' के रिपोर्टर और कैमरामैन, एक पुरानी मारुति 800 में सवार होकर एक लोकल विधायक की रैली कवर करने जा रहे थे। बंटी ने गले में एक लाल रंग का गमछा डाल रखा था और हाथ में एक सस्ता सा चाइनीज़ माइक पकड़े हुआ था जिस पर उनके पोर्टल का बड़ा सा स्टिकर चिपका था। गोलू पीछे बैठा अपने पुराने हैंडीकैम की बैटरी सेट करने में जूझ रहा था।

"अबे गोलू, आज विधायक जी का ऐसा इंटरव्यू लेंगे कि अपना वीडियो सीधा वायरल होगा यूट्यूब पे," बंटी ने पान चबाते हुए कहा। "तू बस फोकस एकदम विधायक जी के पसीने पे रखना। पब्लिक को दिखना चाहिए कि नेता जी जनता के लिए कितना पसीना बहा रहे हैं।"

"भैया, कैमरे की बैटरी सिर्फ दस मिनट की बची है। विधायक जी अगर ज्यादा लंबा भाषण पेल दिए तो अपना कवरेज तो बीच में ही फुस्स हो जाएगा," गोलू ने घबराते हुए जवाब दिया।

"तू टेंशन मत ले। अपन सीधा पॉइंट पर बात करेंगे," बंटी ने गाड़ी एक धूल भरे मैदान के पास रोकते हुए कहा जहां टेंट लगा था और माइक पर अजीब सी भनभनाहट की आवाज़ आ रही थी।

बंटी और गोलू ने जैसे ही टेंट में एंट्री मारी, उन्होंने देखा कि विधायक जी भाषण देने के बजाय अपने ही कार्यकर्ताओं से इस बात पर लड़ रहे थे कि स्टेज पर समोसे क्यों नहीं पहुंचे। बंटी ने तुरंत माइक ऑन किया और कैमरे की तरफ देखकर चिल्लाया, "दर्शकों, देखिए ज़मीनी हकीकत! जहां एक तरफ राजधानी में मुख्यमंत्री की कुर्सी की लड़ाई चल रही है, वहीं यहां हमारे विधायक जी समोसे के लिए संघर्ष कर रहे हैं!"

यह एक हास्यास्पद नज़ारा था, लेकिन बंटी और गोलू को नहीं पता था कि आने वाले दिनों में उनकी यही बेवकूफी भरी और उल्टी-सीधी रिपोर्टिंग उन्हें इस राज्य के सबसे बड़े और खौफनाक पॉलिटिकल स्कैंडल के बिल्कुल बीचों-बीच लाकर खड़ा कर देगी। एक ऐसा स्कैंडल जिसकी जड़ें इन छोटे-छोटे कस्बों से होते हुए सीधे आर्यन प्रताप के बेडरूम तक जाने वाली थीं।

रात के दो बज चुके थे। राजधानी खामोश थी, लेकिन आर्यन की आंखों से नींद कोसों दूर थी। वह अपने स्टडी रूम में अकेला बैठा था। कमरे में सिर्फ एक विंटेज टेबल लैंप की पीली रोशनी थी। सामने टेबल पर एक क्रिस्टल के ग्लास में सिंगल मॉल्ट व्हिस्की रखी थी, जिसे उसने छुआ तक नहीं था।

इलेक्शन की तारीखों के ऐलान ने उस टाइम बम को टिक-टिक करना शुरू कर दिया था, जिसे आर्यन ने सालों पहले दफ्न कर दिया था। उसने अपने मोबाइल का लॉक खोला और एक पुराना, एनक्रिप्टेड फोल्डर देखने लगा। उस फोल्डर में कोई तस्वीर नहीं थी, सिर्फ एक तारीख लिखी थी। वह तारीख, जिसने उसकी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल दी थी।

तभी उसका फोन वाइब्रेट हुआ। एक अननोन नंबर से मैसेज आया था। आर्यन ने जैसे ही वो मैसेज पढ़ा, उसके हाथों से फोन छूटकर टेबल पर गिर गया। उसकी सांसें अटक गईं और माथे पर पसीने की ठंडी बूंदें उभर आईं।

मैसेज बहुत छोटा था, लेकिन उसमें आर्यन के राजनीतिक साम्राज्य को तबाह करने की पूरी ताकत थी। स्क्रीन पर सिर्फ एक लाइन फ्लैश हो रही थी:

**"72 घंटे में तुम्हारा सबसे बड़ा राज़ देश के सामने होगा।"**

विपक्ष की सबसे खतरनाक रणनीतिकार, माया चौधरी ने अपना खेल शुरू कर दिया था। बिसात सज चुकी थी, मोहरे अपनी जगहों पर आ चुके थे, और सत्ता के इस खूनी खेल का पहला पासा फेंका जा चुका था।

राजनीति में सबसे खतरनाक हथियार बंदूक नहीं... राज़ होते हैं। और आर्यन प्रताप का राज़ अब उसके कंट्रोल से बाहर हो रहा था।

## अध्याय 2:

पार्टी हेडक्वार्टर के बाहर का नज़ारा किसी महाकुंभ से कम नहीं था। हज़ारों की भीड़, ढोल-नगाड़ों की कानफोड़ू आवाज़ और हवा में उड़ते गुलाल ने पूरी सड़क को पार्टी के रंग में रंग दिया था। सिक्योरिटी गार्ड्स और पुलिस के पसीने छूट रहे थे क्योंकि हर कोई अपने चहेते नेता की एक झलक पाना चाहता था।

अंदर, वीआईपी लाउंज के अटैच्ड वॉशरूम में आर्यन प्रताप बेसिन के सामने खड़ा था। नल से पानी पूरी धार से बह रहा था। आर्यन ने ठंडे पानी के छपाके अपने चेहरे पर मारे। उसने तौलिये से अपना चेहरा पोंछा और आईने में खुद को देखा। आईने में दिखने वाला शख्स राज्य का अगला संभावित चीफ मिनिस्टर था, लेकिन उसकी आंखों के नीचे एक अजीब सा खौफ तैर रहा था।

बीती रात आए उस एक टेक्स्ट मैसेज ने उसकी रातों की नींद और दिन का सुकून दोनों छीन लिए थे।

*"72 घंटे में तुम्हारा सबसे बड़ा राज़ देश के सामने होगा।"*

घड़ी की सुइयां टिक-टिक कर रही थीं और 72 घंटे का काउंटडाउन शुरू हो चुका था। आर्यन ने गहरी सांस ली, अपने चेहरे पर एक सधी हुई, कॉन्फिडेंट मुस्कान का मुखौटा चढ़ाया और वॉशरूम से बाहर आ गया।

बाहर हॉल में पार्टी प्रेसिडेंट और गोविंद सिंह उसका इंतज़ार कर रहे थे।

"तैयार हो आर्यन?" गोविंद ने आर्यन के कंधे को थपथपाते हुए पूछा। उसकी आवाज़ में एक अजीब सा ठहराव था जो हमेशा आर्यन को हिम्मत देता था।

"बिल्कुल तैयार," आर्यन ने झूठ बोला।

अगले ही पल, बड़े से हॉल के दरवाज़े खुले और आर्यन, पार्टी प्रेसिडेंट और गोविंद के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस रूम में दाखिल हुआ। दर्जनों कैमरों के फ्लैश एक साथ चमके। माइक की आवाज़ गूंजी और पार्टी प्रेसिडेंट ने आर्यन का हाथ हवा में उठाते हुए वो घोषणा कर दी जिसका पूरे राज्य को इंतज़ार था।

"आने वाले विधानसभा चुनाव में, आर्यन प्रताप ही हमारी पार्टी की तरफ से चीफ मिनिस्टर पद के इकलौते और निर्विवाद चेहरे होंगे!"

हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। आर्यन ने माइक संभाला और अपना वही पुराना, सधा हुआ पॉलिटिकल विज़न भाषण देना शुरू किया। वह विकास, ईमानदारी और करप्शन-फ्री सरकार की बातें कर रहा था, लेकिन उसका दिमाग उस अननोन नंबर और उस मैसेज के इर्द-गिर्द घूम रहा था।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के इस हाई-वोल्टेज ड्रामे से दूर, शहर के सबसे महंगे और आलीशान 'द ओबेरॉय' होटल के टॉप फ्लोर पर स्थित प्रेसिडेंशियल सुइट में एक बिल्कुल अलग तरह का खेल खेला जा रहा था। यह खेल राजनीति का नहीं, बल्कि वासना, धोखे और ब्लैकमेल का था।

सुइट की बत्तियां मद्धिम थीं। बैकग्राउंड में एक बेहद धीमी और मादक जैज़ धुन बज रही थी। हवा में महंगी फ्रेंच वाइन और चमेली के इत्र की तेज़ खुशबू घुली हुई थी, जो किसी के भी होश उड़ाने के लिए काफी थी।

विपक्ष की सबसे तेज़ तर्रार और खतरनाक रणनीतिकार, माया चौधरी, बालकनी के पास खड़ी थी। उसने एक बेहद डीप-नेक, ब्लैक सिल्क स्लिप गाउन पहना हुआ था, जो उसके बदन से किसी साये की तरह लिपटा था। उसकी पीठ आधी खुली हुई थी और गाउन का कट उसकी जांघों तक जा रहा था। माया की उम्र 34 साल थी, लेकिन उसकी फिटनेस और उसका कातिलाना अंदाज़ अच्छे-अच्छे दिग्गजों को घुटनों पर ला देता था।

सोफे पर बैठा शख्स कोई मामूली आदमी नहीं था। वह समीर खन्ना था—होम मिनिस्ट्री का सीनियर जॉइंट सेक्रेटरी। एक ऐसा अफसर जिसके पास राज्य के हर बड़े राजनेता, बिजनेसमैन और क्रिमिनल की कच्ची फाइलों का एक्सेस था। समीर का चेहरा पसीने से चमक रहा था, उसकी सांसें भारी थीं और उसकी नज़रें माया के जिस्म से हट नहीं रही थीं।

"तुम जानती हो माया, इलेक्शन डिक्लेयर होने के बाद इस तरह तुमसे मिलना मेरे करियर के लिए कितना बड़ा रिस्क है?" समीर ने अपनी सिल्क की टाई को थोड़ा ढीला करते हुए कहा। उसकी आवाज़ में घबराहट और एक अजीब सी उत्तेजना का मिक्सचर था।

माया ने अपने हाथ में पकड़े क्रिस्टल ग्लास से रेड वाइन का एक छोटा सा घूंट लिया और अपनी कातिलाना मुस्कान के साथ धीमी चाल से चलते हुए समीर के करीब आई। वह सोफे के हत्थे पर बैठ गई और अपनी लंबी उंगलियों से समीर के बालों को हल्के से सहलाया।

"रिस्क ही तो पावर का असली नशा है, समीर," माया की आवाज़ किसी मखमली रेशम जैसी थी, जो सीधे समीर के कानों में रस घोल रही थी। उसने अपना आधा भरा हुआ वाइन का ग्लास समीर के होठों से लगा दिया।

समीर की नज़रें माया के चेहरे और उसके गाउन के खुले कॉलर के बीच झूल रही थीं। वह अपना सारा कंट्रोल खो रहा था। माया मुस्कुराई। वह जानती थी कि शिकार जाल में पूरी तरह उलझ चुका है। वह सोफे से खिसक कर सीधे समीर की गोद में आ बैठी। दोनों के जिस्मों के बीच अब कोई फासला नहीं था। माया की गर्म सांसें समीर की गर्दन को छू रही थीं, जिससे समीर के पूरे बदन में करंट सा दौड़ गया।

माया ने अपने होंठ समीर के कान के बिल्कुल पास ले जाकर फुसफुसाते हुए कहा, "आर्यन प्रताप की वो पुरानी इन्वेस्टिगेशन फाइल... जो पांच साल पहले बंद कर दी गई थी। मुझे पता है उसका डिजिटल एक्सेस सिर्फ तुम्हारे पास है।"

"म.. माया, वो टॉप सीक्रेट क्लासिफाइड डेटा है... सर्वर को एक्सेस करना..." समीर की आवाज़ कांप रही थी, लेकिन जब माया के होंठ उसकी गर्दन को चूमते हुए उसकी ठुड्डी तक आए, तो उसका सारा विरोध, सारी वफादारी पिघल गई।

माया के हाथ समीर की शर्ट के बटन खोल रहे थे। उसके नाज़ुक लेकिन सधे हुए स्पर्श ने समीर के दिमाग को पूरी तरह से सुन्न कर दिया था। "इस दुनिया में सीक्रेट जैसा कुछ नहीं होता, डार्लिंग। जो मेरा है, वो तुम्हारा है... और जो तुम्हारा है," माया ने समीर की आंखों में गहराई से देखते हुए अपना गाउन कंधे से थोड़ा नीचे खिसका दिया, "...वो मेरा होना चाहिए।"

समीर अब खुद पर काबू नहीं रख पा रहा था। उसने माया की कमर को अपनी बाहों में भर लिया और उसे पागलों की तरह चूमने लगा। कमरे का तापमान अचानक बढ़ गया था। कपड़ों की सरसराहट और भारी सांसों की आवाज़ के बीच, समीर पूरी तरह से माया के जिस्म के जादू में खो चुका था। उसे दुनिया, अपनी नौकरी, आर्यन प्रताप—किसी की भी परवाह नहीं थी।

लेकिन समीर को यह अंदाज़ा नहीं था कि माया का यह हनी-ट्रैप कितना खतरनाक था। जब समीर माया की गर्दन और कंधों को चूमने में मदहोश था, माया का एक हाथ उसकी पीठ को सहला रहा था, और दूसरा हाथ बहुत ही सफाई से समीर के कोट की अंदरूनी जेब से उसका मास्टर पास-कोड वाला फोन निकाल चुका था।

जब समीर बिस्तर की चादरों के बीच माया के साथ अंतरंग पलों में डूबा हुआ था, ठीक उसी पल, माया का अंगूठा फोन की स्क्रीन पर तेज़ी से चल रहा था। उसने समीर के फिंगरप्रिंट का इस्तेमाल करके फोन अनलॉक किया, होम मिनिस्ट्री के सिक्योर सर्वर में लॉगिन किया और आर्यन प्रताप के नाम से सेव्ड उस हिडन फोल्डर को खोज निकाला।

एक क्लिक... और आर्यन प्रताप की जिंदगी का वो काला पन्ना, वो सालों पुराना राज़, सीधा माया के प्राइवेट एंड-टू-एंड एन्क्रिप्टेड सर्वर पर ट्रांसफर हो गया।

फाइल ट्रांसफर होते ही माया ने एक गहरी, रहस्यमयी मुस्कान के साथ फोन वापस समीर के कोट में खिसका दिया और खुद को पूरी तरह से उस अंतरंग पल के हवाले कर दिया। उसे जो चाहिए था, वो मिल चुका था।

समीर सोच रहा था कि उसने माया को जीत लिया है, लेकिन असल में वह अपना सब कुछ हार चुका था। माया जानती थी कि बंदूक की गोली सिर्फ शरीर को मारती है, लेकिन आज उसे वो राज़ मिल गया था जो आर्यन प्रताप की आत्मा को तिल-तिल कर मारेगा।

उधर 'द नेशनल ट्रुथ' न्यूज़ चैनल के ऑफिस में, तनिशा अपनी डेस्क पर बैठी लगातार कीबोर्ड पर उंगलियां चला रही थी। पाटील सर का दिया हुआ असाइनमेंट उसके लिए एक जुनून बन चुका था। आर्यन प्रताप का इतिहास खंगालते हुए उसे कुछ अजीब सी बातें नोटिस होने लगी थीं।

आर्यन प्रताप की ज़िंदगी किसी खुली किताब की तरह थी—उसकी पढ़ाई, उसका एनजीओ, उसका राजनीति में आना। सब कुछ एकदम परफेक्ट था। लेकिन तनिशा की पारखी नज़रों ने एक ब्लैंक स्पॉट ढूंढ निकाला था। पांच साल पहले, लगातार छह महीने तक आर्यन प्रताप पब्लिक डोमेन से पूरी तरह गायब रहा था। उसकी कोई तस्वीर, कोई न्यूज़, कोई सोशल मीडिया पोस्ट उस दौरान की नहीं थी।

तनिशा ने अपना फोन उठाया और अपने एक पुराने खबरी, इंस्पेक्टर कदम को कॉल किया।

"कदम साहब, मुझे एक छोटी सी फेवर चाहिए," तनिशा ने सीधे पॉइंट पर आते हुए कहा।

"अरे तनिशा मैडम, आपके फेवर कभी छोटे नहीं होते। बताइए, अब किस नेता की शामत आई है?" दूसरी तरफ से कदम ने हंसते हुए कहा।

"आर्यन प्रताप। पांच साल पहले की पुलिस डायरी और अनसॉल्वड केसेस की लिस्ट चाहिए। खासकर वो केसेस जो अचानक ऊपर के प्रेशर में आकर बंद कर दिए गए हों।"

फोन के दूसरी तरफ कुछ सेकंड के लिए सन्नाटा छा गया। "मैडम, आप सीधे आग में हाथ डाल रही हैं। आर्यन अब सीएम फेस है। उसके पुराने गड़े मुर्दे उखाड़ना ठीक नहीं होगा।"

"मुझे मुर्दे उखाड़ने का ही शौक है कदम साहब। आप मुझे वो लिस्ट भेज रहे हैं या मैं कल पाटील सर के शो पर आपकी वो पुरानी 'वसूली' वाली ऑडियो टेप प्ले करवा दूं?" तनिशा ने ब्लैकमेल का कार्ड खेलते हुए कहा।

"भेजता हूं मैडम... आधे घंटे में डार्क वेब वाले लिंक से आपके पास फाइल पहुंच जाएगी," कदम ने हार मानते हुए फोन काट दिया।

तनिशा ने मुस्कुराते हुए अपनी कॉफी का सिप लिया। आर्यन प्रताप का किला चाहे कितना भी मजबूत हो, तनिशा उसमें सेंध लगाने के लिए तैयार थी।

रात के आठ बज चुके थे। आर्यन की बुलेटप्रूफ ब्लैक लैंड क्रूज़र हाईवे पर फर्राटे भर रही थी। आर्यन और गोविंद पीछे की सीट पर बैठे थे। केबिन के अंदर एक भारी सन्नाटा था।

आर्यन ने अचानक अपना फोन निकाला, स्क्रीन ऑन की और गोविंद की तरफ बढ़ा दिया।

"ये मैसेज मुझे कल रात मिला है," आर्यन ने बिना गोविंद की तरफ देखे कहा।

गोविंद ने फोन हाथ में लिया। स्क्रीन पर लिखा था: *"72 घंटे में तुम्हारा सबसे बड़ा राज़ देश के सामने होगा।"*

गोविंद के चेहरे का भाव बिल्कुल नहीं बदला। उसने आराम से फोन आर्यन को वापस किया और अपनी पानी की बोतल खोली। "ये माया चौधरी की साइकोलॉजिकल वॉरफेयर की घटिया चाल है, आर्यन। वो जानती है कि पॉलिटिकली वो तुम्हें डिफीट नहीं कर सकती, इसलिए वो तुम्हें मेंटली ब्रेक करना चाहती है। इसे इग्नोर करो।"

"इसे इग्नोर नहीं किया जा सकता गोविंद!" आर्यन पहली बार गोविंद पर चिल्लाया। उसकी आवाज़ में छिपा हुआ डर और फ्रस्ट्रेशन बाहर आ गया। "तुम और मैं दोनों जानते हैं कि अगर वो राज़... वो उस रात वाली बात बाहर आ गई, तो मेरा क्या होगा। मैं सीएम नहीं, बल्कि जेल की कोठरी में सड़ूँगा!"

गोविंद ने आर्यन के कंधे पर बहुत ज़ोर से हाथ रखा और उसकी आंखों में आंखें डाल कर बोला, "आर्यन, उस रात जो भी हुआ था, वो वहीं दफ्न हो चुका है। उसका कोई सबूत नहीं है, कोई गवाह नहीं है। जिसने भी ये मैसेज भेजा है, वो सिर्फ हवा में तीर चला रहा है। तुम्हें पैनिक करने की ज़रूरत नहीं है। तुम अपना फोकस इलेक्शन कैंपेन पर रखो, इस ब्लैकमेलर को हैंडल करना मेरी ज़िम्मेदारी है।"

आर्यन ने गहरी सांस ली और खिड़की से बाहर भागते हुए शहर को देखने लगा। गोविंद की बातों से उसे थोड़ी तसल्ली तो मिली, लेकिन उसके दिल की धड़कनें अभी भी शांत नहीं हुई थीं।

उसे नहीं पता था कि जिस राज़ को वो दफ्न समझ रहा था, वो राज़ अब माया चौधरी के सर्वर में आ चुका है, और दूसरी तरफ एक खूंखार पत्रकार, तनिशा, उस सच की कब्र तक पहुंचने के लिए अपनी कुदाल चला चुकी है।

72 घंटे में से 24 घंटे बीत चुके थे। उल्टी गिनती बहुत तेज़ी से चल रही थी।

## अध्याय 3:

रात के तीन बज चुके थे। शहर के ज़्यादातर हिस्से गहरी नींद में डूब चुके थे, लेकिन तनिशा के छोटे से स्टूडियो अपार्टमेंट की बत्तियां अभी भी जल रही थीं। कमरे में सिगरेट के धुएं और बासी ब्लैक कॉफी की गंध फैली हुई थी। डेस्क पर पिज़्ज़ा के खाली डिब्बे और कागज़ों का अंबार लगा था। तनिशा अपने लैपटॉप की स्क्रीन को घूर रही थी। उसकी आंखें लाल हो चुकी थीं, लेकिन नींद का कोई नामोनिशान नहीं था।

अचानक लैपटॉप पर एक बीप की आवाज़ हुई। एक अननोन ईमेल आईडी से एक मैसेज ड्रॉप हुआ था। ईमेल में कोई सब्जेक्ट नहीं था, सिर्फ एक डार्क वेब का लिंक और चौबीस कैरेक्टर का एक लंबा एन्क्रिप्टेड पासवर्ड था। इंस्पेक्टर कदम ने अपना वादा पूरा कर दिया था।

तनिशा की उंगलियां तेज़ी से कीबोर्ड पर चलने लगीं। उसने टोर ब्राउज़र ओपन किया, लिंक पेस्ट किया और पासवर्ड डाला। स्क्रीन पर एक ग्रीन प्रोग्रेस बार चलने लगा और अगले ही पल एक ज़िप फाइल डाउनलोड हो गई।

फाइल का नाम था— क्लोज़्ड केसेस: ज़ोन 4।

तनिशा ने फाइल को अनज़िप किया। उसके सामने सैकड़ों स्कैन्ड पुलिस डायरीज़ और एफआईआर की कॉपीज़ थीं। यह वो कचरा था जिसे सिस्टम ने कभी कोर्ट तक पहुंचने ही नहीं दिया था। तनिशा ने सर्च बार में आर्यन प्रताप टाइप किया। रिज़ल्ट ज़ीरो आया। उसने सोचा ही था कि आर्यन इतना बेवकूफ नहीं हो सकता कि किसी पुलिस फाइल में अपना नाम छोड़ दे।

"पॉलिटिक्स में क्राइम कभी खुद के नाम से नहीं किया जाता," तनिशा ने बड़बड़ाते हुए एक और सिगरेट सुलगाई। उसने सर्च का तरीका बदला। उसने वो तारीख डाली जब आर्यन प्रताप पांच साल पहले अचानक पब्लिक लाइफ से छह महीने के लिए गायब हो गया था— 14 अगस्त 2019।

इस बार स्क्रीन पर सिर्फ एक फाइल पॉप-अप हुई। केस नंबर 404।

तनिशा ने फाइल खोली। यह एक मिसिंग पर्सन की रिपोर्ट थी। गायब होने वाले शख्स का नाम था— विक्रम बजाज। शहर का सबसे बड़ा रियल एस्टेट और माइनिंग टाइकून। रिपोर्ट के मुताबिक, 14 अगस्त की रात भारी बारिश के बीच विक्रम बजाज की रेंज रोवर शहर के बाहरी इलाके में एक खाई के पास

लावारिस हालत में मिली थी। गाड़ी के अंदर खून के धब्बे थे, लेकिन विक्रम बजाज का कोई अता-पता नहीं था। पुलिस ने एक हफ्ते तक सर्च ऑपरेशन चलाया और फिर अचानक, बिना किसी नतीजे के, केस को अनसॉल्वड डिक्लेयर करके फाइल हमेशा के लिए बंद कर दी गई।

तनिशा के दिमाग की बत्तियां जल उठीं। 14 अगस्त 2019 को विक्रम बजाज गायब हुआ और ठीक अगले ही दिन, 15 अगस्त की सुबह, युवा नेता आर्यन प्रताप अचानक स्पिरिचुअल रिट्रीट का बहाना देकर छह महीने के लिए विपश्यना केंद्र चला गया।

"कोइंसिडेंस? बिल्कुल नहीं," तनिशा की आंखों में एक शिकारी जैसी चमक आ गई। एक माइनिंग टाइकून का गायब होना और राज्य के भावी मुख्यमंत्री का अंडरग्राउंड हो जाना। दोनों के बीच कोई न कोई खूनी कनेक्शन ज़रूर था। और तनिशा उस कनेक्शन को किसी भी कीमत पर ढूंढ निकालने वाली थी।

उसी रात, शहर के दूसरे छोर पर स्थित एक एक्सक्लूसिव और प्राइवेट सिगार लाउंज में, गोविंद सिंह एक लेदर के काउच पर बैठा था। लाउंज पूरी तरह से खाली था, सिवाय एक शख्स के जो गोविंद के सामने खड़ा था।

वो शख्स था गजराज। राज्य पुलिस का एक सस्पेंड हो चुका एनकाउंटर स्पेशलिस्ट, जो अब सत्ता के गलियारों के लिए क्लीनर का काम करता था। गजराज का चेहरा किसी पत्थर की तरह सख्त था और उसकी आंखों में एक खौफनाक सन्नाटा था।

"तुमने मुझे इतनी रात को क्यों बुलाया, गोविंद सर?" गजराज ने अपनी भारी आवाज़ में पूछा।

गोविंद ने अपना क्यूबन सिगार ऐशट्रे में झटकारते हुए कहा, "आर्यन को एक मैसेज आया है। किसी ने उसे 72 घंटे का अल्टीमेटम दिया है। कोई ऐसा है जो 14 अगस्त वाली रात के बारे में जानता है।"

गजराज के चेहरे की मांसपेशियां अचानक तन गईं। "यह इम्पॉसिबल है सर। उस रात के सारे सबूत मैंने खुद मिटाए थे। गाड़ी को मैंने खुद डंप किया था। किसी भी इंसान या कैमरे ने हमें नहीं देखा था।"

"इम्पॉसिबल जैसा कुछ नहीं होता गजराज," गोविंद की आवाज़ बेहद ठंडी और शांत थी, जो उसके गुस्से को और भी खतरनाक बना रही थी। "माया चौधरी के पास कुछ न कुछ हाथ लगा है। मुझे नहीं पता कैसे, लेकिन वो ब्लैकमेल कर रही है। मैं आर्यन को इस इलेक्शन में हारते हुए नहीं देख

सकता। वो मेरा सबसे बड़ा इन्वेस्टमेंट है। अगर आर्यन डूबा, तो हम सब डूबेंगे।"

"मुझे क्या करना है?" गजराज ने सीधा सवाल किया।

"मुझे उस मैसेज का सोर्स चाहिए। आईपी एड्रेस, फोन लोकेशन, जो भी तुम ट्रैक कर सको। और दूसरी बात..." गोविंद ने सिगार का एक लंबा कश लिया और धुएं को धीरे से छोड़ते हुए कहा, "विक्रम बजाज के पुराने स्टाफ या उस रात ड्यूटी पर मौजूद किसी भी पुलिस वाले पर नज़र रखो। अगर कोई भी मुंह खोलने की कोशिश करे, तो उसे हमेशा के लिए खामोश कर दो। कोई गलती नहीं होनी चाहिए, गजराज।"

गजराज ने सिर हिलाया और बिना कोई सवाल किए लाउंज के अंधेरे में गायब हो गया। गोविंद ने अपनी आंखें बंद कर लीं। वह आर्यन का दोस्त ज़रूर था, लेकिन राजनीति में दोस्ती सिर्फ एक सीढ़ी होती है। असली मंज़िल तो सत्ता होती है, और गोविंद उस सत्ता को हासिल करने के लिए पूरे शहर को आग लगा सकता था।

अगली सुबह, राजधानी के इस हाई-वोल्टेज और खूनी खेल से बेखबर, बंटी और गोलू हाईवे के किनारे एक छोटे से ढाबे पर कटिंग चाय पी रहे थे। आज दोनों का मूड काफी खराब था।

"कल का पूरा स्टिंग ऑपरेशन फुस्स हो गया गोलू," बंटी ने चाय का गिलास टेबल पर पटकते हुए कहा। "विधायक जी के समोसे वाले वीडियो पर सिर्फ पैंतीस व्यूज़ आए हैं। और उसमें से भी तीस बार तो तूने ही देखा है।"

गोलू अपना कैमरा साफ कर रहा था। "भैया, मैं क्या करूं? लोग आजकल सीरियस न्यूज़ देखते ही कहां हैं। सबको बस मसाला चाहिए। कोई बड़ा स्कैंडल हो, कोई मर्डर हो, तब जाके अपना चैनल उड़ेगा।"

"मर्डर क्या मैं खुद करके आऊं?" बंटी झुंझलाते हुए बोला।

तभी हाईवे पर धूल उड़ाती हुई तीन ब्लैक एसयूवी का एक काफिला तेज़ी से गुज़रा। गाड़ियों के शीशे जेड-ब्लैक थे और उन पर कोई नंबर प्लेट नहीं थी। यह देखकर बंटी का पत्रकारिता वाला कीड़ा अचानक जाग उठा।

"अबे गोलू, कैमरा चालू कर! देख, वीवीआईपी गाड़ियां बिना नंबर प्लेट के घूम रही हैं। ये पक्का इलेक्शन का काला पैसा ले जा रही हैं। अपन इनका पीछा करेंगे!"

इससे पहले कि गोलू कुछ समझ पाता, बंटी ने उसे घसीटते हुए अपनी खटारा मारुति 800 में ठूंस दिया। बंटी ने गाड़ी स्टार्ट की और उन ब्लैक एसयूवी के पीछे लगा दी। मारुति का इंजन रो रहा था, लेकिन बंटी पूरे जोश में था।

लगभग बीस किलोमीटर पीछा करने के बाद, वो गाड़ियां एक सुनसान और बंद पड़े इंडस्ट्रियल एरिया में मुड़ गईं। वहां एक पुराना, जंग खाया हुआ गोदाम था। बंटी ने अपनी गाड़ी दूर ही रोक दी और गोलू को लेकर झाड़ियों के पीछे छुप गया।

"ज़ूम कर गोलू, ज़ूम कर। देख अंदर क्या चल रहा है," बंटी ने फुसफुसाते हुए कहा।

गोलू ने अपने हैंडीकैम का लेंस फुल ज़ूम पर सेट किया। स्क्रीन पर जो दिखा, उसने दोनों की सांसें अटका दीं। एसयूवी से कुछ हट्टे-कट्टे बाउंसर उतरे। उनके हाथ में काले रंग के बड़े-बड़े गार्बेज बैग्स थे। उन्होंने बैग्स को गोदाम के पीछे फेंका, उन पर पेट्रोल डाला और आग लगा दी। कुछ ही सेकंड में गाड़ियां वहां से वापस लौट गईं।

"अबे, ये तो सबूत मिटा रहे हैं! पक्का कोई मर्डर मिस्ट्री है!" बंटी की आंखें चमक उठीं। जैसे ही गाड़ियां आंखों से ओझल हुईं, बंटी भागता हुआ उस आग के ढेर के पास पहुंचा।

आग अभी पूरी तरह भड़की नहीं थी। बंटी ने पास पड़ी मिट्टी डालकर आग बुझाने की कोशिश की। काफी हद तक कागज़ जल चुके थे, लेकिन एक बैग के अंदर से बंटी को कुछ अधजले डॉक्यूमेंट्स और एक प्लास्टिक का आईडी कार्ड मिल गया।

बंटी ने खांसते हुए उस आईडी कार्ड की राख साफ की। उस पर एक लोगो बना था— बजाज माइनिंग कॉर्पोरेशन। और नीचे नाम लिखा था— विक्रम बजाज।

"गोलू..." बंटी की आवाज़ कांप रही थी। "ये तो वो बड़ा वाला उद्योगपति है जो पांच साल पहले गायब हो गया था। टीवी पर न्यूज़ आती थी इसकी।"

गोलू का चेहरा पीला पड़ गया। "भैया, पंगा बहुत बड़ा है। अपन मारे जाएंगे। चलो यहां से।"

लेकिन बंटी के दिमाग में तो ब्रेकिंग न्यूज़ का बैकग्राउंड म्यूज़िक बजने लगा था। उसे नहीं पता था कि उसने अनजाने में उस टाइम बम की तार काट दी थी, जो सीधा आर्यन प्रताप और माया चौधरी के पैरों के नीचे रखा था। बंटी

ने वो अधजले कागज़ और आईडी कार्ड अपनी जेब में ठूंसे और वहां से भाग निकला।

उसी दोपहर, द इंपीरियल होटल के अपने सिक्योर सुइट में बैठी माया चौधरी के चेहरे पर एक शैतानी मुस्कान थी। उसके सामने एक बड़ा मॉनिटर था, जिस पर आर्यन प्रताप का वो क्लासिफाइड फोल्डर खुला हुआ था, जो उसने समीर खन्ना के फोन से चुराया था।

फाइल में मौजूद सबूत और तस्वीरें इतनी भयानक थीं कि किसी भी आम इंसान की रूह कांप जाए। 14 अगस्त की रात के एक्सीडेंट की असल तस्वीरें। विक्रम बजाज की गाड़ी के टायर मार्क्स, आर्यन प्रताप की प्राइवेट गाड़ी के नंबर, और सबसे बड़ी चीज़— एक फॉरेंसिक रिपोर्ट जो पुलिस सिस्टम में कभी अपलोड ही नहीं की गई थी। उस रिपोर्ट में साफ लिखा था कि विक्रम बजाज की मौत एक्सीडेंट में नहीं हुई थी, बल्कि उसे मारकर उसकी गाड़ी को खाई में धकेला गया था। और उस रात आर्यन प्रताप की लोकेशन ठीक उसी जगह पर थी।

"ओह आर्यन," माया ने स्क्रीन को छूते हुए कहा। "तुमने तो बहुत सफाई से अपना पाप छुपा लिया था। लेकिन अब ये पाप तुम्हारे गले का फंदा बनेगा।"

माया ने अपना एनक्रिप्टेड फोन उठाया और एक प्राइवेट ट्विटर हैंडल लॉगिन किया, जिसे किसी भी सर्वर से ट्रेस नहीं किया जा सकता था। उसने एक नया ट्वीट ड्राफ्ट किया:

*राज्य के भावी मुख्यमंत्री का चेहरा जितना सफेद है, उसके हाथ उतने ही लाल हैं। 14 अगस्त 2019 की रात का सच बाहर आने वाला है। मिस्टर क्लीन का पर्दाफाश होगा। 48 घंटे बाकी हैं। टिक-टॉक।*

उसने ट्वीट में आर्यन प्रताप के ऑफिशियल हैंडल और तनिशा के न्यूज़ चैनल द नेशनल ट्रुथ को टैग कर दिया। माया जानती थी कि तनिशा जैसी खूंखार पत्रकार इस ट्वीट को इग्नोर नहीं कर पाएगी। वह तनिशा को अपने मोहरे की तरह इस्तेमाल करना चाहती थी, ताकि जब आर्यन प्रताप का पर्दाफाश हो, तो इल्ज़ाम मीडिया पर आए, माया पर नहीं।

ट्वीट सेंड करते ही माया ने अपनी वाइन का ग्लास उठाया और जीत के जश्न में उसे चूम लिया।

सत्ता की इस बिसात पर अब प्यादे, वज़ीर और बादशाह सब अपनी-अपनी चाल चल चुके थे। 72 घंटे में से 24 घंटे गुज़र चुके थे और अब आर्यन के पास

बचने का कोई रास्ता नहीं था। राज़ कब्र से बाहर आ चुके थे और अब उन्हें खून चाहिए था।

## अध्याय 4:

आज की डिजिटल दुनिया में आग जंगलों में नहीं, बल्कि सोशल मीडिया के सर्वर पर लगती है। और माया चौधरी ने जो चिंगारी बीती रात ट्विटर पर छोड़ी थी, सुबह होते-होते वह एक भयंकर दावानल का रूप ले चुकी थी।

*राज्य के भावी मुख्यमंत्री का चेहरा जितना सफेद है, उसके हाथ उतने ही लाल हैं। 14 अगस्त 2019 की रात का सच बाहर आने वाला है। मिस्टर क्लीन का पर्दाफाश होगा। 48 घंटे बाकी हैं। टिक-टॉक।*

यह महज़ एक ट्वीट नहीं था। यह एक पॉलिटिकल न्यूक्लियर बम था। सुबह के आठ बजते-बजते यह हैशटैग #AryanPratapExposed देश भर में नंबर वन ट्रेंड कर रहा था। हज़ारों री-ट्वीट, वॉट्सऐप यूनिवर्सिटी के फॉरवर्ड्स और मीम पेजेज़ ने इंटरनेट पर कब्ज़ा कर लिया था। कोई नहीं जानता था कि यह हैंडल किसका है, लेकिन 14 अगस्त 2019 की तारीख ने हर न्यूज़ चैनल के न्यूज़रूम में तहलका मचा दिया था।

द नेशनल ट्रुथ के ऑफिस में तनिशा अपनी डेस्क पर स्तब्ध बैठी थी। उसकी नज़रें स्क्रीन पर उस ट्वीट पर गड़ी थीं जिसमें उसे और उसके चैनल को टैग किया गया था। रात भर जागने की थकान अब एक खतरनाक एड्रेनालाईन रश में बदल चुकी थी। उसने कुछ घंटे पहले ही 14 अगस्त 2019 और विक्रम बजाज के गायब होने का कनेक्शन खोजा था, और अब कोई अनजान ब्लैकमेलर उसी तारीख को सरेआम उछाल रहा था। यह कोई इत्तेफाक नहीं हो सकता था।

"तनिशा!" पाटील सर की गरजती हुई आवाज़ ने उसे ख्यालों से बाहर निकाला। वो अपने केबिन के दरवाज़े पर खड़े थे और उनके हाथ में उनका टैबलेट था।

तनिशा लगभग भागते हुए पाटील सर के केबिन में पहुंची।

"यह क्या बकवास चल रही है?" पाटील सर ने टैबलेट डेस्क पर पटकते हुए कहा। "कोई रैंडम ट्विटर हैंडल आर्यन प्रताप पर मर्डर का इनडायरेक्ट इल्ज़ाम लगा रहा है और उसमें तुम्हें टैग कर रहा है। क्या तुम्हारे पास कोई लीड है? या यह विपक्ष की कोई डर्टी पीआर स्ट्रेटेजी है?"

"सर, यह महज़ एक पीआर स्टंट नहीं है," तनिशा ने कॉन्फिडेंस के साथ कहा। उसने अपनी डायरी खोली और पाटील सर के सामने रख दी। "कल रात मैंने इंस्पेक्टर विक्रम की मदद से पुलिस का पुराना डेटाबेस खंगाला। 14 अगस्त 2019। यह वही तारीख है जब शहर का सबसे बड़ा माइनिंग माफिया और बिल्डर, विक्रम बजाज रहस्यमयी तरीके से गायब हुआ था। उसकी गाड़ी खाई में मिली थी, खून से सनी हुई। और सबसे बड़ी बात, ठीक अगले दिन आर्यन प्रताप छह महीने के लिए विपश्यना के नाम पर अंडरग्राउंड हो गया था।"

पाटील सर की आंखें सिकुड़ गईं। उनका तजुर्बेकार न्यूज़ सेंस कह रहा था कि यह दशक की सबसे बड़ी स्टोरी बनने वाली है।

"क्या तुम्हारे पास आर्यन के उस रात वहां होने का कोई सॉलिड प्रूफ है?" पाटील सर ने पूछा।

"अभी नहीं सर। केस फाइल में बहुत सारे पन्ने गायब हैं। लेकिन जिसने भी यह ट्वीट किया है, उसके पास पक्का कोई सबूत है। वो आर्यन को ब्लैकमेल कर रहा है और हमें एक मोहरे की तरह इस्तेमाल कर रहा है ताकि न्यूज़ हम ब्रेक करें," तनिशा ने गहरी सांस लेते हुए कहा।

"ठीक है। तुम इसी एंगल पर काम करो। मैं स्क्रीन पर एक ब्रेकिंग न्यूज़ टिकर चलवा रहा हूं— 'क्या है आर्यन प्रताप का 14 अगस्त का राज़?' हम सीधे तौर पर मर्डर नहीं कहेंगे, हम सिर्फ सवाल पूछेंगे। हमें अपनी टीआरपी भी बढ़ानी है और डिफेमेशन सूट से भी बचना है। गो, गेट टू वर्क!" पाटील सर ने आदेश दिया।

तनिशा केबिन से बाहर निकली। उसे उस अनजान ट्विटर हैंडल के पीछे बैठे मास्टरमाइंड को खोजना था। खेल अब सीधा हो चुका था।

दूसरी तरफ, आर्यन प्रताप के सरकारी बंगले के बाहर का नज़ारा किसी वॉर ज़ोन जैसा हो गया था। मेन गेट के बाहर सैकड़ों मीडिया वाले माइक और कैमरे लिए खड़े थे। पुलिस ने बैरिकेड्स लगा दिए थे।

बंगले के अंदर, आर्यन के स्टडी रूम का दरवाज़ा अंदर से लॉक था। आर्यन का चेहरा गुस्से और खौफ से लाल हो चुका था। उसने अपने हाथ में पकड़ा हुआ क्रिस्टल का पानी का ग्लास ज़ोर से दीवार पर दे मारा। ग्लास के हज़ारों टुकड़े कालीन पर बिखर गए।

"तुमने कहा था वो सिर्फ एक डरावा है! तुमने कहा था वो ब्लैकमेलर हवा में तीर चला रहा है!" आर्यन गोविंद पर बुरी तरह चिल्ला रहा था। उसकी कॉलर

का बटन खुला था और बाल बिखरे हुए थे। "उसने 14 अगस्त की तारीख पब्लिक कर दी है गोविंद! पूरी मीडिया मेरे दरवाज़े पर कुत्ते की तरह भौंक रही है!"

गोविंद सोफे पर बिल्कुल शांत बैठा था। उसने अपनी जेब से रुमाल निकाला और अपने माथे का हल्का पसीना पोंछा। "कंट्रोल योर नर्व्स, आर्यन। तुम एक होने वाले चीफ मिनिस्टर हो, किसी गली के गुंडे नहीं जो ऐसे पैनिक कर रहे हो। एक फेक ट्विटर अकाउंट किसी की कुर्सी नहीं छीन सकता।"

"वो फेक अकाउंट नहीं है! उसके पास सबूत हैं। अगर उस रात की फॉरेंसिक रिपोर्ट या सीसीटीवी फुटेज बाहर आ गई, तो मेरा क्या होगा?" आर्यन ने अपने बाल नोंचते हुए कहा।

तभी दरवाज़े पर तीन बार नॉक हुआ। गोविंद ने उठकर दरवाज़ा खोला। बाहर गजराज खड़ा था। उसका चेहरा हमेशा की तरह भावहीन था, लेकिन उसकी आंखों में एक अजीब सी बेचैनी थी। गोविंद ने उसे अंदर बुला लिया और दरवाज़ा फिर से लॉक कर दिया।

"कोई लीड मिली गजराज?" गोविंद ने अपनी ठंडी आवाज़ में पूछा।

"सर, आईपी एड्रेस बाउंस हो रहा है। वो किसी प्राइवेट एंड-टू-एंड एन्क्रिप्टेड नेटवर्क का इस्तेमाल कर रहे हैं। लोकेशन कभी रशिया दिखा रहा है, कभी स्वीडन। उसे ट्रेस करना इम्पॉसिबल है," गजराज ने रिपोर्ट दी।

"और विक्रम बजाज के पुराने केस से जुड़े लोग?" गोविंद की आवाज़ अब और सख्त हो गई थी।

गजराज ने थोड़ा हिचकिचाते हुए कहा, "मैंने कल रात ही पुरानी फाइल्स और विक्रम बजाज से जुड़े सबूतों को ठिकाने लगाने के लिए लड़कों को भेजा था। शहर के बाहर एक पुराने गोदाम में सब कुछ जला दिया गया। लेकिन..."

"लेकिन क्या गजराज?" आर्यन ने बीच में ही टोकते हुए पूछा, उसकी सांसें तेज़ हो गई थीं।

"लड़कों ने बताया कि जब वो आग लगाकर निकले, तो किसी ने वहां घुसने की कोशिश की थी। टायर के ताज़ा निशान मिले हैं। एक पुरानी गाड़ी के। हो सकता है कोई वहां हमारी जासूसी कर रहा हो, या किसी के हाथ कोई अधजला सबूत लग गया हो।"

गोविंद का हाथ अचानक कस गया। उसकी सधी हुई मुस्कान गायब हो गई थी। "तुमसे एक छोटा सा काम कहा था गजराज। सबूत मिटाने का। और तुमने वहां भी एक सुराग छोड़ दिया? मुझे चौबीस घंटे के अंदर वो आदमी चाहिए जो उस गोदाम में घुसा था। अगर वो मीडिया या पुलिस तक पहुंच गया, तो मैं तुम्हें उसी गोदाम में ज़िंदा जला दूंगा। अंडरस्टुड?"

गजराज ने बिना कुछ कहे सिर हिलाया और बाहर निकल गया।

गोविंद मुड़ा और आर्यन की तरफ देखा। "तुम्हें आज शाम को एक ओपन प्रेस कॉन्फ्रेंस करनी होगी। फुल कॉन्फिडेंस के साथ। तुम मीडिया के सामने इस ट्वीट को विपक्ष की एक घटिया साज़िश बताओगे। तुम विक्टिम कार्ड खेलोगे। जनता इमोशंस पर वोट देती है, फैक्ट्स पर नहीं। हम इसे अपने फेवर में पलट देंगे।"

आर्यन ने एक गहरी सांस ली। उसे पता था कि गोविंद सही कह रहा है, लेकिन दिल के किसी कोने में वो जानता था कि मौत अब उसके दरवाज़े पर दस्तक दे रही है।

हाईवे के किनारे एक सस्ते लॉज के सीलन भरे कमरे में, बंटी और गोलू फर्श पर बैठे थे। उनके सामने बिस्तर पर वो अधजले कागज़ और विक्रम बजाज का आईडी कार्ड रखा था, जो वो कल गोदाम से चुराकर लाए थे।

कमरे में सिर्फ एक ज़ीरो वॉट का लाल बल्ब जल रहा था, जो माहौल को और भी सस्पेंसफुल बना रहा था।

"अबे गोलू, तूने न्यूज़ देखी? पूरा देश उसी विक्रम बजाज को खोज रहा है जिसका कार्ड अपने पास है!" बंटी ने अपनी जांघ पर ज़ोर से हाथ मारते हुए कहा। उसकी आंखों में लालच और डर दोनों साफ झलक रहे थे।

गोलू का गला सूख रहा था। उसने पास रखी पानी की बोतल से दो घूंट पानी पिया। "भैया, मैं कह रहा हूं ये कागज़ पुलिस को दे देते हैं। वो जो काले कपड़ों वाले बाउंसर थे, अगर उन्हें पता चल गया कि हम वहां थे, तो हमारा कीमा बना देंगे।"

"तू हमेशा डरपोक ही रहेगा गोलू," बंटी ने एक अधजला कागज़ उठाते हुए कहा। "पुलिस को देंगे तो पुलिस वाले क्रेडिट ले लेंगे और हमें दो डंडे मारकर भगा देंगे। ये कागज़ हमारी लॉटरी है। देख इसे ध्यान से।"

बंटी ने वो कागज़ रोशनी के सामने किया। यह एक बैंक स्टेटमेंट का पन्ना था। ज़्यादातर हिस्सा जल चुका था, लेकिन नीचे का एक हिस्सा बचा था। उस पर एक ट्रांजैक्शन की डिटेल थी।

*ट्रांसफर: 50 करोड़ रुपये। अकाउंट नेम: ग्लोबलिंक ओवरसीज़ (शेल कंपनी) ऑथराइज़्ड सिग्नेटरी: जी. एस.*

"जी. एस.? ये कौन है बे?" बंटी ने सिर खुजाते हुए पूछा।

"भैया, मुझे क्या पता? लेकिन पचास करोड़... बाप रे! मैंने तो अपनी ज़िंदगी में पचास हज़ार एक साथ नहीं देखे," गोलू की आंखें फटी रह गईं।

"ये कोई बहुत बड़ा घपला है गोलू। चुनाव, आर्यन प्रताप, विक्रम बजाज का मर्डर और ये पचास करोड़। सब आपस में जुड़े हैं। ये खबर 'तीखी मिर्ची न्यूज़' के बस की नहीं है। हमें किसी बड़े चैनल से हाथ मिलाना होगा," बंटी ने अपना सस्ता स्मार्टफोन निकाला।

"किसको फोन लगा रहे हो?" गोलू ने पूछा।

"उस खतरनाक मैडम को। तनिशा को। मैंने द नेशनल ट्रुथ की वेबसाइट से उसका नंबर निकाल लिया है। अगर हम उसे ये सबूत देंगे, तो बदले में हमें भी प्राइम टाइम पर आने का मौका मिलेगा। बंटी और गोलू अब नेशनल स्टार बनेंगे!" बंटी ने एक दांत-निपोड़ू मुस्कान के साथ कहा और नंबर डायल कर दिया।

उन्हें इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उन्होंने मौत के सौदागरों की लाइन पर मिस-कॉल मार दी थी।

द इंपीरियल होटल के प्रेसिडेंशियल सुइट में, माया चौधरी एक वाइट बाथरोब पहने, सोफे पर आराम से लेटी थी। उसके एक हाथ में शैम्पेन का ग्लास था और सामने टीवी पर हर न्यूज़ चैनल आर्यन प्रताप और उस वायरल ट्वीट पर चर्चा कर रहा था।

माया की आंखों में एक अजीब सी संतुष्टि थी। उसका बुना हुआ जाल एकदम सटीक काम कर रहा था। आर्यन की इमेज अब हर घंटे तार-तार हो रही थी।

तभी सोफे पर रखा उसका पर्सनल फोन बजा। स्क्रीन पर 'समीर खन्ना' का नाम फ्लैश हो रहा था।

माया ने एक ठंडी मुस्कान के साथ फोन उठाया। "हेलो, डार्लिंग।"

"माया! तुमने ये क्या किया?" फोन के दूसरी तरफ समीर की आवाज़ बुरी तरह कांप रही थी। वो लगभग रोने की हालत में था। "मैंने आज सुबह अपना सिक्योर सर्वर चेक किया। विक्रम बजाज की फॉरेंसिक फाइल मेरे फोन से तुम्हारे प्राइवेट आईपी पर ट्रांसफर हुई है। कल रात तुमने मेरा फोन यूज़ किया था माया! अगर आईबी या मेरे सीनियर्स को पता चला कि मेरे एक्सेस से फाइल लीक हुई है, तो मुझे सस्पेंड कर देंगे। मुझे जेल हो जाएगी!"

माया ने शैम्पेन का एक घूंट लिया और आराम से कहा, "तुम बहुत जल्दी पैनिक कर जाते हो समीर। तुमने मेरे साथ जो रात गुज़ारी, उसकी भी तो कोई कीमत होनी चाहिए थी ना? वो फाइल मेरी फीस थी।"

"तुम एक चुड़ैल हो माया! तुमने मेरा इस्तेमाल किया!" समीर फोन पर चिल्लाया।

माया का लहज़ा अचानक इतना ठंडा और खौफनाक हो गया कि समीर के पसीने छूट गए। "अपनी ज़बान संभाल कर बात करो समीर खन्ना। तुम एक बहुत छोटे मोहरे हो, तुम्हें मैंने तुम्हारी हैसियत से बड़ी रात दे दी, उसी में खुश रहो। अगर तुमने किसी से भी इस फाइल ट्रांसफर का ज़िक्र किया, तो मैं वो वीडियो रिलीज़ कर दूंगी जो कल रात मैंने इस सुइट के हिडन कैमरा से रिकॉर्ड किया है। होम मिनिस्ट्री का जॉइंट सेक्रेटरी नशे की हालत में विपक्ष की एक महिला नेता के साथ... सोचो तुम्हारी बीवी और तुम्हारे बच्चों पर क्या बीतेगी?"

फोन पर एकदम सन्नाटा छा गया। समीर की सांसें भी जैसे रुक गई थीं।

"गुड बॉय। अब चुपचाप अपना काम करो और तमाशा देखते रहो," माया ने फोन काट दिया और टीवी का वॉल्यूम बढ़ा दिया।

टीवी पर द नेशनल ट्रुथ चैनल लगा था, जहां तनिशा लाइव आकर कह रही थी— *"आर्यन प्रताप की साफ-सुथरी छवि के पीछे कौन सा खूनी सच छुपा है? 14 अगस्त को ऐसा क्या हुआ था जो राज्य का सबसे बड़ा नेता आज तक छुपा रहा है?"*

माया ने टीवी स्क्रीन की तरफ अपना शैम्पेन का ग्लास उठाते हुए कहा, "चियर्स तनिशा। तुम बिल्कुल वही कर रही हो, जो मैं चाहती हूं।"

ठीक उसी वक्त, न्यूज़ रूम में बैठी तनिशा के फोन पर एक अननोन नंबर से कॉल फ्लैश होने लगा। ट्रू-कॉलर पर नाम दिखा रहा था— 'बंटी रिपोर्टर - तीखी मिर्ची न्यूज़'।

तनिशा ने झिझकते हुए कॉल उठाया। "हेलो?"

"मैडम जी नमस्ते! मैं बंटी बोल रहा हूं," दूसरी तरफ से एक बेहद देहाती और एक्साइटेड आवाज़ आई। "आप टीवी पे विक्रम बजाज का सुबूत मांग रही हैं ना? वो सुबूत मेरे पास है। और सिर्फ सुबूत नहीं, पचास करोड़ का वो बैंक स्टेटमेंट भी है, जो आर्यन प्रताप की लंका लगा देगा।"

तनिशा झटके से अपनी कुर्सी से खड़ी हो गई। उसकी रीढ़ की हड्डी में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई।

48 घंटे के अल्टीमेटम का टिक-टॉक अब एक असली टाइम बम में बदल चुका था, और फटने का समय बहुत नज़दीक था।

## अध्याय 5:

तनिशा के कानों में बंटी के शब्द किसी हथौड़े की तरह बज रहे थे। *पचास करोड़। आर्यन प्रताप। विक्रम बजाज। बैंक स्टेटमेंट।*

न्यूज़ रूम के शोर-शराबे के बीच तनिशा को अचानक एक अजीब सा सन्नाटा महसूस होने लगा। उसने अपनी डेस्क पर रखा आधा ठंडा हो चुका कॉफी का मग एक तरफ खिसकाया और फोन को कसकर पकड़ा।

"तुम जो भी हो, अगर तुमने मेरे साथ कोई मज़ाक करने की कोशिश की है, तो मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूंगी," तनिशा ने अपनी खूंखार रिपोर्टर वाली टोन में कहा।

"अरे मैडम जी, पुलिस से तो हम खुद भाग रहे हैं!" दूसरी तरफ से बंटी की घबराई हुई लेकिन एक्साइटेड आवाज़ आई। "हमारे पास वो कागज़ हैं जो उन काले कोट वाले बाउंसर्स ने कल रात एक गोदाम में जलाने की कोशिश की थी। अगर आपको यकीन नहीं है तो मैं आपको विक्रम बजाज के अधजले आईडी कार्ड की फोटो वॉट्सऐप कर रहा हूं। आप खुद देख लीजिए। लेकिन एक शर्त है मैडम... ये खबर जब टीवी पर चलेगी, तो स्क्रीन पर बड़ा-बड़ा लिखा होना चाहिए— बंटी रिपोर्टर का एक्सक्लूसिव खुलासा!"

"पहले मुझे सुबूत देखने दो। एक घंटे में शहर के आउटर रिंग रोड वाले हाईवे ढाबे पर मिलो। अकेले आना," तनिशा ने फोन काट दिया।

अगले ही सेकंड उसके वॉट्सऐप पर एक तस्वीर फ्लैश हुई। तस्वीर धुंधली थी, लेकिन विक्रम बजाज का चेहरा और बजाज माइनिंग कॉर्पोरेशन का लोगो साफ दिख रहा था। कार्ड के किनारे जले हुए थे। तनिशा के चेहरे पर एक खौफनाक मुस्कान आ गई। 48 घंटे का जो अल्टीमेटम उस अनजान ट्विटर हैंडल ने दिया था, तनिशा अब उससे एक कदम आगे निकलने वाली थी। उसने अपना लेदर जैकेट उठाया, अपनी कार की चाबी ली और बिना किसी को बताए ऑफिस से निकल गई।

दोपहर के तीन बज चुके थे। पार्टी हेडक्वार्टर का मेन हॉल खचाखच भरा था। हर न्यूज़ चैनल का रिपोर्टर अपना माइक आर्यन प्रताप के पोडियम की तरफ ताने खड़ा था। कैमरे के फ्लैश लगातार चमक रहे थे।

आर्यन प्रताप एक क्रिस्प सफेद कुर्ते में पोडियम के पीछे खड़ा था। उसके चेहरे पर एक बेहद सधी हुई, शांत और कॉन्फिडेंट मुस्कान थी। कोई भी आम इंसान उसका चेहरा देखकर यह अंदाज़ा नहीं लगा सकता था कि अंदर से यह आदमी कितना डरा हुआ है। उसके ठीक पीछे, एक कुर्सी पर गोविंद सिंह बैठा था, जिसकी नज़रें बाज की तरह पूरे हॉल का मुआयना कर रही थीं।

"मित्रों," आर्यन ने माइक के करीब आते हुए अपनी भारी और असरदार आवाज़ में बोलना शुरु किया। हॉल में अचानक शांति छा गई। "आज सुबह से सोशल मीडिया पर एक अनजान, फेक अकाउंट से मेरे खिलाफ जो कीचड़ उछाला जा रहा है, मैं उसके बारे में बात करने आया हूं। विपक्ष जानता है कि वो ये चुनाव हार रहे हैं। उनके पास ना कोई विज़न है, ना कोई नेता। इसलिए अब वो इस तरह के घटिया पीआर स्टंट और फेक न्यूज़ का सहारा ले रहे हैं।"

आर्यन ने एक पल का पॉज़ लिया, सीधे कैमरों के लेंस में देखा और मुस्कुराया। "मैं माया चौधरी जी और उनके आईटी सेल को एक बात साफ कर देना चाहता हूं। राज्य की जनता बेवकूफ नहीं है। आप मेरे खिलाफ चाहे जितनी साज़िशें रच लें, जीत सच्चाई की ही होगी। 14 अगस्त को लेकर जो मनगढ़ंत कहानियां फैलाई जा रही हैं, वो सब सिर्फ मुझे बदनाम करने की एक घटिया कोशिश है।"

पूरे हॉल में आर्यन के समर्थकों ने तालियां बजानी शुरु कर दीं। मीडिया वाले भी आर्यन के इस विक्टिम कार्ड से थोड़ा कनविंस लग रहे थे। गोविंद के चेहरे पर एक संतुष्ट मुस्कान आ गई। उनकी स्ट्रेटेजी काम कर रही थी।

"क्या किसी का कोई सवाल है?" आर्यन ने पूछा।

तभी हॉल के बिल्कुल पीछे से एक लड़की उठी। ओवरसाइज़्ड डेनिम शर्ट, बिखरे हुए बाल और आंखों में एक खूंखार चमक। तनिशा। वह सीधे हाईवे ढाबे से सीधा प्रेस कॉन्फ्रेंस में पहुंची थी।

"मिस्टर प्रताप, मेरा एक सवाल है," तनिशा ने अपना माइक ऑन करते हुए तेज़ आवाज़ में कहा।

आर्यन की नज़रें तनिशा पर पड़ीं। उसने द नेशनल ट्रुथ चैनल के इस रिपोर्टर के बारे में बहुत सुना था। उसे पता था कि यह लड़की किसी को बख्शती नहीं है। आर्यन ने अपनी मुस्कान बरकरार रखते हुए कहा, "जी तनिशा जी, पूछिए।"

तनिशा पोडियम की तरफ धीरे-धीरे चलने लगी। हॉल के सारे कैमरे अब तनिशा पर फोकस हो गए थे। "मिस्टर प्रताप, आपने कहा कि ये सब विपक्ष

की साज़िश है। बहुत अच्छी बात है। लेकिन आपने मेन सवाल का जवाब तो दिया ही नहीं। आप 14 अगस्त 2019 की रात कहां थे? और क्या आप विक्रम बजाज को जानते हैं?"

यह सवाल किसी बुलेट की तरह सीधा आर्यन के सीने में आकर लगा। आर्यन का गला अचानक सूख गया। उसकी मुस्कान पलक झपकते ही गायब हो गई। उसने तनिशा की आंखों में देखा, और उस एक पल के आई-कॉन्टैक्ट में तनिशा समझ गई कि आर्यन प्रताप झूठ बोल रहा है। उसके अंदर एक भयानक डर छिपा है।

आर्यन के कुछ बोलने से पहले ही गोविंद अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और पोडियम के पास आ गया।

"तनिशा जी, यह एक पॉलिटिकल प्रेस कॉन्फ्रेंस है," गोविंद ने अपनी ठंडी और सख्त आवाज़ में कहा। "आर्यन जी ने पहले ही साफ कर दिया है कि वो फेक ट्विटर हैंडल्स की बकवास पर सफाई नहीं देंगे। अगर आपके पास कोई पुलिस कंप्लेंट या सुबूत है, तो आप कोर्ट जा सकती हैं। वरना ऐसे बेबुनियाद सवाल पूछकर आप सिर्फ विपक्ष के एजेंडे को हवा दे रही हैं। नो मोर क्वेश्चंस। थैंक यू।"

गोविंद ने आर्यन का हाथ पकड़ा और उसे वहां से लगभग खींचते हुए बैकस्टेज ले गया। हॉल में हंगामा मच गया। सारे रिपोर्टर चिल्ला-चिल्ला कर सवाल पूछने लगे, लेकिन आर्यन जा चुका था।

तनिशा वहीं खड़ी रही। उसके होठों पर एक व्यंग्यात्मक मुस्कान थी। आर्यन का वो खौफ से भरा चेहरा उसके दिमाग में छप चुका था। अब उसे यकीन हो गया था कि बंटी ने उसे जो कागज़ दिए हैं, वो कोई मज़ाक नहीं हैं।

द इंपीरियल होटल के अपने सुइट में बैठी माया चौधरी टीवी पर यह पूरा नज़ारा लाइव देख रही थी। जब तनिशा ने वो सवाल पूछा और आर्यन का चेहरा पीला पड़ा, तो माया ज़ोर से हंस पड़ी।

"ब्रिलियंट तनिशा, एब्सोल्यूटली ब्रिलियंट," माया ने अपनी वाइन का घूंट लेते हुए कहा।

उसने अपना एनक्रिप्टेड फोन उठाया और उसी फेक ट्विटर हैंडल से एक और ट्वीट ड्राफ्ट किया। इस बार उसने एक तस्वीर अटैच की। यह तस्वीर विक्रम बजाज की उस खून से सनी रेंज रोवर की थी, जो 14 अगस्त की रात खाई में मिली थी। और तस्वीर के ठीक नीचे कैप्शन में लिखा था:

स्कॉर्पियो ने तेज़ी से आकर मारुति को पीछे से एक ज़ोरदार टक्कर मारी। बंटी का सिर स्टीयरिंग व्हील से टकराते-टकराते बचा। गाड़ी हाईवे पर नागिन की तरह लहराने लगी।

"भैया बचाओ!" गोलू रोने लगा था।

"पकड़ के बैठ!" बंटी ने अचानक हैंडब्रेक खींचा और स्टीयरिंग को बाईं तरफ घुमा दिया। मारुति हाईवे से उतरकर एक कच्ची, धूल भरी सड़क पर कूद गई जो एक घनी स्लम बस्ती की तरफ जाती थी।

स्कॉर्पियो भी उनके पीछे-पीछे उस धूल भरी सड़क पर उतर गई। बस्ती की गलियां बहुत संकरी थीं। बंटी ने अपनी मारुति को एक तंग गली में घुसा दिया। स्कॉर्पियो बड़ी होने के कारण उस गली में फंस गई।

"गाड़ी छोड़ गोलू, भाग!" बंटी ने दरवाज़ा खोला और गोलू को खींचते हुए बाहर निकाला। दोनों बस्ती की पतली, भूलभुलैया जैसी गलियों में अंधाधुंध भागने लगे। उनके पीछे एसयूवी से उतरे दो हट्टे-कट्टे बाउंसर दौड़ रहे थे, जिनके हाथों में लोहे की रॉड थीं।

बंटी और गोलू भागते-भागते एक गंदे नाले के किनारे पहुंच गए। आगे रास्ता बंद था।

"कूद गोलू!" बंटी ने बिना सोचे समझे नाले के किनारे पड़े कूड़े के ढेर में छलांग लगा दी। गोलू भी उसके पीछे कूद गया। दोनों उस बदबूदार कचरे और कीचड़ के अंदर पूरी तरह छुप गए।

कुछ ही सेकंड बाद वो दोनों बाउंसर वहां पहुंचे। उन्होंने चारों तरफ देखा, लेकिन उन्हें कोई दिखाई नहीं दिया। बस्ती के कुछ आवारा कुत्ते उन पर भौंकने लगे। बाउंसर्स ने गुस्से में एक कुत्ते को लात मारी और वापस लौट गए।

कूड़े के ढेर के अंदर, बंटी और गोलू की सांसें धौंकनी की तरह चल रही थीं। वो बच तो गए थे, लेकिन आज उन्हें समझ आ गया था कि ये खबर उनकी ज़िंदगी की सबसे बड़ी और शायद आखिरी खबर हो सकती है।

द नेशनल ट्रुथ के अपने केबिन में बैठी तनिशा ने अपनी डेस्क की दराज़ खोली और वो अधजला बैंक स्टेटमेंट बाहर निकाला। बंटी ने उसे जो सुबूत दिया था, वह किसी डायनामाइट से कम नहीं था।

उसने लैपटॉप खोला और कॉर्पोरेट अफेयर्स मिनिस्ट्री की वेबसाइट पर 'ग्लोबलिंक ओवरसीज़' नाम की कंपनी सर्च करने लगी। जो रिज़ल्ट सामने आया, उसने तनिशा के दिमाग की नसें तान दीं।

ग्लोबलिंक ओवरसीज़ एक शेल कंपनी थी, जिसका रजिस्टर्ड एड्रेस एक पुरानी, बंद पड़ी मिल का था। कंपनी का कोई एम्प्लॉई नहीं था, कोई टर्नओवर नहीं था। लेकिन 15 अगस्त 2019 को, यानी विक्रम बजाज के गायब होने के ठीक एक दिन बाद, इस कंपनी के अकाउंट में 50 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए गए थे।

और सबसे बड़ा सुराग था उस कंपनी का ऑथराइज़्ड सिग्नेटरी। कागज़ पर जले हुए हिस्से में सिर्फ दो अक्षर बचे थे— **G.S.**

तनिशा ने आंखें बंद कीं और आज दोपहर प्रेस कॉन्फ्रेंस का नज़ारा याद करने लगी। वो शख्स जो आर्यन के पीछे किसी परछाई की तरह खड़ा था। वो शख्स जिसने आर्यन को सवालों से बचाया था। आर्यन प्रताप का सबसे करीबी दोस्त और पार्टी का जनरल सेक्रेटरी।

**गोविंद सिंह।**

तनिशा की आंखें झटके से खुल गईं। "माई गॉड..." उसने फुसफुसाते हुए कहा।

यह सिर्फ आर्यन प्रताप का स्कैंडल नहीं था। आर्यन तो शायद सिर्फ एक चेहरा था। असली मास्टरमाइंड, असली खिलाड़ी कोई और था। तनिशा समझ गई थी कि यह 50 करोड़ रुपये विक्रम बजाज को रास्ते से हटाने की सुपारी थी या फिर किसी बहुत बड़े ब्लैकमेल की रकम।

तभी उसका फोन बीप हुआ। माया चौधरी (उस अनजान ट्विटर हैंडल) का वो नया ट्वीट आ चुका था, जिसमें विक्रम बजाज की खून से सनी गाड़ी की तस्वीर थी और 24 घंटे का अल्टीमेटम था।

तनिशा ने उस ट्वीट को घूरा। गेम बहुत गंदा हो चुका था। आर्यन प्रताप, गोविंद सिंह, वो अनजान ट्विटर हैंडल और अब ये 50 करोड़ का सुबूत। तनिशा को यह सब एक साथ जोड़ना था। उसने तय कर लिया कि अब उसे सीधे उस आदमी से बात करनी होगी, जो इस पूरे तूफान के केंद्र में था।

आर्यन प्रताप।

उसे आर्यन से अकेले में मिलना होगा। बिना कैमरों के, बिना गोविंद सिंह के। सच वहीं से बाहर आएगा।

राजधानी की सड़कें रात ग्यारह बजे तक लगभग सूनी हो चुकी थीं। शहर पर एक अजीब सी खामोशी छाई थी, लेकिन सत्ता के गलियारों में तूफान पूरी रफ्तार से दौड़ रहा था।

पार्टी हेडक्वार्टर के टॉप फ्लोर पर स्थित गोविंद सिंह के प्राइवेट ऑफिस में घुटन भरा सन्नाटा था। कमरे की बत्तियां बुझी हुई थीं और सिर्फ शहर की नियॉन लाइट्स खिड़की से अंदर आ रही थीं। गोविंद अपनी भारी रिवॉल्विंग चेयर पर बैठा था। उसके सामने गजराज खड़ा था, और पहली बार इस खूंखार एनकाउंटर स्पेशलिस्ट के चेहरे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं।

"तुम मुझसे कह रहे हो कि दो मामूली, सड़क छाप रिपोर्टर तुम्हारी एसयूवी और तुम्हारे हथियारबंद लड़कों को चकमा देकर एक स्लम में गायब हो गए?" गोविंद की आवाज़ में चीख नहीं थी, बल्कि एक ऐसी ठंडी फुसफुसाहट थी जो मौत से भी ज्यादा खौफनाक लग रही थी।

"सर, गलियां बहुत संकरी थीं," गजराज ने अपनी सफाई देने की कोशिश की। "लड़कों ने पूरी बस्ती छान मारी, लेकिन वो कहीं नहीं मिले। ऐसा लगता है जैसे ज़मीन खा गई उन्हें।"

गोविंद अचानक अपनी कुर्सी से उठा। उसने टेबल पर रखा क्रिस्टल का भारी पेपरवेट उठाया और पूरी ताकत से सामने लगी कांच की दीवार पर दे मारा। कांच अनगिनत टुकड़ों में टूटकर फर्श पर बिखर गया। गजराज एक कदम पीछे हट गया।

"वो ज़मीन में नहीं छिपे हैं गजराज, वो सीधे उस खूंखार औरत की गोद में जाकर बैठे हैं!" गोविंद गुस्से से हांफ रहा था। "तनिशा! आज प्रेस कॉन्फ्रेंस में तनिशा ने आर्यन से सीधे 14 अगस्त और विक्रम बजाज का नाम लेकर सवाल पूछा था। उसे ये सब हवा से नहीं पता चला है। उन दोनों लड़कों ने वो अधजले कागज़ तनिशा को दे दिए हैं। हमारी ही माचिस से अब हमारे घर में आग लगाई जा रही है।"

गोविंद ने गहरी सांस लेकर खुद को शांत किया। उसे पता था कि पैनिक करने से खेल हाथ से निकल जाएगा।

"मुझे तनिशा की हर हरकत की खबर चाहिए," गोविंद ने अपनी आंखें सिकोड़ते हुए कहा। "उसका फोन टैप करो। उसके घर, उसके ऑफिस के बाहर चौबीसों घंटे नज़र रखो। वो किससे मिलती है, क्या खाती है, मुझे सब जानना है। और उन दोनों लड़कों को ढूंढ निकालो। इससे पहले कि तनिशा वो कागज़ नेशनल टीवी पर फ्लैश करे, मुझे वो सुबूत वापस चाहिए। किसी भी कीमत पर।"

गजराज ने सिर हिलाया और कांच के टुकड़ों को रौंदता हुआ अंधेरे में गायब हो गया। गोविंद ने अपनी टाई ढीली की और खिड़की के बाहर चमकते शहर को देखने लगा। आर्यन उसका सबसे बड़ा इन्वेस्टमेंट था, और वो किसी भी कीमत पर आर्यन को डूबने नहीं दे सकता था।

रात के बारह बज चुके थे। पार्टी हेडक्वार्टर की वीआईपी बेसमेंट पार्किंग में सिर्फ आर्यन की बुलेटप्रूफ ब्लैक लैंड क्रूज़र खड़ी थी। ड्राइवर इंजन स्टार्ट करके आर्यन का इंतज़ार कर रहा था। दो सिक्योरिटी गार्ड्स लिफ्ट के दरवाज़े पर तैनात थे।

लिफ्ट का दरवाज़ा खुला और आर्यन थके हुए कदमों से बाहर निकला। आज का दिन उसके लिए किसी बुरे सपने जैसा था। माया चौधरी का ट्वीट, मीडिया का पागलपन, और तनिशा के उस एक सवाल ने उसकी रातों की नींद हमेशा के लिए उड़ा दी थी। वह बस घर जाकर कुछ वाइन पीना चाहता था ताकि उसका दिमाग सुन्न हो सके।

जैसे ही आर्यन अपनी गाड़ी के पिछले दरवाज़े तक पहुंचा, पार्किंग के एक मोटे पिलर के पीछे से एक साया बाहर निकला।

"रात काफी लंबी हो गई है, मिस्टर सीएम," तनिशा की सख्त और व्यंग्यात्मक आवाज़ बेसमेंट में गूंजी।

सिक्योरिटी गार्ड्स तुरंत अपनी गन निकालकर तनिशा की तरफ दौड़े, लेकिन आर्यन ने अपना हाथ उठाकर उन्हें रोक दिया। तनिशा के हाथों में कोई हथियार नहीं था, सिर्फ एक लेदर की डायरी थी।

"तुम यहां कैसे पहुंची? ये हाई-सिक्योरिटी ज़ोन है," आर्यन ने अपने गुस्से को कंट्रोल करते हुए कहा। उसकी सांसें तेज़ हो गई थीं।

"एक इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिस्ट के लिए कोई दरवाज़ा बंद नहीं होता आर्यन," तनिशा धीरे-धीरे चलकर उसके बिल्कुल करीब आ गई। "प्रेस कॉन्फ्रेंस में तुम्हारे उस दोस्त गोविंद ने मुझे सवाल पूछने नहीं दिया। लेकिन अब हम अकेले हैं। नो कैमरा। नो पीआर टीम। सिर्फ तुम और मैं। मुझे पांच मिनट चाहिए।"

"मेरे पास तुमसे बात करने के लिए कुछ नहीं है। मेरी लीगल टीम कल सुबह तुम्हारे चैनल पर डिफेमेशन का नोटिस भेज रही है," आर्यन ने कहा और गाड़ी का दरवाज़ा खोलने लगा।

तनिशा ने अचानक अपना हाथ दरवाज़े पर रख दिया। उसकी आंखें सीधे आर्यन की आंखों में गड़ी थीं। "डिफेमेशन का केस तब किया जाता है जब कोई झूठ बोल रहा हो। 14 अगस्त की रात की बारिश, विक्रम बजाज की खून से सनी गाड़ी, और तुम्हारा अचानक गायब हो जाना... इनमें से क्या झूठ है आर्यन?"

आर्यन का जबड़ा भिंच गया। "तुम्हारे पास कोई सुबूत नहीं है।"

"तुम्हें ऐसा लगता है," तनिशा ने एक रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा। उसने अपनी डायरी खोली और उसमें से एक प्लास्टिक के ज़िपर बैग में रखा वो आधा जला हुआ बैंक स्टेटमेंट निकाला। उसने वो कागज़ आर्यन की आंखों के सामने कर दिया।

"ये देखो आर्यन। ग्लोबलिंक ओवरसीज़ नाम की एक शेल कंपनी। 15 अगस्त की सुबह, यानी विक्रम बजाज के गायब होने के ठीक चौबीस घंटे बाद, इस कंपनी के अकाउंट में पूरे 50 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए गए थे।"

आर्यन ने उस जले हुए कागज़ को देखा। 50 करोड़ का फिगर देखते ही उसके चेहरे का रंग उड़ गया। उसकी आंखों में एक ऐसा जेनुइन शॉक था, जिसे कोई एक्टर भी कैमरे के सामने नहीं कर सकता।

"ये... ये क्या है? कौन से पचास करोड़?" आर्यन हकलाने लगा।

तनिशा की पारखी नज़रों ने आर्यन का वो शॉक पकड़ लिया। तनिशा को एक झटके में समझ आ गया कि आर्यन को इस पैसे के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

"तुम सच में नहीं जानते ना?" तनिशा ने अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी की, जैसे वह किसी बहुत बड़े राज़ से पर्दा उठा रही हो। "तुम समझते थे कि वो सिर्फ एक एक्सीडेंट था जिसे छुपा दिया गया। लेकिन किसी ने उस एक्सीडेंट की

कीमत वसूली थी। आर्यन, ज़रा सोचो, इस पूरी दुनिया में तुम्हारे अलावा वो कौन है जो 14 अगस्त की रात तुम्हारे साथ था और जिसके पास इतनी बड़ी रकम ट्रांसफर करने का एक्सेस और अथॉरिटी है?"

तनिशा ने अपनी उंगली उस जले हुए कागज़ के निचले हिस्से पर रखी, जहां ऑथराइज़्ड सिग्नेटरी के दो अक्षर बचे थे।

**G.S.**

आर्यन की सांस गले में अटक गई। जी. एस.। गोविंद सिंह।

"तुम्हारा सबसे करीबी दोस्त, तुम्हारा स्ट्रैटेजिस्ट, तुम्हारे लिए एक अलग ही गेम खेल रहा है आर्यन। वो तुम्हें बचा नहीं रहा है, वो तुम्हें एक मोहरे की तरह इस्तेमाल कर रहा है," तनिशा ने अपना मास्टरस्ट्रोक खेल दिया था।

आर्यन के दिमाग में एक भयंकर धमाका हुआ। गोविंद? गोविंद ने 50 करोड़ रुपये दिए? किसे? और क्यों? क्या विक्रम बजाज की मौत कोई एक्सीडेंट नहीं, बल्कि एक प्री-प्लांड मर्डर था? क्या गोविंद ने वो मर्डर करवाया था? आर्यन का सिर चकराने लगा। जिन नींवों पर उसने अपना पूरा राजनीतिक करियर और अपनी ज़िंदगी खड़ी की थी, वो अचानक दरकने लगी थीं।

"तुम झूठ बोल रही हो। ये कागज़ फेक है। गोविंद ऐसा कभी नहीं कर सकता," आर्यन ने खुद को यकीन दिलाने की कोशिश की, लेकिन उसकी आवाज़ में वो दम नहीं था।

"सच क्या है, ये तो तुम्हें खुद ढूंढना होगा आर्यन। लेकिन याद रखना, तुम्हारे पास बहुत कम वक्त है। जो भी तुम्हें ट्विटर पर ब्लैकमेल कर रहा है, वो तुम्हारा राजनीतिक करियर खत्म करना चाहता है। लेकिन जिसने ये 50 करोड़ लिए हैं, वो तुम्हारी जान भी ले सकता है," तनिशा ने डायरी बंद की और पीछे हट गई।

"तुम ये सब मुझे क्यों बता रही हो? तुम तो मेरा एक्सपोज़ करना चाहती थी?" आर्यन ने उलझन में पूछा।

"क्योंकि मुझे आधा सच नहीं चाहिए। मुझे पूरी कहानी चाहिए। और अब तुम खुद मुझे वो कहानी लाकर दोगे। अगर तुम बचना चाहते हो, तो तुम्हें गोविंद से सवाल पूछने होंगे। गुडनाइट, मिस्टर प्रताप।"

तनिशा पलटी और बेसमेंट के अंधेरे में वैसे ही गायब हो गई जैसे वो आई थी।

आर्यन वहीं खड़ा रहा। उसका दिमाग सुन्न हो चुका था। उसने गाड़ी का दरवाज़ा खोला और अंदर बैठ गया।

"घर चलो," आर्यन ने भारी आवाज़ में ड्राइवर से कहा। लैंड क्रूज़र बेसमेंट से निकलकर राजधानी की सुनसान सड़कों पर दौड़ने लगी, लेकिन आर्यन के अंदर एक बहुत बड़ा तूफान शुरू हो चुका था।

रात के डेढ़ बज चुके थे। आर्यन अपने घर पहुंच चुका था। उसने ना कपड़े बदले थे, ना लाइट जलाई थी। वह अपने स्टडी रूम में अंधेरे में बैठा था। उसके हाथ में व्हिस्की का ग्लास था, जिसे वह पिछले आधे घंटे से घूर रहा था।

तनिशा की बातें उसके दिमाग में किसी हथौड़े की तरह बज रही थीं। *जी. एस.। 50 करोड़।*

तभी कमरे की खामोशी को चीरते हुए उसके प्राइवेट फोन की रिंगटोन बज उठी। यह वो नंबर था जो सिर्फ गोविंद, उसके परिवार और पार्टी हाईकमान के पास था। आर्यन ने स्क्रीन की तरफ देखा। एक अननोन, इंटरनेशनल नंबर फ्लैश हो रहा था।

आर्यन के दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। उसने झिझकते हुए कॉल रिसीव किया और बिना कुछ बोले फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ से एक बेहद सॉफ्ट, मादक और ठंडी हंसी की आवाज़ आई। वो आवाज़ किसी ज़हर में डूबे हुए रेशम जैसी थी।

"हैलो, आर्यन," माया चौधरी की आवाज़ गूंजी।

आर्यन के रोंगटे खड़े हो गए। "माया..." उसके मुंह से सिर्फ इतना ही निकला।

"कैसा लग रहा है आर्यन? अपनी आंखों के सामने अपने उस बेदाग साम्राज्य को रेत के महल की तरह गिरते हुए देखना? मुझे पता है आज रात तुम्हें नींद नहीं आ रही होगी। जब टीवी पर तुम्हारी इज़्ज़त के चीथड़े उड़ते हैं, तो नींद कहां आती है," माया की आवाज़ में एक अजीब सा साइकोपैथिक आनंद था।

"तुम क्या चाहती हो माया? ये घटिया ब्लैकमेल करके तुम्हें क्या मिलेगा?" आर्यन ने दांत पीसते हुए कहा।

"घटिया? ओह डार्लिंग, गेम तो अभी शुरू हुआ है," माया ने शैम्पेन का एक घूंट लेते हुए कहा। "तुम्हें क्या लगा, मैं सिर्फ वो पुरानी गाड़ी की फोटो ट्वीट करूंगी और तुम डर जाओगे? वो तो सिर्फ ट्रेलर था। असली पिक्चर मेरे पास

है। तुम्हारी वो क्लासिफाइड फाइल, वो फॉरेंसिक रिपोर्ट जो कभी सबमिट नहीं हुई। मेरे पास वो सब है जो तुम्हें चीफ मिनिस्टर की कुर्सी से उठाकर सीधे तिहाड़ जेल की कालकोठरी में डाल देगा।"

आर्यन का गला सूख गया। "तुम्हारे पास वो फाइल कैसे आई?"

"एक जादूगर अपने राज़ कभी नहीं बताता। लेकिन मैं तुम्हें एक ऑफर दे सकती हूं आर्यन," माया का लहज़ा अचानक गंभीर हो गया। "मुझे तुम्हारी कुर्सी चाहिए। कल सुबह तुम एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करोगे। तुम कहोगे कि तुम्हारी तबीयत खराब है, या तुम्हें कोई मोरल ज़िम्मेदारी लेनी है, जो भी तुम्हें ठीक लगे। लेकिन तुम अपना नॉमिनेशन वापस लोगे और राजनीति से हमेशा के लिए सन्यास ले लोगे। अगर तुमने ऐसा किया, तो वो 14 अगस्त का राज़ हमेशा के लिए दफ्न रहेगा।"

"और अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो?" आर्यन ने मुट्ठी भींचते हुए पूछा।

"तो 24 घंटे के बाद, तुम्हारे उस राज़ के सारे सुबूत द नेशनल ट्रुथ चैनल की डेस्क पर होंगे। तनिशा वैसे भी तुम्हारे पीछे कुत्तों की तरह पड़ी है। मैं बस उसे वो हड्डी डाल दूंगी जो उसे चाहिए। चॉइस तुम्हारी है आर्यन। पावर या फ्रीडम। टिक-टॉक।"

माया ने फोन काट दिया।

आर्यन के हाथ से फोन छूटकर कालीन पर गिर गया। वह पूरी तरह टूट चुका था। एक तरफ विपक्ष की सबसे खतरनाक नेता उसकी गर्दन पर तलवार रखे थी, और दूसरी तरफ उसका अपना सबसे करीबी दोस्त, गोविंद, उसके साथ एक खौफनाक धोखा कर रहा था।

कमरे के अंधेरे में आर्यन ने अपना व्हिस्की का ग्लास ज़ोर से दीवार पर दे मारा। अब उसके पास पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। उसे खुद इस दलदल में उतरना होगा। उसे गोविंद के उस पचास करोड़ वाले राज़ का पर्दाफाश करना होगा, और माया चौधरी को उसी के खेल में मात देनी होगी।

शिकार अब शिकारी बनने की तैयारी कर रहा था। सत्ता का असली खूनी खेल अब शुरू होने वाला था।

## अध्याय 6:

राजधानी की सड़कें रात ग्यारह बजे तक लगभग सूनी हो चुकी थीं। शहर पर एक अजीब सी खामोशी छाई थी, लेकिन सत्ता के गलियारों में तूफान पूरी रफ्तार से दौड़ रहा था।

पार्टी हेडक्वार्टर के टॉप फ्लोर पर स्थित गोविंद सिंह के प्राइवेट ऑफिस में घुटन भरा सन्नाटा था। कमरे की बत्तियां बुझी हुई थीं और सिर्फ शहर की नियॉन लाइट्स खिड़की से अंदर आ रही थीं। गोविंद अपनी भारी रिवॉल्विंग चेयर पर बैठा था। उसके सामने गजराज खड़ा था, और पहली बार इस खूंखार एनकाउंटर स्पेशलिस्ट के चेहरे पर पसीने की बूंदें चमक रही थीं।

"तुम मुझसे कह रहे हो कि दो मामूली, सड़क छाप रिपोर्टर तुम्हारी एसयूवी और तुम्हारे हथियारबंद लड़कों को चकमा देकर एक स्लम में गायब हो गए?" गोविंद की आवाज़ में चीख नहीं थी, बल्कि एक ऐसी ठंडी फुसफुसाहट थी जो मौत से भी ज्यादा खौफनाक लग रही थी।

"सर, गलियां बहुत संकरी थीं," गजराज ने अपनी सफाई देने की कोशिश की। "लड़कों ने पूरी बस्ती छान मारी, लेकिन वो कहीं नहीं मिले। ऐसा लगता है जैसे ज़मीन खा गई उन्हें।"

गोविंद अचानक अपनी कुर्सी से उठा। उसने टेबल पर रखा क्रिस्टल का भारी पेपरवेट उठाया और पूरी ताकत से सामने लगी कांच की दीवार पर दे मारा। कांच अनगिनत टुकड़ों में टूटकर फर्श पर बिखर गया। गजराज एक कदम पीछे हट गया।

"वो ज़मीन में नहीं छिपे हैं गजराज, वो सीधे उस खूंखार औरत की गोद में जाकर बैठे हैं!" गोविंद गुस्से से हांफ रहा था। "तनिशा! आज प्रेस कॉन्फ्रेंस में तनिशा ने आर्यन से सीधे 14 अगस्त और विक्रम बजाज का नाम लेकर सवाल पूछा था। उसे ये सब हवा से नहीं पता चला है। उन दोनों लड़कों ने वो अधजले कागज़ तनिशा को दे दिए हैं। हमारी ही माचिस से अब हमारे घर में आग लगाई जा रही है।"

गोविंद ने गहरी सांस लेकर खुद को शांत किया। उसे पता था कि पैनिक करने से खेल हाथ से निकल जाएगा।

"मुझे तनिशा की हर हरकत की खबर चाहिए," गोविंद ने अपनी आंखें सिकोड़ते हुए कहा। "उसका फोन टैप करो। उसके घर, उसके ऑफिस के बाहर चौबीसों घंटे नज़र रखो। वो किससे मिलती है, क्या खाती है, मुझे सब जानना है। और उन दोनों लड़कों को ढूंढ निकालो। इससे पहले कि तनिशा वो कागज़ नेशनल टीवी पर फ्लैश करे, मुझे वो सुबूत वापस चाहिए। किसी भी कीमत पर।"

गजराज ने सिर हिलाया और कांच के टुकड़ों को रौंदता हुआ अंधेरे में गायब हो गया। गोविंद ने अपनी टाई ढीली की और खिड़की के बाहर चमकते शहर को देखने लगा। आर्यन उसका सबसे बड़ा इन्वेस्टमेंट था, और वो किसी भी कीमत पर आर्यन को डूबने नहीं दे सकता था।

रात के बारह बज चुके थे। पार्टी हेडक्वार्टर की वीआईपी बेसमेंट पार्किंग में सिर्फ आर्यन की बुलेटप्रूफ ब्लैक लैंड क्रूज़र खड़ी थी। ड्राइवर इंजन स्टार्ट करके आर्यन का इंतज़ार कर रहा था। दो सिक्योरिटी गार्ड्स लिफ्ट के दरवाज़े पर तैनात थे।

लिफ्ट का दरवाज़ा खुला और आर्यन थके हुए कदमों से बाहर निकला। आज का दिन उसके लिए किसी बुरे सपने जैसा था। माया चौधरी का ट्वीट, मीडिया का पागलपन, और तनिशा के उस एक सवाल ने उसकी रातों की नींद हमेशा के लिए उड़ा दी थी। वह बस घर जाकर कुछ वाइन पीना चाहता था ताकि उसका दिमाग सुन्न हो सके।

जैसे ही आर्यन अपनी गाड़ी के पिछले दरवाज़े तक पहुंचा, पार्किंग के एक मोटे पिलर के पीछे से एक साया बाहर निकला।

"रात काफी लंबी हो गई है, मिस्टर सीएम," तनिशा की सख्त और व्यंग्यात्मक आवाज़ बेसमेंट में गूंजी।

सिक्योरिटी गार्ड्स तुरंत अपनी गन निकालकर तनिशा की तरफ दौड़े, लेकिन आर्यन ने अपना हाथ उठाकर उन्हें रोक दिया। तनिशा के हाथों में कोई हथियार नहीं था, सिर्फ एक लेदर की डायरी थी।

"तुम यहां कैसे पहुंची? ये हाई-सिक्योरिटी ज़ोन है," आर्यन ने अपने गुस्से को कंट्रोल करते हुए कहा। उसकी सांसें तेज़ हो गई थीं।

"एक इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिस्ट के लिए कोई दरवाज़ा बंद नहीं होता आर्यन," तनिशा धीरे-धीरे चलकर उसके बिल्कुल करीब आ गई। "प्रेस कॉन्फ्रेंस में तुम्हारे उस दोस्त गोविंद ने मुझे सवाल पूछने नहीं दिया। लेकिन अब हम

अकेले हैं। नो कैमरा। नो पीआर टीम। सिर्फ तुम और मैं। मुझे पांच मिनट चाहिए।"

"मेरे पास तुमसे बात करने के लिए कुछ नहीं है। मेरी लीगल टीम कल सुबह तुम्हारे चैनल पर डिफेमेशन का नोटिस भेज रही है," आर्यन ने कहा और गाड़ी का दरवाज़ा खोलने लगा।

तनिशा ने अचानक अपना हाथ दरवाज़े पर रख दिया। उसकी आंखें सीधे आर्यन की आंखों में गड़ी थीं। "डिफेमेशन का केस तब किया जाता है जब कोई झूठ बोल रहा हो। 14 अगस्त की रात की बारिश, विक्रम बजाज की खून से सनी गाड़ी, और तुम्हारा अचानक गायब हो जाना... इनमें से क्या झूठ है आर्यन?"

आर्यन का जबड़ा भिंच गया। "तुम्हारे पास कोई सुबूत नहीं है।"

"तुम्हें ऐसा लगता है," तनिशा ने एक रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा। उसने अपनी डायरी खोली और उसमें से एक प्लास्टिक के ज़िपर बैग में रखा वो आधा जला हुआ बैंक स्टेटमेंट निकाला। उसने वो कागज़ आर्यन की आंखों के सामने कर दिया।

"ये देखो आर्यन। ग्लोबलिंक ओवरसीज़ नाम की एक शेल कंपनी। 15 अगस्त की सुबह, यानी विक्रम बजाज के गायब होने के ठीक चौबीस घंटे बाद, इस कंपनी के अकाउंट में पूरे 50 करोड़ रुपये ट्रांसफर किए गए थे।"

आर्यन ने उस जले हुए कागज़ को देखा। 50 करोड़ का फिगर देखते ही उसके चेहरे का रंग उड़ गया। उसकी आंखों में एक ऐसा जेनुइन शॉक था, जिसे कोई एक्टर भी कैमरे के सामने नहीं कर सकता।

"ये... ये क्या है? कौन से पचास करोड़?" आर्यन हकलाने लगा।

तनिशा की पारखी नज़रों ने आर्यन का वो शॉक पकड़ लिया। तनिशा को एक झटके में समझ आ गया कि आर्यन को इस पैसे के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

"तुम सच में नहीं जानते ना?" तनिशा ने अपनी आवाज़ थोड़ी धीमी की, जैसे वह किसी बहुत बड़े राज़ से पर्दा उठा रही हो। "तुम समझते थे कि वो सिर्फ एक एक्सीडेंट था जिसे छुपा दिया गया। लेकिन किसी ने उस एक्सीडेंट की कीमत वसूली थी। आर्यन, ज़रा सोचो, इस पूरी दुनिया में तुम्हारे अलावा वो कौन है जो 14 अगस्त की रात तुम्हारे साथ था और जिसके पास इतनी बड़ी रकम ट्रांसफर करने का एक्सेस और अथॉरिटी है?"

तनिशा ने अपनी उंगली उस जले हुए कागज़ के निचले हिस्से पर रखी, जहां ऑथराइज़्ड सिग्नेटरी के दो अक्षर बचे थे।

**G.S.**

आर्यन की सांस गले में अटक गई। जी. एस.। गोविंद सिंह।

"तुम्हारा सबसे करीबी दोस्त, तुम्हारा स्ट्रैटेजिस्ट, तुम्हारे लिए एक अलग ही गेम खेल रहा है आर्यन। वो तुम्हें बचा नहीं रहा है, वो तुम्हें एक मोहरे की तरह इस्तेमाल कर रहा है," तनिशा ने अपना मास्टरस्ट्रोक खेल दिया था।

आर्यन के दिमाग में एक भयंकर धमाका हुआ। गोविंद? गोविंद ने 50 करोड़ रुपये दिए? किसे? और क्यों? क्या विक्रम बजाज की मौत कोई एक्सीडेंट नहीं, बल्कि एक प्री-प्लांड मर्डर था? क्या गोविंद ने वो मर्डर करवाया था? आर्यन का सिर चकराने लगा। जिन नींवों पर उसने अपना पूरा राजनीतिक करियर और अपनी ज़िंदगी खड़ी की थी, वो अचानक दरकने लगी थीं।

"तुम झूठ बोल रही हो। ये कागज़ फेक है। गोविंद ऐसा कभी नहीं कर सकता," आर्यन ने खुद को यकीन दिलाने की कोशिश की, लेकिन उसकी आवाज़ में वो दम नहीं था।

"सच क्या है, ये तो तुम्हें खुद ढूंढना होगा आर्यन। लेकिन याद रखना, तुम्हारे पास बहुत कम वक्त है। जो भी तुम्हें ट्विटर पर ब्लैकमेल कर रहा है, वो तुम्हारा राजनीतिक करियर खत्म करना चाहता है। लेकिन जिसने ये 50 करोड़ लिए हैं, वो तुम्हारी जान भी ले सकता है," तनिशा ने डायरी बंद की और पीछे हट गई।

"तुम ये सब मुझे क्यों बता रही हो? तुम तो मेरा एक्सपोज़ करना चाहती थी?" आर्यन ने उलझन में पूछा।

"क्योंकि मुझे आधा सच नहीं चाहिए। मुझे पूरी कहानी चाहिए। और अब तुम खुद मुझे वो कहानी लाकर दोगे। अगर तुम बचना चाहते हो, तो तुम्हें गोविंद से सवाल पूछने होंगे। गुडनाइट, मिस्टर प्रताप।"

तनिशा पलटी और बेसमेंट के अंधेरे में वैसे ही गायब हो गई जैसे वो आई थी।

आर्यन वहीं खड़ा रहा। उसका दिमाग सुन्न हो चुका था। उसने गाड़ी का दरवाज़ा खोला और अंदर बैठ गया।

"घर चलो," आर्यन ने भारी आवाज़ में ड्राइवर से कहा। लैंड क्रूज़र बेसमेंट से निकलकर राजधानी की सुनसान सड़कों पर दौड़ने लगी, लेकिन आर्यन के अंदर एक बहुत बड़ा तूफान शुरू हो चुका था।

रात के डेढ़ बज चुके थे। आर्यन अपने घर पहुंच चुका था। उसने ना कपड़े बदले थे, ना लाइट जलाई थी। वह अपने स्टडी रूम में अंधेरे में बैठा था। उसके हाथ में व्हिस्की का ग्लास था, जिसे वह पिछले आधे घंटे से घूर रहा था।

तनिशा की बातें उसके दिमाग में किसी हथौड़े की तरह बज रही थीं। *जी. एस.। 50 करोड़।*

तभी कमरे की खामोशी को चीरते हुए उसके प्राइवेट फोन की रिंगटोन बज उठी। यह वो नंबर था जो सिर्फ गोविंद, उसके परिवार और पार्टी हाईकमान के पास था। आर्यन ने स्क्रीन की तरफ देखा। एक अननोन, इंटरनेशनल नंबर फ्लैश हो रहा था।

आर्यन के दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। उसने झिझकते हुए कॉल रिसीव किया और बिना कुछ बोले फोन कान से लगा लिया।

दूसरी तरफ से एक बेहद सॉफ्ट, मादक और ठंडी हंसी की आवाज़ आई। वो आवाज़ किसी ज़हर में डूबे हुए रेशम जैसी थी।

"हैलो, आर्यन," माया चौधरी की आवाज़ गूंजी।

आर्यन के रोंगटे खड़े हो गए। "माया..." उसके मुंह से सिर्फ इतना ही निकला।

"कैसा लग रहा है आर्यन? अपनी आंखों के सामने अपने उस बेदाग साम्राज्य को रेत के महल की तरह गिरते हुए देखना? मुझे पता है आज रात तुम्हें नींद नहीं आ रही होगी। जब टीवी पर तुम्हारी इज़्ज़त के चीथड़े उड़ते हैं, तो नींद कहां आती है," माया की आवाज़ में एक अजीब सा साइकोपैथिक आनंद था।

"तुम क्या चाहती हो माया? ये घटिया ब्लैकमेल करके तुम्हें क्या मिलेगा?" आर्यन ने दांत पीसते हुए कहा।

"घटिया? ओह डार्लिंग, गेम तो अभी शुरू हुआ है," माया ने शैम्पेन का एक घूंट लेते हुए कहा। "तुम्हें क्या लगा, मैं सिर्फ वो पुरानी गाड़ी की फोटो ट्वीट करूंगी और तुम डर जाओगे? वो तो सिर्फ ट्रेलर था। असली पिक्चर मेरे पास है। तुम्हारी वो क्लासिफाइड फाइल, वो फॉरेंसिक रिपोर्ट जो कभी सबमिट नहीं हुई। मेरे पास वो सब है जो तुम्हें चीफ मिनिस्टर की कुर्सी से उठाकर सीधे तिहाड़ जेल की कालकोठरी में डाल देगा।"

आर्यन का गला सूख गया। "तुम्हारे पास वो फाइल कैसे आई?"

"एक जादूगर अपने राज़ कभी नहीं बताता। लेकिन मैं तुम्हें एक ऑफर दे सकती हूं आर्यन," माया का लहज़ा अचानक गंभीर हो गया। "मुझे तुम्हारी कुर्सी चाहिए। कल सुबह तुम एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करोगे। तुम कहोगे कि तुम्हारी तबीयत खराब है, या तुम्हें कोई मोरल ज़िम्मेदारी लेनी है, जो भी तुम्हें ठीक लगे। लेकिन तुम अपना नॉमिनेशन वापस लोगे और राजनीति से हमेशा के लिए सन्यास ले लोगे। अगर तुमने ऐसा किया, तो वो 14 अगस्त का राज़ हमेशा के लिए दफ्न रहेगा।"

"और अगर मैंने ऐसा नहीं किया तो?" आर्यन ने मुट्ठी भींचते हुए पूछा।

"तो 24 घंटे के बाद, तुम्हारे उस राज़ के सारे सुबूत द नेशनल ट्रुथ चैनल की डेस्क पर होंगे। तनिशा वैसे भी तुम्हारे पीछे कुत्तों की तरह पड़ी है। मैं बस उसे वो हड्डी डाल दूंगी जो उसे चाहिए। चॉइस तुम्हारी है आर्यन। पावर या फ्रीडम। टिक-टॉक।"

माया ने फोन काट दिया।

आर्यन के हाथ से फोन छूटकर कालीन पर गिर गया। वह पूरी तरह टूट चुका था। एक तरफ विपक्ष की सबसे खतरनाक नेता उसकी गर्दन पर तलवार रखे थी, और दूसरी तरफ उसका अपना सबसे करीबी दोस्त, गोविंद, उसके साथ एक खौफनाक धोखा कर रहा था।

कमरे के अंधेरे में आर्यन ने अपना व्हिस्की का ग्लास ज़ोर से दीवार पर दे मारा। अब उसके पास पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। उसे खुद इस दलदल में उतरना होगा। उसे गोविंद के उस पचास करोड़ वाले राज़ का पर्दाफाश करना होगा, और माया चौधरी को उसी के खेल में मात देनी होगी।

शिकार अब शिकारी बनने की तैयारी कर रहा था। सत्ता का असली खूनी खेल अब शुरू होने वाला था।

## अध्याय 7:

राजधानी की सुबह हमेशा की तरह शोरगुल से भरी थी, लेकिन आर्यन प्रताप के सरकारी बंगले में एक खौफनाक सन्नाटा पसरा था। बेडरूम की बालकनी में खड़ा आर्यन उगते हुए सूरज को देख रहा था। उसकी आंखें लाल थीं और चेहरे पर थकान के गहरे निशान थे। पूरी रात उसकी पलक नहीं झपकी थी।

माया चौधरी का अल्टीमेटम उसके कानों में अभी भी गूंज रहा था— "*कुर्सी छोड़ दो, या जेल जाने के लिए तैयार रहो।*"

लेकिन उससे भी बड़ा सदमा तनिशा का वो आधा जला हुआ बैंक स्टेटमेंट था। पचास करोड़। ग्लोबलिंक ओवरसीज़। और जी. एस. यानी गोविंद सिंह। आर्यन ने जिस इंसान पर अपनी जान से ज़्यादा भरोसा किया था, उसी ने विक्रम बजाज की मौत का सौदा किया था। आर्यन को महसूस हो रहा था जैसे वो किसी गहरी खाई में गिर रहा है और उसे बचाने वाला कोई नहीं है।

तभी बेडरूम का दरवाज़ा खुला और आर्यन का पुराना और वफादार पीए, राकेश अंदर आया।

"सर, गोविंद सर आ गए हैं। वो डाइनिंग टेबल पर आपका इंतज़ार कर रहे हैं। आज सुबह नौ बजे से आपका कैंपेन ट्रेल शुरू होना है," राकेश ने हिचकिचाते हुए कहा।

आर्यन ने एक गहरी सांस ली। उसने अपने चेहरे पर पानी के छपाके मारे, शेव की और अपना ट्रेडमार्क सफेद क्रिस्प कुर्ता पहन लिया। यह सिर्फ एक कपड़ा नहीं था, यह उसका कवच था। राजनीति में अगर आप कमज़ोर दिखते हैं, तो आपके अपने ही आपको नोच खाते हैं। आर्यन ने शीशे में खुद को देखा, अपनी आंखों में एक सधी हुई, ठंडी मुस्कान लाई और बाहर निकल गया।

डाइनिंग रूम में गोविंद सिंह बैठा था। उसके सामने ब्लैक कॉफी का कप था और एक हाथ में टैबलेट था जिसमें वो ताज़ा ओपिनियन पोल्स देख रहा था।

"गुड मॉर्निंग आर्यन," गोविंद ने बिना स्क्रीन से नज़रें हटाए कहा। "कल रात की प्रेस कॉन्फ्रेंस का डैमेज कंट्रोल मैंने कर लिया है। हमारी पीआर टीम ने सोशल मीडिया पर नैरेटिव सेट कर दिया है कि तनिशा और वो फेक ट्विटर हैंडल विपक्ष के पे-रोल पर हैं। जनता हमारी कहानी पर यकीन कर रही है।"

आर्यन कुर्सी खींचकर बैठा और उसने अपना टोस्ट उठाया। उसकी नज़रें गोविंद के हाथों पर थीं। इन्हीं हाथों ने 50 करोड़ का वो ट्रांजेक्शन किया था। आर्यन के अंदर ज्वालामुखी उबल रहा था, लेकिन उसने अपनी आवाज़ को बिल्कुल नॉर्मल रखा।

"गोविंद, क्या हमें चिंता करने की ज़रूरत है? मेरा मतलब है... 14 अगस्त को लेकर। अगर पुलिस या मीडिया ने विक्रम बजाज के केस की फाइल दोबारा खुलवा दी तो?" आर्यन ने बड़ी चतुराई से सवाल फेंका।

गोविंद ने अपनी कॉफी का कप टेबल पर रखा और आर्यन की आंखों में गहराई से देखा। "मैंने तुमसे कल भी कहा था आर्यन, उस रात का कोई सुबूत नहीं बचा है। कोई सीसीटीवी नहीं, कोई गवाह नहीं। जो भी सुबूत थे, वो हमेशा के लिए राख हो चुके हैं। तुम बस अपनी स्पीच पर फोकस करो।"

*राख हो चुके हैं?* आर्यन के दिमाग में तुरंत तनिशा के हाथ में मौजूद वो अधजला कागज़ घूम गया। गोविंद झूठ बोल रहा था, और अब आर्यन इस खेल के नियम समझ चुका था।

"ठीक है," आर्यन ने मुस्कुराते हुए कहा। "तुम्हें जो सही लगे गोविंद। मैं कैंपेन के लिए तैयार हूं।"

जैसे ही गोविंद फोन पर बात करने के लिए बालकनी में गया, आर्यन ने राकेश को अपने पास बुलाया और फुसफुसाते हुए कहा, "राकेश, एक काम है। बिल्कुल टॉप सीक्रेट। किसी को, खासकर गोविंद को कानो-कान खबर नहीं होनी चाहिए।"

"बताइए सर," राकेश ने सिर हिलाया।

"मुझे 15 अगस्त 2019 के दिन की गोविंद की सारी मूवमेंट डिटेल्स चाहिए। वो किससे मिला, कहां गया। और हां, ग्लोबलिंक ओवरसीज़ नाम की एक कंपनी है। मुझे पता करना है कि इस कंपनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में कौन है और ये किसकी शेल कंपनी है। किसी प्राइवेट हैकर या प्राइवेट डिटेक्टिव को लगाओ, लेकिन मुझे आज शाम तक रिपोर्ट चाहिए।"

राकेश ने बिना कोई सवाल किए हामी भरी और वहां से निकल गया। आर्यन ने कॉफी का एक घूंट लिया। माया का 24 घंटे का अल्टीमेटम खत्म होने वाला था। आर्यन ने तय कर लिया था कि वो सरेंडर नहीं करेगा। वो माया से भी लड़ेगा और गोविंद का भी पर्दाफाश करेगा।

ब्लैक पेन ड्राइव थी और एक पर्ची थी जिस पर लाल स्याही से लिखा था— *टाइम इज़ अप तनिशा। ये रहा तुम्हारा एक्सक्लूसिव। गो लाइव।*

तनिशा का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। माया चौधरी ने अपना वादा पूरा कर दिया था। तनिशा ने बिना समय बर्बाद किए पेन ड्राइव को अपने स्टैंडअलोन लैपटॉप (जो इंटरनेट से कनेक्टेड नहीं था) में प्लग किया।

पेन ड्राइव में सिर्फ दो फाइल्स थीं। एक पीडीएफ और एक ऑडियो फाइल।

तनिशा ने पहले पीडीएफ खोली। यह स्टेट फॉरेंसिक लैब की वो सीक्रेट रिपोर्ट थी जो आज तक किसी पुलिस स्टेशन में सबमिट नहीं हुई थी। रिपोर्ट में साफ लिखा था— *"विक्रम बजाज की रेंज रोवर के टायर्स को जानबूझकर पंक्चर किया गया था और गाड़ी को पीछे से किसी भारी एसयूवी ने टक्कर मारी थी। यह एक मर्डर है।"* और सबसे नीचे उस एसयूवी का नंबर लिखा था, जो आर्यन प्रताप के नाम पर रजिस्टर्ड थी।

तनिशा के हाथ कांपने लगे। उसने दूसरी फाइल, यानी ऑडियो फाइल को प्ले किया। स्पीकर से बारिश की तेज़ आवाज़ और किसी के ज़ोर-ज़ोर से हांफने की आवाज़ आने लगी। और फिर एक ऐसी आवाज़ गूंजी जिसे पूरा राज्य पहचानता था।

*"गोविंद! वो मर गया है गोविंद! गाड़ी खाई में गिर गई है। माई गॉड, हमने ये क्या कर दिया... अगर पुलिस को पता चला तो मेरी पूरी ज़िंदगी खत्म हो जाएगी!"* यह आर्यन प्रताप की आवाज़ थी, जो डर से कांप रही थी।

और फिर ऑडियो में गोविंद की ठंडी और खौफनाक आवाज़ आई— *"शांत हो जा आर्यन। किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। मैं गजराज को बुला रहा हूं। वो सब कुछ क्लीन कर देगा। तू बस गाड़ी में बैठ और यहां से निकल।"*

ऑडियो खत्म हो गया। तनिशा अपनी कुर्सी पर सुन्न होकर बैठ गई। यह सिर्फ एक स्कैंडल नहीं था, यह इस दशक की सबसे बड़ी पॉलिटिकल मर्डर मिस्ट्री थी। आर्यन प्रताप और गोविंद सिंह दोनों रंगे हाथों पकड़े गए थे। तनिशा के पास अब वो न्यूक्लियर बम था, जो इस राज्य की सरकार और आर्यन का करियर एक झटके में उड़ा सकता था।

"पाटील सर को बुलाओ!" तनिशा न्यूज़ रूम में चिल्लाई। "हम प्राइम टाइम से पहले ब्रेक कर रहे हैं!"

दूसरी तरफ, शहर के एक गंदे, बदबूदार स्लम इलाके में बंटी और गोलू एक खंडहर हो चुके पब्लिक टॉयलेट के पीछे दुबके बैठे थे। दोनों के कपड़ों पर कीचड़ लगा था और रात भर मच्छरों ने उनका बुरा हाल कर दिया था।

"भैया, पेट में चूहे कबड्डी खेल रहे हैं। कुछ खाने को जुगाड़ करो वरना मैं तो भूख से ही मर जाऊंगा," गोलू ने रोनी सूरत बनाते हुए कहा।

बंटी भी हताश था। कल रात गजराज के बाउंसर्स से बचकर भागने के चक्कर में उनकी मारुति 800 भी पीछे छूट गई थी। "तू चुप कर गोलू। जान बची लाखों पाए। अगर वो काले कोट वाले हमें पकड़ लेते, तो हमारा कीमा बनाकर इसी नाले में बहा देते।"

बंटी ने अपनी पैंट की जेब में हाथ डाला कि शायद कोई दस-बीस का नोट मिल जाए। लेकिन नोट की बजाय उसके हाथ में एक मुड़ा-तुड़ा सा कागज़ आया। उसने वो कागज़ बाहर निकाला।

यह वही कागज़ था जो कल रात विक्रम बजाज के अधजले आईडी कार्ड के पीछे चिपका हुआ था और हड़बड़ी में बंटी ने इसे अपनी दूसरी जेब में ठूंस लिया था।

बंटी ने उस मुड़े हुए कागज़ को खोला। वो आधा जला हुआ था, लेकिन उस पर प्रिंटेड शब्द अभी भी पढ़े जा सकते थे। यह एक रेलवे क्लॉक रूम की रसीद थी।

*नई दिल्ली रेलवे स्टेशन। लॉकर नंबर 42। बुकिंग डेट: 14 अगस्त 2019।*

बंटी की आंखें फटी की फटी रह गईं। "गोलू... तू देख रहा है ये क्या है?"

"क्या है भैया? किसी टिकट की रसीद है क्या?"

"अबे बेवकूफ, ये उस विक्रम बजाज के रेलवे लॉकर की चाबी की रसीद है! 14 अगस्त, यानी जिस दिन वो मरा था, उसी दिन उसने रेलवे स्टेशन के लॉकर में कुछ छुपाया था!" बंटी की भूख अचानक गायब हो गई और उसके अंदर का वो जुनूनी रिपोर्टर फिर से जाग उठा।

"भैया, आप फिर से आग में हाथ डाल रहे हो। हमें पुलिस के पास जाना चाहिए," गोलू ने घबराते हुए कहा।

"पुलिस हमें अंदर डाल देगी गधे। सोच, अगर विक्रम बजाज को पता था कि उसकी जान को खतरा है, तो उसने मरने से पहले अपना सबसे बड़ा सुबूत इसी लॉकर में छुपाया होगा। और अब वो सुबूत हमारे हाथ लगेगा। तनिशा मैडम

तो सिर्फ कागज़ दिखा रही हैं, हम सीधा खज़ाना खोलेंगे!" बंटी ने जोश में कहा और गोलू का हाथ पकड़कर वहां से भाग लिया।

उन्हें नहीं पता था कि लॉकर नंबर 42 में जो रखा था, वो इस पूरी कहानी को एक ऐसे खौफनाक मोड़ पर ले जाने वाला था, जिसकी उम्मीद ना तनिशा को थी और ना ही आर्यन को।

दोपहर के तीन बज चुके थे। शहर के सबसे बड़े रामलीला मैदान में लाखों की भीड़ जुटी थी। पार्टी के झंडे लहरा रहे थे। आर्यन प्रताप स्टेज पर था, माइक के सामने। उसका भाषण पूरे शबाब पर था।

"विरोधियों को लगता है कि वो कुछ झूठे ट्वीट करके मुझे डरा देंगे! लेकिन वो नहीं जानते कि मैं इस राज्य की मिट्टी का बेटा हूं!" आर्यन दहाड़ रहा था और भीड़ पागलों की तरह तालियां बजा रही थी। गोविंद पीछे बैठा गर्व से मुस्कुरा रहा था।

द इंपीरियल होटल के अपने सुइट में माया चौधरी टीवी पर ये लाइव रैली देख रही थी। उसके चेहरे पर एक शैतानी मुस्कान थी। अल्टीमेटम का समय खत्म हो चुका था और आर्यन ने हार नहीं मानी थी।

"रॉन्ग चॉइस आर्यन। वेरी रॉन्ग चॉइस," माया ने अपना वाइन का ग्लास उठाया।

उसी पल, द नेशनल ट्रुथ चैनल का लाइव ब्रॉडकास्ट अचानक इंटरप्ट हुआ। स्क्रीन पर एक लाल रंग का ब्रेकिंग न्यूज़ का बैनर फ्लैश हुआ और बैकग्राउंड में एक सस्पेंसफुल म्यूज़िक बजने लगा।

स्क्रीन पर तनिशा नज़र आई। उसका चेहरा बेहद सख्त था।

"नमस्कार, मैं हूं तनिशा, और आज द नेशनल ट्रुथ आपको वो सच दिखाने जा रहा है, जो इस राज्य की नींव हिला देगा। 14 अगस्त 2019। एक ऐसी रात जब एक उद्योगपति का कत्ल हुआ, और राज्य के भावी मुख्यमंत्री के हाथों पर खून के छींटे गिरे। हमारे पास वो एक्सक्लूसिव ऑडियो टेप है, जो साबित करता है कि आर्यन प्रताप और उनके सबसे करीबी साथी गोविंद सिंह, विक्रम बजाज की मौत में शामिल हैं। सुनिए ये टेप..."

टीवी स्क्रीन पर आर्यन और गोविंद की आवाज़ गूंज उठी।

माया चौधरी ज़ोर से हंस पड़ी। उसका मास्टरस्ट्रोक कामयाब हो गया था।

रामलीला मैदान में अचानक सन्नाटा छा गया। जिन लोगों के हाथों में स्मार्टफोन थे, वो लाइव न्यूज़ देख रहे थे। भीड़ में कानाफूसी शुरू हो गई। स्टेज पर बैठे पार्टी नेताओं के चेहरे पीले पड़ गए। गोविंद सिंह अपनी कुर्सी से झटके से खड़ा हो गया।

आर्यन प्रताप वहीं माइक के सामने बुत बनकर खड़ा रहा। उसका राजनीतिक साम्राज्य अब भरभरा कर गिर रहा था। कैमरे उसके चेहरे पर ज़ूम इन कर रहे थे।

लेकिन आर्यन की आंखों में डर नहीं था। वह पलटा और उसने सीधे गोविंद की आंखों में देखा। वो ऑडियो टेप सिर्फ एक इंसान रिकॉर्ड कर सकता था, जो उस रात उस गाड़ी में मौजूद था। और आर्यन को अब यकीन हो गया था कि माया चौधरी को वो टेप किसी और ने नहीं, बल्कि गोविंद ने ही बेचा था।

खेल अब पूरी तरह से पलट चुका था। शिकार अब शिकारी बन चुका था, और वो किसी को भी ज़िंदा छोड़ने वाला नहीं था।

## अध्याय 8:

रामलीला मैदान में जो सन्नाटा छाया था, वो किसी भयानक तूफान के आने से पहले की खामोशी थी। लाखों की भीड़, जो कुछ मिनट पहले तक आर्यन प्रताप के नाम के नारे लगा रही थी, अब अपने मोबाइल स्क्रीन्स और बड़े एलईडी प्रोजेक्टर्स पर द नेशनल ट्रुथ चैनल का वो लाइव ब्रॉडकास्ट देख रही थी।

ऑडियो टेप में आर्यन की कांपती हुई आवाज़— *"माई गॉड, हमने ये क्या कर दिया..."* और फिर गोविंद की वो खौफनाक हिदायत— *"मैं गजराज को बुला रहा हूं... तू बस गाड़ी में बैठ और यहां से निकल।"*

जैसे ही टेप खत्म हुआ, भीड़ में एक अजीब सी सुगबुगाहट शुरू हुई, जो अगले ही पल एक भयंकर आक्रोश में बदल गई। "हत्यारा! आर्यन प्रताप हत्यारा है!" पीछे से किसी ने चिल्लाकर एक पानी की बोतल स्टेज की तरफ फेंकी। फिर दूसरी बोतल, फिर कुर्सियां। पूरा रामलीला मैदान एक युद्ध के मैदान में तब्दील होने लगा।

स्टेज पर मौजूद पार्टी के बड़े नेताओं के चेहरों से खून सूख चुका था। वो एक-एक करके पीछे के रास्ते से भागने लगे।

"सर, हमें यहां से निकलना होगा! भीड़ बेकाबू हो रही है!" आर्यन के चीफ सिक्योरिटी ऑफिसर ने चिल्लाते हुए आर्यन को चारों तरफ से कवर कर लिया। एनएसजी कमांडोज़ ने अपनी गन्स निकाल लीं और आर्यन को सुरक्षा घेरे में लेकर स्टेज के पीछे की तरफ भागने लगे।

आर्यन का दिमाग सुन्न था। उसके कानों में सिर्फ वो ऑडियो टेप गूंज रहा था। वो टेप कोई बाहर का आदमी रिकॉर्ड नहीं कर सकता था। 14 अगस्त की उस खौफनाक रात, उस गाड़ी में सिर्फ दो लोग थे— आर्यन और गोविंद। अगर आर्यन ने रिकॉर्ड नहीं किया था, तो ज़ाहिर है कि गोविंद ने अपनी स्मार्टवॉच या फोन से वो रिकॉर्डिंग की थी। अपने ही दोस्त को ब्लैकमेल करने के लिए। एक इंश्योरेंस पॉलिसी के तौर पर।

आर्यन को कमांडोज़ ने धकेलते हुए उसकी बुलेटप्रूफ ब्लैक लैंड क्रूज़र में बैठा दिया। अगले ही सेकंड सामने वाला दरवाज़ा खुला और गोविंद भी हांफता हुआ अंदर आ बैठा। ड्राइवर ने एक्सीलरेटर पूरी ताकत से दबाया और गाड़ी वीआईपी एग्जिट से होते हुए हाईवे की तरफ दौड़ पड़ी।

गाड़ी के अंदर का तापमान जैसे शून्य से नीचे जा चुका था। एक भयानक, दमघोंटू सन्नाटा।

आर्यन धीरे से अपनी सीट से उठा। उसकी आंखों में अब डर नहीं था, बल्कि एक ऐसा खूंखार और जानलेवा गुस्सा था जो उसने आज तक महसूस नहीं किया था। बिना एक शब्द बोले, आर्यन ने झपट्टा मारा और गोविंद के कॉलर को अपने दोनों हाथों से कसकर जकड़ लिया।

"आर्यन! क्या पागल हो गए हो? छोड़ो मुझे!" गोविंद छटपटाया, लेकिन आर्यन की पकड़ किसी लोहे के शिकंजे जैसी थी।

"तुमने मुझे बेच दिया गोविंद!" आर्यन दहाड़ा। उसकी आवाज़ में दर्द और नफरत का ऐसा समंदर था कि आगे बैठे सिक्योरिटी गार्ड की भी रूह कांप गई। "वो टेप... वो रिकॉर्डिंग तुमने की थी! उस रात मेरी गाड़ी में! तुमने मेरे खिलाफ सुबूत इकट्ठा किए ताकि तुम मुझे अपने इशारों पर नचा सको! और वो पचास करोड़? विक्रम बजाज की मौत का सौदा तुमने किया था!"

गोविंद का चेहरा लाल हो गया था। उसने पूरी ताकत लगाकर आर्यन के हाथों को झटका और उसे पीछे धकेल दिया।

"दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा आर्यन!" गोविंद भी अब अपनी असली औकात पर आ चुका था। उसकी वो शांत, रहस्यमयी मुस्कान अब एक क्रूर दरिंदे में बदल चुकी थी। "हां, मैंने वो रिकॉर्डिंग की थी! राजनीति में कोई किसी का दोस्त नहीं होता आर्यन। तुम मेरे लिए सिर्फ एक प्रोजेक्ट थे। एक ऐसा चेहरा जिसे आगे करके मैं पीछे से पूरी सरकार चला सकता था। लेकिन तुम बहुत भावुक और कमज़ोर हो। अगर मेरे पास वो टेप नहीं होता, तो तुम कभी के पुलिस के सामने टूट चुके होते!"

"और वो 50 करोड़?" आर्यन की सांसें तेज़ चल रही थीं।

"हां, मैंने लिए! विक्रम बजाज के राइवल्स ने मुझे वो पैसे दिए थे उसे रास्ते से हटाने के लिए। तुम तो सिर्फ एक मोहरे थे। वो एक्सीडेंट नहीं था आर्यन, वो एक प्री-प्लांड मर्डर था जिसमें मैंने तुम्हें फंसाया, ताकि तुम ज़िंदगी भर मेरे गुलाम बन कर रहो!" गोविंद ने अपनी टाई ठीक करते हुए बेहद बेशर्मी से कहा।

आर्यन को लगा जैसे किसी ने उसके सीने में खंजर घोंपकर उसे घुमा दिया हो। उसकी पूरी ज़िंदगी, उसका पूरा करियर एक झूठ पर खड़ा था।

"गाड़ी रोको," आर्यन ने ठंडी आवाज़ में ड्राइवर से कहा।

गाड़ी हाईवे के किनारे एक सुनसान जगह पर रुक गई।

"उतर जाओ मेरी गाड़ी से गोविंद। आज से हमारा और तुम्हारा रास्ता अलग है," आर्यन ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

गोविंद ज़ोर से हंसा। "तुम मुझे निकाल रहे हो? आर्यन, तुम खत्म हो चुके हो। आज रात तक पुलिस तुम्हें अरेस्ट कर लेगी। पार्टी हाईकमान आधे घंटे में तुम्हें सस्पेंड कर देगा। तुम ज़ीरो हो गए हो।"

"मैं जेल जाऊंगा या नहीं, ये तो वक्त बताएगा। लेकिन मैं तुम्हें सीएम की कुर्सी तक कभी पहुंचने नहीं दूंगा। गेट आउट!" आर्यन ने गोविंद को धक्का देकर गाड़ी से बाहर फेंक दिया और दरवाज़ा बंद कर लिया।

लैंड क्रूज़र धूल उड़ाती हुई वहां से निकल गई। गोविंद हाईवे पर अकेला खड़ा था। उसने अपनी जेब से फोन निकाला और गजराज को कॉल किया। "गजराज, आर्यन बागी हो गया है। उसे खत्म करना होगा। इसे एक सुसाइड का रूप देना है। समझ गए?"

द नेशनल ट्रुथ का न्यूज़ रूम जश्न में डूबा था। चैनल की टीआरपी सारे रिकॉर्ड तोड़ चुकी थी। पाटील सर ने खुद अपने केबिन से बाहर आकर तनिशा के लिए तालियां बजाई थीं।

"ब्रिलियंट जॉब तनिशा! तुमने सरकार गिरा दी!" पाटील सर ने तनिशा के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। "अब हमें आर्यन प्रताप के अरेस्ट होने का इंतज़ार है।"

लेकिन तनिशा के चेहरे पर कोई खुशी नहीं थी। वो अपनी डेस्क पर एक खाली कॉफी मग को घूर रही थी। उसका पत्रकारिता का छठा सेंस उससे कह रहा था कि कुछ बहुत गलत है। माया चौधरी ने उसे ये सुबूत क्यों दिए? विपक्ष की नेता एक जर्नलिस्ट को अपना हथियार क्यों बना रही थी? और सबसे बड़ी बात, अगर आर्यन और गोविंद दोनों का पर्दाफाश हो गया है, तो इस खेल का असली विजेता कौन है?

तभी तनिशा का फोन वाइब्रेट हुआ। स्क्रीन पर एक अननोन नंबर था। उसने फोन उठाया।

"हेलो मैडम जी! मैं बंटी बोल रहा हूं," दूसरी तरफ से आवाज़ आई। बैकग्राउंड में ट्रेन के चलने की छुक-छुक आवाज़ और बहुत शोर-शराबा था।

"बंटी? तुम कहां हो? मैंने तुमसे कहा था कि अंडरग्राउंड रहना। तुम्हारा फोन ट्रैक हो सकता है!" तनिशा ने चेतावनी दी।

"अरे मैडम, हम तो ज़मीन के बहुत ऊपर, ट्रेन में बैठे हैं। दिल्ली जा रहे हैं," बंटी ने पूरे जोश में कहा। "टीवी पर आपका हंगामा देख लिया हमने। बहुत गदर काटा आपने। लेकिन असली पिक्चर तो अभी बाकी है मैडम।"

"क्या मतलब है तुम्हारा? क्या है दिल्ली में?" तनिशा चौकन्नी हो गई।

"उस विक्रम बजाज ने मरने से पहले अपनी जान बचाने के लिए एक बहुत बड़ा सुबूत दिल्ली के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के क्लॉक रूम में छुपाया था। लॉकर नंबर 42। उस लॉकर की असली रसीद मेरे पास है मैडम जी। हम सीधा खज़ाना खोलने जा रहे हैं। जब वो सुबूत मिलेगा, तो आर्यन क्या, पूरी की पूरी सरकार नंगी हो जाएगी!" बंटी ने अपनी देहाती हंसी हंसते हुए कहा।

"बंटी, बेवकूफी मत करो! वो लोग तुम्हें मार डालेंगे। तुम वो रसीद मुझे दे दो, मैं अपनी टीम दिल्ली भेजूंगी," तनिशा ने उसे रोकने की कोशिश की।

"ना मैडम। इस बार एक्सक्लूसिव ब्रेकिंग न्यूज़ बंटी रिपोर्टर खुद देगा। हम लॉकर खोलकर आपको सीधा वीडियो कॉल करेंगे," बंटी ने फोन काट दिया और नंबर स्विच ऑफ कर लिया।

तनिशा ने अपना फोन डेस्क पर पटक दिया। "शिट!" वो जानती थी कि बंटी और गोलू किसी बहुत बड़े और खतरनाक जाल में फंसने जा रहे हैं। अगर विक्रम बजाज ने कोई सुबूत छोड़ा था, तो वो कोई कागज़ का टुकड़ा नहीं, बल्कि कोई ऐसा न्यूक्लियर बम होगा जो इस पूरे सिस्टम को उड़ा देगा।

"कुणाल!" तनिशा ने अपने आईटी एक्सपर्ट को आवाज़ दी। "मुझे अभी के अभी दिल्ली की फ्लाइट चाहिए। और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के लॉकर रूम का कोई लोकल कांटेक्ट निकालो। मुझे हर हाल में लॉकर 42 तक बंटी से पहले पहुंचना है।"

दिल्ली जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस पूरी रफ्तार से दौड़ रही थी। जनरल डिब्बे में खचाखच भीड़ थी। बदबू, पसीना और शोर के बीच बंटी और गोलू एक ऊपरी बर्थ पर सिकुड़ कर बैठे थे। दोनों ने अपनी शक्लें छुपाने के लिए सस्ते चश्मे और मफलर लपेट रखे थे।

"भैया, मुझे बहुत डर लग रहा है। कल रात से मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई हमें देख रहा है," गोलू ने अपनी उंगलियां चटकाते हुए कहा।

"अबे डरपोक, यहां इतनी भीड़ में हमें कौन पहचानेगा? तू बस उस लॉकर के अंदर क्या होगा, ये सोच। कोई हीरे-जवाहरात भी हो सकते हैं, या कोई ऐसा वीडियो जिससे अपन सीधे करोड़पति बन जाएंगे," बंटी अपनी ही ख्याली पुलाव पकाने में मस्त था।

लेकिन गोलू का डर बेबुनियाद नहीं था।

उसी ट्रेन के फर्स्ट क्लास एसी कोच में गजराज बैठा था। उसके हाथ में एक डार्क-वेब ट्रैकिंग डिवाइस था, जो बंटी के उसी सस्ते स्मार्टफोन के आईएमईआई (IMEI) नंबर को ट्रैक कर रहा था जिससे उसने तनिशा को कॉल किया था। बंटी ने फोन स्विच ऑफ कर दिया था, लेकिन गजराज को उसकी लोकेशन मिल चुकी थी। ट्रेन दिल्ली पहुंचने ही वाली थी।

गजराज ने अपने कपड़ों के नीचे छिपी 9mm की साइलेंसर लगी पिस्तौल को चेक किया। गोविंद का ऑर्डर साफ था— उन दोनों लड़कों को मार डालो और उनके पास जो भी सुबूत है, उसे हासिल कर लो।

द इंपीरियल होटल के सुइट में माया चौधरी अपनी वाइन इंजॉय कर रही थी। टीवी पर अब आर्यन प्रताप के सस्पेंशन की खबरें चल रही थीं। माया ने अपना फोन उठाया और एक नंबर डायल किया।

"हेलो," दूसरी तरफ से एक भारी आवाज़ आई।

"काम हो गया है। आर्यन प्रताप राजनीतिक रूप से खत्म हो चुका है। अब हमारा रास्ता साफ है," माया ने मुस्कुराते हुए कहा।

"तुमने बहुत जल्दबाज़ी कर दी माया," दूसरी तरफ से आवाज़ थोड़ी गंभीर थी। "आर्यन एक घायल शेर है। और एक घायल शेर मौत से नहीं डरता, वो सामने वाले को फाड़ कर ही दम लेता है। क्या तुमने विक्रम बजाज की वो आखिरी फाइल सिक्योर कर ली है?"

माया की मुस्कान थोड़ी फीकी पड़ गई। "कौन सी फाइल? जो मेरे पास था, वो मैंने मीडिया को दे दिया है।"

"बेवकूफ औरत! विक्रम बजाज 14 अगस्त को आर्यन से मिलने से पहले दिल्ली गया था। उसने एक बैकअप तैयार किया था। अगर वो बैकअप आर्यन या मीडिया के हाथ लग गया, तो सिर्फ आर्यन नहीं, तुम और मैं भी जेल के अंदर होंगे। उस फाइल को ढूंढो!" आवाज़ में अब गुस्सा था और फोन कट गया।

माया के हाथ से वाइन का ग्लास छलक गया। उसे लगा था कि वो इस खेल की मास्टरमाइंड है, लेकिन उसे अब समझ आ रहा था कि शतरंज की इस बिसात पर वो खुद भी किसी और का मोहरा थी।

रात के दस बज चुके थे। दिल्ली का नई दिल्ली रेलवे स्टेशन हमेशा की तरह गुलज़ार था। हज़ारों यात्रियों की भीड़ के बीच बंटी और गोलू ट्रेन से उतरे। दोनों के चेहरे पर थकान थी, लेकिन आंखों में लालच चमक रहा था।

"चल गोलू, सीधा प्लेटफार्म नंबर 1 की तरफ। क्लॉक रूम वहीं है," बंटी ने अपनी जेब में रखी वो मुड़ी-तुड़ी रसीद को कसकर पकड़ते हुए कहा।

दोनों भीड़ को चीरते हुए क्लॉक रूम की तरफ बढ़ने लगे। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि उनके पीछे मौत एक साये की तरह चल रही है।

गजराज काले कपड़े और एक कैप पहने उनके ठीक दस कदम पीछे था। उसने अपना हाथ अपनी जैकेट के अंदर डाला और पिस्तौल की ग्रिप को पकड़ लिया। स्टेशन की भीड़ में किसी को साइलेंसर की आवाज़ सुनाई नहीं देती।

उसी वक्त, स्टेशन के वीआईपी गेट से तनिशा बाहर निकली। उसने अभी-अभी अपनी फ्लाइट से लैंड करके सीधे स्टेशन का रुख किया था। उसकी नज़रें पागलों की तरह बंटी और गोलू को ढूंढ रही थीं।

बंटी और गोलू क्लॉक रूम के काउंटर पर पहुंचे। वहां बैठे क्लर्क को बंटी ने वो पुरानी, आधी जली हुई रसीद थमा दी।

"लॉकर नंबर 42। जल्दी खोलिए अंकल जी," बंटी ने सांस रोकते हुए कहा।

क्लर्क ने रसीद देखी, उस पर लगी मुहर को चेक किया और फिर एक चाबियों का गुच्छा लेकर अंदर की तरफ गया। वो एक पुरानी, जंग लगी अलमारी के पास पहुंचा। उसने 42 नंबर के लॉकर में चाबी घुमाई और उसे खोला।

लॉकर के अंदर सिर्फ एक चीज़ रखी थी। एक काले रंग की, हैवी-ड्यूटी हार्ड ड्राइव।

क्लर्क ने वो हार्ड ड्राइव बंटी के हाथ में रख दी।

"मिल गया गोलू... खज़ाना मिल गया!" बंटी की आंखें खुशी से चमक उठीं।

लेकिन इससे पहले कि वो पलट पाता, गजराज उनके बिल्कुल पीछे आकर खड़ा हो गया। उसने अपनी जैकेट के अंदर से पिस्तौल की बैरल निकाली और सीधे बंटी की पीठ पर टिका दी।

"खज़ाना सरकार की अमानत है लड़के। इसे मुझे दे दे, वरना तेरी लाश भी किसी लॉकर में ही सड़ेगी," गजराज की ठंडी और खौफनाक आवाज़ बंटी के कानों में पड़ी।

बंटी के शरीर का सारा खून जम गया। गोलू की घिग्घी बंध गई थी। मौत बिल्कुल उनके सामने खड़ी थी, और इस बार भागने का कोई रास्ता नहीं था।

सत्ता के इस खूनी खेल में अब खून बहने का वक्त आ गया था।

## अध्याय 9:

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 1 पर हज़ारों लोगों की भीड़ थी, लेकिन बंटी को उस वक्त सिर्फ अपनी पीठ पर चुभती हुई पिस्तौल की ठंडी बैरल महसूस हो रही थी। उसकी सांसें हलक में अटक गई थीं। क्लर्क द्वारा दी गई काले रंग की हार्ड ड्राइव उसके कांपते हाथों में थी।

"चुपचाप मुड़ो और मेरे साथ चलो," गजराज ने बंटी के कान के पास फुसफुसाते हुए कहा। उसकी आवाज़ में मौत की गूंज थी।

गोलू, जो बंटी के ठीक बगल में खड़ा था, मारे डर के पसीना-पसीना हो रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वो चिल्लाए या भाग जाए।

तभी, भीड़ को चीरती हुई तनिशा वहां पहुंची। उसकी तेज़ नज़रों ने तुरंत बंटी और उसके पीछे खड़े उस काले कोट वाले लंबे-चौड़े आदमी को भांप लिया। तनिशा ने गजराज का चेहरा पहले भी देखा था, वो जानती थी कि ये आदमी गोविंद का सबसे खूंखार कुत्ता है। उसने गजराज के हाथ का एंगल देखा जो उसकी जैकेट के अंदर था, और तनिशा को एक सेकंड नहीं लगा यह समझने में कि बंटी की पीठ पर बंदूक तनी है।

तनिशा के पास सोचने का वक्त नहीं था। अगर वो पुलिस चिल्लाती, तो शायद गजराज गोली चलाकर भीड़ में गायब हो जाता। उसे एक भयंकर डायवर्जन चाहिए था।

तनिशा ने पास ही खड़े एक कुली की भारी-भरकम लगेज ट्रॉली को पूरी ताकत से धक्का दिया। लोहे की वो भारी ट्रॉली सीधे गजराज के पैरों और पीठ से जा टकराई।

गजराज का बैलेंस बिगड़ा और उसकी उंगली ट्रिगर पर दब गई। 'पुच!' साइलेंसर लगी पिस्तौल से निकली गोली सीधा क्लॉक रूम के लकड़ी के काउंटर को चीरती हुई अंदर घुस गई। आवाज़ किसी ने नहीं सुनी, लेकिन क्लर्क के चेहरे के पास से उड़ते हुए लकड़ी के टुकड़ों ने उसे खौफ से भर दिया और वो ज़ोर से चीखा।

"भागो बंटी!" तनिशा ने पूरी ताकत से चिल्लाते हुए बंटी का हाथ पकड़ा।

बंटी और गोलू की जान में जान आई। बंटी ने हार्ड ड्राइव को सीने से लगाया और तनिशा के पीछे-पीछे स्टेशन की भीड़ में अंधाधुंध दौड़ पड़ा।

गजराज तुरंत संभला। उसने ट्रॉली को लात मारकर किनारे किया और अपना कोट ठीक करते हुए उनके पीछे दौड़ा। स्टेशन पर अचानक अफरातफरी मच गई थी। लोग एक-दूसरे से टकरा रहे थे। तनिशा, बंटी और गोलू एस्केलेटर की तरफ भागे, उसे पार किया और स्टेशन के बाहर प्री-पेड टैक्सी स्टैंड की तरफ निकल आए।

"उस काली-पीली टैक्सी में बैठो, जल्दी!" तनिशा ने एक स्टार्ट खड़ी टैक्सी का दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

तीनों अंदर कूदे। "पहाड़गंज चलो, भैया! डबल पैसा दूंगी, बस गाड़ी भगाओ!" तनिशा ने ड्राइवर से कहा। टैक्सी ने गियर बदला और धूल उड़ाते हुए दिल्ली के ट्रैफिक में गायब हो गई।

गजराज जब तक गेट से बाहर आया, तब तक शिकार उसके हाथ से निकल चुका था। उसने गुस्से में पास पड़े एक डस्टबिन को ज़ोरदार लात मारी। उसने अपनी जेब से फोन निकाला।

"सर, लड़के हाथ से निकल गए," गजराज ने दांत पीसते हुए गोविंद को रिपोर्ट दी। "तनिशा वहां पहुंच गई थी। सुबूत अब उनके पास है।"

फोन के दूसरी तरफ गोविंद का पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया। "बेवकूफ! तुम एक लड़की और दो छपरी रिपोर्टर्स को नहीं पकड़ पाए? अगर वो हार्ड ड्राइव ऑन एयर हो गई तो मैं तुम्हें ज़िंदा गाड़ दूंगा!"

"मैं उन्हें ढूंढ निकालूंगा सर," गजराज ने कहा। "लेकिन आपने जो आर्यन का काम बताया था..."

"आर्यन को अभी छोड़ो!" गोविंद बीच में ही चीखा। "आर्यन अब एक बिना दांत का सांप है। पुलिस उसके पीछे लगी है, वो कहीं नहीं जा सकता। तुम्हारा पहला टारगेट तनिशा और वो हार्ड ड्राइव है। दिल्ली में हमारे जितने भी आदमी हैं, सबको काम पर लगाओ। मुझे वो हार्ड ड्राइव किसी भी कीमत पर चाहिए!" फोन कट गया।

गजराज ने एक गहरी सांस ली। अब यह महज़ एक असाइनमेंट नहीं, उसकी ईगो की लड़ाई बन चुकी थी।

उधर राजधानी में, आर्यन प्रताप की लैंड क्रूज़र हाईवे से उतरकर शहर की अंदरूनी सड़कों पर दौड़ रही थी। रामलीला मैदान में हुए उस भयानक हंगामे के बाद, आर्यन का दिमाग पूरी तरह सुन्न हो चुका था। उसकी राजनीतिक

ज़मीन खिसक चुकी थी, और गोविंद की उस गद्दारी ने उसे अंदर से तोड़ दिया था।

तभी आर्यन के फोन की स्क्रीन चमकी। उसके भरोसेमंद पीए, राकेश का कॉल था।

"हैलो राकेश," आर्यन की आवाज़ भारी थी।

"सर! आप कहां हैं? आप बंगले पर बिल्कुल मत आइएगा!" राकेश की आवाज़ में भयंकर घबराहट थी। "गोविंद सर ने पुलिस कमिश्नर को खरीद लिया है। आपके घर के बाहर पुलिस की गाड़ियां खड़ी हैं। आपके अरेस्ट वारंट पर साइन हो चुके हैं। और... और सिर्फ पुलिस ही नहीं सर, कुछ सादे कपड़ों में हथियारबंद लोग भी आपके घर के आस-पास घूम रहे हैं। मुझे लगता है वो आपका एनकाउंटर या सुसाइड स्टेज करने वाले हैं।"

आर्यन के चेहरे की मांसपेशियां तन गईं। गोविंद उसे अरेस्ट नहीं करवाना चाहता था, वो उसे हमेशा के लिए खामोश करना चाहता था ताकि 14 अगस्त का पूरा इल्ज़ाम आर्यन के सिर पर मढ़कर वो खुद साफ बच निकले।

"राकेश, तुमने ग्लोबलिंक ओवरसीज़ का जो पता लगाया था, क्या उसका कोई सुराग मिला?" आर्यन ने खुद को संभालते हुए पूछा।

"जी सर। वो शेल कंपनी गोविंद सर के साले के नाम पर रजिस्टर्ड है। और सर... मैंने उस प्राइवेट हैकर से गोविंद सर के फोन की पुरानी लोकेशन हिस्ट्री भी निकलवाई है। 14 अगस्त की रात, जब विक्रम बजाज का एक्सीडेंट हुआ था, उससे ठीक दो घंटे पहले गोविंद सर की लोकेशन माया चौधरी के उसी इंपीरियल होटल वाले सुइट के पास थी!"

आर्यन की सांसें रुक गईं। *गोविंद और माया?*

अचानक सारे तार जुड़ने लगे। विपक्ष की रणनीतिकार माया चौधरी और आर्यन का सबसे करीबी दोस्त गोविंद सिंह... दोनों शुरू से ही एक टीम थे! इस पूरे स्कैंडल, उस ट्विटर अल्टीमेटम और उस ऑडियो टेप के पीछे कोई एक नहीं, बल्कि ये दोनों मिलकर खेल रहे थे। आर्यन तो सिर्फ एक मोहरा था, जिसे बलि का बकरा बनाया जा रहा था।

"राकेश, मेरी बात ध्यान से सुनो," आर्यन ने अपने आंसुओं और डर को पीछे धकेलते हुए एक खूंखार इरादे के साथ कहा। "मेरा फोन अब ट्रेस हो रहा होगा। मैं इसे फेंक रहा हूं। तुम अंडरग्राउंड हो जाओ। मैं खुद इस खेल को खत्म करूंगा।"

आर्यन ने फोन काटा, शीशा नीचे किया और अपना महंगा स्मार्टफोन चलती गाड़ी से बाहर हाईवे की झाड़ियों में फेंक दिया।

"गाड़ी रोको," आर्यन ने ड्राइवर से कहा। गाड़ी एक सुनसान चौराहे पर रुक गई। आर्यन ने अपनी एप्पल वॉच भी उतार कर सीट पर रख दी। वो बिना किसी सुरक्षा, बिना किसी फोन और बिना सत्ता के उस गाड़ी से उतरा। उसने पास ही खड़े एक ऑटो वाले को हाथ दिया। अब वो राज्य का होने वाला मुख्यमंत्री नहीं था, वो एक वांटेड मुजरिम और अपनी जान बचाने के लिए भाग रहा एक खूंखार बागी था।

दिल्ली के पहाड़गंज इलाके की संकरी और भीड़भाड़ वाली गलियों में, एक बेहद सस्ते और सीलन भरे 'गेस्ट हाउस' के कमरे में तनिशा, बंटी और गोलू बैठे थे। कमरे का दरवाज़ा अंदर से कुंडी लगाकर बंद कर दिया गया था।

बंटी और गोलू अभी भी हांफ रहे थे। मौत को इतने करीब से देखकर दोनों की हालत खराब थी।

"मैडम जी, वो यमराज का सगा भाई था! अगर आप ना आतीं, तो आज हमारा टिकट कट गया था," बंटी ने ज़मीन पर बैठते हुए कहा।

"शुक्रिया अदा करने का वक्त नहीं है बंटी," तनिशा ने अपना लैपटॉप बैग से निकालते हुए कहा। "जिस सुबूत के लिए गोविंद और उसके गुंडे पूरे देश में खून बहाने को तैयार हैं, हमें देखना होगा कि आखिर उसमें ऐसा क्या है।"

तनिशा ने लैपटॉप स्टार्ट किया और उस भारी-भरकम हार्ड ड्राइव को यूएसबी केबल से कनेक्ट कर दिया।

हार्ड ड्राइव का आइकन स्क्रीन पर फ्लैश हुआ। तनिशा की उंगलियां कीबोर्ड पर कांप रही थीं। उसने आइकन पर डबल क्लिक किया।

कोई पासवर्ड नहीं था। कोई एन्क्रिप्शन नहीं। हार्ड ड्राइव सीधे खुल गई।

अंदर सिर्फ एक फोल्डर था, जिसका नाम था: **"इंश्योरेंस"**

तनिशा ने फोल्डर खोला। उसमें एक हाई-रिज़ॉल्यूशन वीडियो फाइल थी और कुछ पीडीएफ डॉक्यूमेंट्स थे। तनिशा ने बिना समय गंवाए वीडियो फाइल को प्ले कर दिया।

स्क्रीन पर प्लेबैक शुरू हुआ। वीडियो एक थोड़े अंधेरे कमरे में शूट किया गया था। कैमरे के सामने एक कुर्सी पर एक आदमी बैठा था। उसका चेहरा पीला

पड़ा हुआ था, माथे पर पसीने की बूंदें थीं और आंखों में एक साफ दिखने वाला खौफ था।

बंटी की आंखें फटी की फटी रह गईं। "अरे मैडम! ये तो वही है... विक्रम बजाज!"

तनिशा ने बंटी को चुप रहने का इशारा किया और वॉल्यूम बढ़ा दिया।

वीडियो में विक्रम बजाज ने बोलना शुरू किया: *"मेरा नाम विक्रम बजाज है। आज 14 अगस्त 2019 है। अगर आप ये वीडियो देख रहे हैं, तो इसका मतलब है कि मैं मारा जा चुका हूं। और मुझे मारने वाला कोई और नहीं, आर्यन प्रताप और उसका साथी गोविंद सिंह हैं।"*

तनिशा की धड़कनें तेज़ हो गईं। वो आदमी अपनी मौत से कुछ घंटे पहले ही अपनी हत्या की भविष्यवाणी कर रहा था।

*"लोग समझते हैं कि मैं एक बहुत बड़ा माइनिंग माफिया हूं,"* बजाज वीडियो में हांफते हुए बोल रहा था। *"लेकिन सच तो ये है कि मैं एक बहुत बड़े पॉलिटिकल और क्रिमिनल सिंडिकेट का सिर्फ एक फ्रंट-मैन था। मेरी कंपनियों के ज़रिए हज़ारों करोड़ का काला पैसा वाइट किया जाता है। आर्यन प्रताप और गोविंद सिंह मुझसे ये पैसा इलेक्शन फंडिंग के लिए मांग रहे थे। लेकिन मैंने मना कर दिया। मैंने धमकी दी कि मैं उनका पूरा हनी-ट्रैप और ब्लैकमेल का नेटवर्क एक्सपोज़ कर दूंगा।"*

वीडियो में विक्रम बजाज ने कैमरे के और करीब आकर देखा, जैसे वो सीधे तनिशा की आंखों में देख रहा हो।

*"लेकिन आर्यन और गोविंद भी इस गेम के असली बॉस नहीं हैं। उनके ऊपर भी एक बहुत बड़ी पावर है। एक ऐसा इंसान जो परदे के पीछे से पूरे राज्य की राजनीति को कंट्रोल कर रहा है। वो 50 करोड़ रुपये जो मैंने ग्लोबलिंक ओवरसीज़ में ट्रांसफर किए थे, वो मेरी जान की भीख थी। लेकिन मुझे पता है वो लोग मुझे ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे। असली मास्टरमाइंड, जो इस पूरे सिंडिकेट को चला रहा है, वो कोई और नहीं, बल्कि..."*

वीडियो में अचानक कोई दरवाज़ा ज़ोर से पीटने की आवाज़ आई। विक्रम बजाज बुरी तरह घबरा गया। वो कैमरे की तरफ मुड़ा।

*"वो आ गए हैं! मुझे जाना होगा। मैंने सारे सुबूत, बैंक अकाउंट्स की डिटेल और उस मास्टरमाइंड के असली चेहरे की तस्वीरें इस हार्ड ड्राइव की पीडीएफ फाइल्स में डाल दी हैं। भगवान के लिए, इस सच को बाहर ले आइएगा..."*

वीडियो झटके से बंद हो गया।

कमरे में एक भयानक सन्नाटा छा गया। तनिशा के रोंगटे खड़े हो चुके थे। आर्यन प्रताप और गोविंद सिंह सिर्फ मोहरे थे? और वो 50 करोड़ रुपये विक्रम बजाज ने किसी तीसरे इंसान को दिए थे?

तनिशा ने तुरंत हार्ड ड्राइव के उस फोल्डर में मौजूद पीडीएफ फाइल्स को खोला। जैसे ही उसने पहली पीडीएफ खोली, उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

उसमें उन हज़ारों करोड़ के ट्रांजेक्शंस की लिस्ट थी, और हर पेज के आखिर में एक ही नाम और एक ही डिजिटल सिग्नेचर था।

यह नाम राज्य के उस शख्स का था जिसे पूरा देश ईमानदारी और उसूलों का देवता मानता था। वो शख्स, जो आर्यन प्रताप की पार्टी का सबसे बड़ा स्तंभ था।

**पार्टी प्रेसिडेंट - शांतनु मुखर्जी।**

तनिशा का दिमाग चकरा गया। शांतनु मुखर्जी? वो बूढ़ा, सफेद बालों वाला नेता जो हमेशा गांधीवादी आदर्शों की बात करता था? वो मास्टरमाइंड था?

तभी तनिशा के लैपटॉप पर एक पॉप-अप मैसेज फ्लैश हुआ। उसके ईमेल पर एक नया मैसेज आया था। भेजने वाले का नाम नहीं था, लेकिन सब्जेक्ट लाइन में लिखा था: *लुक आउटसाइड द विंडो (खिड़की के बाहर देखो)।*

तनिशा ने झटके से अपनी कुर्सी से उठकर गेस्ट हाउस की खिड़की का पर्दा थोड़ा सा हटाया और नीचे सड़क की तरफ देखा।

नीचे सड़क के किनारे, तीन काली एसयूवी गाड़ियां चुपचाप आकर रुक चुकी थीं। और उन गाड़ियों में से हथियार लेकर जो लोग बाहर निकल रहे थे, उनके बीच गजराज खड़ा था। उसकी नज़रें सीधे तनिशा की खिड़की पर गड़ी थीं।

दिल्ली पुलिस, सुरक्षा, भीड़—सब बेमानी था। मौत उनके दरवाज़े पर दस्तक दे चुकी थी।

## अध्याय 10:

पहाड़गंज के उस सीलन भरे गेस्ट हाउस के कमरे में सन्नाटा इतना गहरा था कि तनिशा को अपने दिल की धड़कनें किसी हथौड़े की तरह सुनाई दे रही थीं। खिड़की के बाहर तीन काली एसयूवी गाड़ियां खड़ी थीं और उनमें से निकले हथियारों से लैस गुंडे गेस्ट हाउस को घेर चुके थे।

"मैडम... अब क्या होगा?" गोलू की आवाज़ कांप रही थी। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे थे।

"चुप रहो और मेरी बात ध्यान से सुनो," तनिशा ने फुसफुसाते हुए कहा। उसने तेज़ी से अपनी हार्ड ड्राइव को लैपटॉप से निकाला, उसे एक प्लास्टिक ज़िप पाउच में डाला और अपनी जींस की अंदरूनी जेब में सुरक्षित कर लिया।

तभी सीढ़ियों पर भारी जूतों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। वो लोग ऊपर आ रहे थे।

"दरवाज़ा नहीं टिकेगा। हमें यहां से निकलना होगा," तनिशा ने कमरे के अटैच्ड बाथरूम की तरफ देखा। वहां एक छोटी सी खिड़की थी, जिसका शीशा टूटा हुआ था और बाहर एक जंग लगी लोहे की जाली थी।

"बंटी, उस जाली को तोड़ो! जल्दी!" तनिशा ने आदेश दिया।

बंटी ने बिना सोचे समझे बाथरूम में रखा भारी डस्टबिन उठाया और पूरी ताकत से लोहे की जाली पर दे मारा। जाली पुरानी थी, वो आधी उखड़ गई। बंटी ने उसे अपने हाथों से खींचकर बाहर फेंक दिया।

बाहर कमरे के दरवाज़े पर ज़ोरदार लातें पड़ने लगी थीं। लकड़ी का दरवाज़ा चरमरा रहा था।

"पहले तुम निकलो गोलू, फिर बंटी," तनिशा ने कहा।

गोलू किसी तरह उस छोटी सी खिड़की से बाहर छज्जे पर कूद गया। बंटी उसके पीछे गया। दरवाज़े का लॉक टूटने ही वाला था। तनिशा ने खिड़की के फ्रेम को पकड़ा और खुद को बाहर धकेल दिया। जैसे ही उसके पैर बाहर की टीन की छत पर पड़े, पीछे कमरे का दरवाज़ा एक भयानक आवाज़ के साथ टूट गया।

आर्यन प्रताप।

राजधानी के दूसरे छोर पर, 'द इंपीरियल' होटल के टॉप फ्लोर का प्रेसिडेंशियल सुइट वासना और साज़िश के एक मादक कॉकटेल में डूब रहा था।

माया चौधरी जानती थी कि विक्रम बजाज की असली फाइल गायब है और फोन पर मिली वो धमकी साफ बता रही थी कि शांतनु मुखर्जी उसे ज़िंदा नहीं छोड़ेगा। माया को एक ऐसे कवच की ज़रूरत थी जो उसे पुलिस और शांतनु के गुंडों से बचा सके।

सुइट की बत्तियां मद्धिम थीं। हवा में शैनेल परफ्यूम और महंगी स्कॉच की खुशबू थी। काउच पर डीसीपी विराजराजपूत बैठा था। 35 साल का विराजएक बेहद कड़क, मस्कुलर और एंबिशियस पुलिस ऑफिसर था, जिसे आर्यन प्रताप के एनकाउंटर का सीक्रेट टास्क सौंपा गया था।

माया वाशरूम से बाहर आई। उसने एक बेहद पारदर्शी, क्रिमसन रेड रंग का सिल्क रोब पहना हुआ था, जिसके अंदर उसके बदन के सुडौल कर्व्स साफ झलक रहे थे। उसके गीले बाल उसके कंधों पर बिखरे थे।

विराजकी नज़रें माया के जिस्म से हट नहीं रही थीं। उसने अपना स्कॉच का ग्लास टेबल पर रखा।

"तुमने मुझे इतनी रात को यहां क्यों बुलाया माया? पूरा शहर आर्यन को ढूंढ रहा है और मुझे इस वक्त लीड करना चाहिए," विराजने अपनी भारी आवाज़ में कहा, लेकिन उसकी नज़रें माया के खुले हुए कॉलर पर टिकी थीं।

माया मुस्कुराती हुई धीमे कदमों से विराजके करीब आई। वो सीधा विराजकी गोद में आ बैठी। दोनों के बीच कोई फासला नहीं बचा था।

"आर्यन अब एक मुर्दा सांप है, अर्जुन," माया ने अपनी लंबी उंगलियों से विराजकी शर्ट के बटन खोलते हुए फुसफुसाया। "असली सत्ता किसी और के हाथ में जा रही है। शांतनु मुखर्जी। और शांतनु हम दोनों को अपने रास्ते से हटाना चाहता है।"

विराजके माथे पर सिलवटें पड़ गईं, लेकिन जब माया के गर्म होंठ उसकी गर्दन को चूमने लगे, तो उसका सारा फोकस हिल गया। माया के रोब की बेल्ट खुल चुकी थी और सिल्क का वो कपड़ा उसके कंधों से नीचे खिसक गया।

"मुझे तुम्हारी पुलिस फोर्स चाहिए अर्जुन। मेरी हिफाज़त के लिए," माया ने विराजकी आंखों में देखते हुए कहा। उसका आधा नग्न बदन विराजके सीने से रगड़ खा रहा था, जिसने विराजके अंदर की आग को पूरी तरह भड़का दिया था।

"मैं तुम्हारी हिफाज़त क्यों करूं?" विराजने माया की कमर को अपनी दोनों बाहों में कसकर जकड़ते हुए पूछा। उसकी सांसें भारी हो चुकी थीं।

"क्योंकि अगर तुमने मुझे बचाया, तो मैं तुम्हें वो दूंगी जो कोई मुख्यमंत्री नहीं दे सकता," माया ने अपना चेहरा विराजके बिल्कुल करीब लाया। "शांतनु मुखर्जी के वो राज़, जो तुम्हें सीधा स्टेट का पुलिस कमिश्नर बना देंगे। और तब तक..."

माया ने विराजके होठों पर एक गहरा, मादक और जंगली चुंबन जड़ दिया। विराजका सारा कंट्रोल खत्म हो चुका था। उसने माया को बाहों में उठाया और सीधा सुइट के किंग-साइज़ बेड पर ले गया।

कमरे का तापमान अचानक बढ़ गया था। चादरों की सरसराहट, भारी सांसों और वासना से भरी सिसकियों के बीच, माया और विराजएक-दूसरे की जिस्मानी भूख मिटा रहे थे। माया का हर स्पर्श, हर चुंबन विराजको उसका गुलाम बना रहा था।

माया विराजके नीचे हांफ रही थी, लेकिन उसकी बंद आंखों के पीछे दिमाग किसी कंप्यूटर की तरह चल रहा था। वो जानती थी कि ये जिस्मानी खेल सिर्फ एक सौदा है। उसने अपने हुस्न का जाल फेंक कर राज्य के सबसे खूंखार पुलिस वाले को अपनी मुट्ठी में कर लिया था। अब चाहे शांतनु के गुंडे आएं या गजराज, डीसीपी विराजराजपूत उसके लिए किसी भी हद तक जाएगा।

रात के तीन बज रहे थे। राजधानी की एक सुनसान और अंधेरी अंडरग्राउंड पार्किंग में, द नेशनल ट्रुथ चैनल का आईटी एक्सपर्ट, कुणाल अपनी कार की तरफ बढ़ रहा था। आज रात का तमाशा खत्म होने के बाद वो घर जा रहा था।

अचानक पीछे से एक मज़बूत हाथ ने उसका मुंह दबाया और उसकी गर्दन पर एक ठंडी, लोहे की चीज़ महसूस हुई। एक पिस्तौल।

"आवाज़ निकाली तो दिमाग दीवार पर चिपका दूंगा," एक भारी और खौफनाक आवाज़ आई।

कुणाल डर के मारे कांपने लगा। उस शख्स ने कुणाल को घुमाकर कार के बोनट पर पटक दिया। सामने खड़े इंसान को देखकर कुणाल की आंखें फटी रह गईं।

वो आर्यन प्रताप था।

उसके सफेद कुर्ते पर धूल लगी थी, बाल बिखरे हुए थे, लेकिन आंखों में एक खूंखार जानवर जैसा गुस्सा था। आर्यन ने अपनी गाड़ी और फोन छोड़ने के बाद एक पुराने सेफ हाउस से वो गैर-लाइसेंसी पिस्तौल निकाली थी, जो उसने सालों पहले अपने एनजीओ के दिनों में अपने पास रखी थी।

"आर्यन सर... सर प्लीज़ मुझे मत मारिए," कुणाल गिड़गिड़ाने लगा।

"अपना एनक्रिप्टेड लैपटॉप खोलो और मुझे तनिशा से कनेक्ट करो। अभी!" आर्यन ने पिस्तौल कुणाल के माथे पर टिका दी।

कुणाल ने कांपते हाथों से अपना लैपटॉप बोनट पर रखा, डार्क वेब का सिक्योर सर्वर ऑन किया और तनिशा का नंबर डायल किया। कुछ रिंग्स के बाद कॉल कनेक्ट हो गई।

"कुणाल? मैं अभी तुम्हें ही कॉल करने वाली थी," दूसरी तरफ से तनिशा की थकी हुई आवाज़ आई।

"तनिशा... मैं आर्यन बोल रहा हूं," आर्यन की आवाज़ सुनकर लाइन पर एकदम सन्नाटा छा गया।

"आर्यन? तुम कुणाल के साथ क्या कर रहे हो?" तनिशा सतर्क हो गई।

"तुम्हें जो करना था, तुमने कर दिया तनिशा। तुमने मुझे खत्म कर दिया," आर्यन ने दांत पीसते हुए कहा। "लेकिन मुझे पता है कि वो ऑडियो टेप तुम्हें माया ने दिया था। और माया ने गोविंद के साथ मिलकर ये साज़िश रची थी। मैं उन दोनों को ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा। लेकिन पहले मुझे वो सुबूत चाहिए जो तुमने दिखाया था।"

"तुम गलत इंसान पर अपनी बंदूक तान रहे हो आर्यन," तनिशा की आवाज़ में कोई डर नहीं था। "गोविंद और माया सिर्फ मोहरे हैं। प्यादे। असली खिलाड़ी कोई और है।"

"क्या बकवास कर रही हो तुम?" आर्यन ने पिस्तौल की ग्रिप कस ली।

"मैं इस वक्त दिल्ली में हूं आर्यन। विक्रम बजाज के लॉकर से मुझे वो असली हार्ड ड्राइव मिल गई है जो वो अपनी मौत से पहले छोड़ गया था," तनिशा ने गहरी सांस लेते हुए कहा। "वो 50 करोड़ रुपये गोविंद ने अपने लिए नहीं लिए थे। वो पैसा उस इंसान के लिए था, जिसने विक्रम बजाज को मरवाया और जिसने तुम्हें आज इस हाल तक पहुंचाया है। ताकि तुम बदनाम हो जाओ और वो आसानी से सत्ता पर कब्ज़ा कर सके।"

"कौन है वो?" आर्यन का खून खौलने लगा था।

"तुम्हारा गॉडफादर, आर्यन। पार्टी प्रेसिडेंट... शांतनु मुखर्जी।"

फोन के इस पार आर्यन प्रताप बुत बनकर रह गया। शांतनु मुखर्जी? वो इंसान जिसने आर्यन को राजनीति में उंगली पकड़कर चलना सिखाया था? वो इंसान जो आर्यन के पिता के समान था?

दिमाग के सारे पज़ल अचानक अपनी जगह पर फिट होने लगे। शांतनु का उसे सीएम फेस डिक्लेयर करना, गोविंद का हमेशा शांतनु के कान में फुसफुसाना, और ऐन चुनाव के वक्त यह स्कैंडल बाहर आना। शांतनु मुखर्जी आर्यन का इस्तेमाल करके चुनाव जीतना चाहता था और फिर उसे जेल भेजकर खुद सीएम की कुर्सी पर बैठना चाहता था।

आर्यन के सीने में एक ऐसा दर्द उठा जो किसी गोली से भी ज्यादा भयानक था। उसके अपनों ने ही उसे सरेआम ज़िंदा जला दिया था।

"आर्यन, क्या तुम सुन रहे हो?" तनिशा ने पूछा।

"शांतनु के गुंडे दिल्ली में मेरे पीछे पड़े हैं," तनिशा ने आगे कहा। "मेरे पास सुबूत है, लेकिन मुझे पुलिस या मीडिया पर भरोसा नहीं है। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए आर्यन। तुम सिस्टम को जानते हो। अगर हम दोनों ज़िंदा रहना चाहते हैं, तो हमें शांतनु का गेम उसी के तरीके से खत्म करना होगा।"

आर्यन ने अपनी आंखें बंद कीं। एक आंसू उसकी आंख से छलक कर गाल पर गिरा, लेकिन अगले ही पल उसके चेहरे पर एक खौफनाक और ज़हरीली मुस्कान आ गई।

"तुम दिल्ली में कहां हो तनिशा?" आर्यन ने पूछा।

"पहाड़गंज। लेकिन मैं सुबह तक छुपकर राजधानी वापस आ रही हूं," तनिशा ने कहा।

"ठीक है। कल रात 12 बजे शहर के बाहर वाली पुरानी टेक्सटाइल मिल में मिलो। हार्ड ड्राइव साथ लाना," आर्यन ने फोन कट कर दिया और कुणाल का लैपटॉप बंद कर दिया।

आर्यन प्रताप जो कुछ घंटे पहले तक एक डरा हुआ राजनेता था, अब वो मर चुका था। अब जो इंसान उस अंडरग्राउंड पार्किंग में खड़ा था, वो एक खूंखार हत्यारा बन चुका था, जिसे सिर्फ एक ही चीज़ की प्यास थी— (इंतकाम)।

शिकार और शिकारी अब एक हो चुके थे, और शांतनु मुखर्जी के साम्राज्य का काउंटडाउन शुरू हो चुका था।

## अध्याय 11:

शहर के बाहरी इलाके में स्थित 'स्वदेशी टेक्सटाइल मिल' पिछले बीस सालों से बंद पड़ी थी। इसकी टूटी हुई छतें, जंग खाती मशीनें और दीवारों पर उगे पीपल के पेड़ इसे किसी भूतिया खंडहर का रूप देते थे। रात के ठीक बारह बज रहे थे। आसमान में काले बादल छाए थे और हल्की बूंदाबांदी शुरू हो चुकी थी।

मिल के सबसे बड़े और अंधेरे गोदाम में आर्यन प्रताप एक लोहे के खंभे से टिक कर खड़ा था। उसने अपनी पहचान छुपाने के लिए एक काले रंग की हुडी पहन रखी थी। उसके हाथ में वही गैर-लाइसेंसी पिस्तौल थी, और उसकी उंगली ट्रिगर पर टिकी थी। हर आहट पर उसकी सांसें तेज़ हो जाती थीं। आज वो राज्य का सबसे ताकतवर युवा नेता नहीं, बल्कि एक शिकार था, जिसके पीछे पूरी पुलिस फोर्स और खूंखार हत्यारे पड़े थे।

तभी बाहर एक कार के रुकने की आवाज़ आई। हेडलाइट्स की रोशनी टूटी हुई खिड़कियों से अंदर आई और फिर बुझ गई। कुछ पलों के सन्नाटे के बाद, भारी लोहे का दरवाज़ा चरमराते हुए खुला।

तनिशा अंदर दाखिल हुई। उसने एक रेनकोट पहना हुआ था और उसके हाथ में एक वाटरप्रूफ बैकपैक था। बंटी और गोलू को उसने शहर के एक सुरक्षित ठिकाने पर छोड़ दिया था, क्योंकि वो उन्हें और खतरे में नहीं डालना चाहती थी।

"मैं आ गई हूं आर्यन," तनिशा की आवाज़ खाली गोदाम में गूंजी।

आर्यन अंधेरे से बाहर निकला। हुडी के साये में उसका चेहरा और भी खूंखार लग रहा था। उसने बिना कोई अभिवादन किए सीधे कहा, "हार्ड ड्राइव कहां है?"

तनिशा ने अपने बैग से लैपटॉप और वो काले रंग की हार्ड ड्राइव निकाली और पास ही रखे एक पुराने लकड़ी के क्रेट पर रख दी। उसने लैपटॉप ऑन किया और वो वीडियो प्ले कर दिया।

आर्यन की नज़रें स्क्रीन पर जम गईं। जब उसने विक्रम बजाज को अपनी मौत से पहले वो बयान देते सुना, तो उसके हाथ कांपने लगे। लेकिन जब तनिशा ने वो पीडीएफ फाइल खोली जिसमें 50 करोड़ के ट्रांजेक्शन के नीचे

पार्टी प्रेसिडेंट शांतनु मुखर्जी का डिजिटल सिग्नेचर था, तो आर्यन के पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

वह घुटनों के बल ज़मीन पर बैठ गया। उसका शरीर झटके खा रहा था। जिस शांतनु मुखर्जी को उसने अपना पिता माना था, जिसके पैर छूकर उसने राजनीति का ककहरा सीखा था, उसी इंसान ने उसे एक मोहरे की तरह इस्तेमाल किया और मौत के मुंह में धकेल दिया।

"वो मुझे सीएम नहीं बनाना चाहता था," आर्यन की आंखों से आंसू बहने लगे, लेकिन उसकी आवाज़ में एक सर्द नफरत थी। "वो चाहता था कि मैं चुनाव जीतूं, और फिर विक्रम बजाज के कत्ल का इल्ज़ाम मुझ पर लगाकर वो मुझे जेल भेज दे। ताकि सहानुभूति की लहर में वो खुद सीएम की कुर्सी पर बैठ सके और मेरे नाम का इस्तेमाल कर सके। गोविंद... गोविंद भी उसी का कुत्ता निकला।"

तनिशा ने लैपटॉप बंद किया और आर्यन के पास बैठ गई। "सिस्टम बहुत सड़ा हुआ है आर्यन। लेकिन अब हमारे पास सुबूत है। अगर हम ये हार्ड ड्राइव कल सुबह हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस को सौंप दें, तो शांतनु और गोविंद दोनों का खेल खत्म हो जाएगा।"

"अदालतें सुबूतों पर चलती हैं तनिशा, और शांतनु सुबूत मिटाने का उस्ताद है," आर्यन अचानक खड़ा हो गया। उसकी आंखों के आंसू अब सूख चुके थे और उनकी जगह एक जानलेवा आग ने ले ली थी। "अगर हम कोर्ट गए, तो वो इसे फेक साबित कर देगा। जज उसके खरीदे हुए हैं, पुलिस कमिश्नर उसका है। हमें शांतनु को उसी की भाषा में जवाब देना होगा। हमें उसे पब्लिक के सामने नंगा करना होगा, लेकिन उससे पहले मुझे गोविंद से हिसाब बराबर करना है।"

राजधानी के द इंपीरियल होटल के प्रेसिडेंशियल सुइट में, रात का अंधेरा अब सुबह की हल्की रोशनी में बदल रहा था, लेकिन कमरे के अंदर वासना का खेल अभी भी चरम पर था।

सफेद रेशमी चादरें पूरी तरह से सिलवटों से भरी थीं। कमरे में भारी सांसों और मादक सिसकियों की आवाज़ें गूंज रही थीं। डीसीपी विराजराजपूत का मस्कुलर, पसीने से लथपथ बदन माया चौधरी के ऊपर था। माया की आंखें बंद थीं, उसके होठों से एक गहरी, संतुष्ट आह निकल रही थी और उसकी लंबी उंगलियां विराजकी मजबूत पीठ को खरोंच रही थीं।

"तुम... तुम एक नशा हो माया," विराजने हांफते हुए कहा और माया की गर्दन पर अपने होठों से एक गहरा निशान बना दिया।

माया ने अपनी आंखें खोलीं। उन आंखों में कोई प्यार नहीं था, बल्कि एक शिकारी की शातिर चमक थी। उसने विराजके बालों को मुट्ठी में पकड़ा और उसका चेहरा अपने बिल्कुल करीब खींच लिया।

"और तुम मेरे सबसे ताकतवर शेर हो, अर्जुन," माया की मखमली आवाज़ विराजके दिमाग को सुन्न कर रही थी। उसने अपना एक पैर विराजकी कमर के चारों ओर लपेट लिया, जिससे विराजके अंदर की उत्तेजना और भी भड़क उठी। माया जानती थी कि जिस्मानी नशा सबसे बड़ा हथियार होता है। जब एक ताकतवर मर्द अपनी हवस में अंधा हो जाता है, तो वो किसी भी साम्राज्य को आग लगा सकता है।

माया ने विराजके सीने पर अपनी उंगलियां फेरते हुए फुसफुसाया, "आर्यन प्रताप तो अब खत्म हो चुका है डार्लिंग। लेकिन गोविंद सिंह अभी भी ज़िंदा है। और वो हम दोनों के लिए खतरा है।"

"गोविंद?" विराजने माया के नंगे कंधों को चूमते हुए कहा। "वो तो सत्ता पक्ष का जनरल सेक्रेटरी है। उसे हाथ लगाना आसान नहीं होगा।"

"आसान चीज़ें मुझे पसंद नहीं हैं अर्जुन," माया ने विराजको पलट दिया और खुद उसके ऊपर आ गई। उसके खुले हुए बाल विराजके चेहरे पर गिर रहे थे। "गोविंद ने कल रात शांतनु के कहने पर आर्यन को फंसाया है। गोविंद के पास बहुत सारे राज़ हैं। अगर तुमने गोविंद को किसी एनकाउंटर में मार गिराया, या उसे अरेस्ट करके थर्ड डिग्री दी, तो शांतनु घुटनों पर आ जाएगा। और फिर... इस राज्य के डीजीपी तुम होगे, और पर्दे के पीछे से सरकार मैं चलाऊंगी।"

माया ने अपने होंठ विराजके होठों पर रख दिए। ये एक ऐसा चुंबन था जिसमें सत्ता, लालच और धोखे की पूरी मिठास घुली थी। विराजपूरी तरह से माया के इस रेशमी फंदे में जकड़ चुका था। वो माया की कमर को कसकर पकड़ते हुए इस खतरनाक साज़िश का हिस्सा बनने के लिए राज़ी हो गया। बिस्तर पर चल रहा ये खेल अब राज्य की राजनीति का सबसे खूनी खेल बनने वाला था।

सुबह के आठ बज रहे थे। शांतनु मुखर्जी अपने आलीशान सरकारी बंगले के पीछे एक बड़े से लॉन में बैठा था। उसने खादी का एक सफेद कुरता पहना हुआ था और वो शांति से कबूतरों को दाना खिला रहा था। उसका चेहरा इतना सौम्य और शांत लग रहा था कि कोई भी उसे एक महान संत मान ले।

तभी बंगले का पिछला दरवाज़ा खुला और गोविंद सिंह लगभग दौड़ता हुआ लॉन में आया। उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और सूट सिकुड़ा हुआ था।

"सर... एक बहुत बुरी खबर है," गोविंद की आवाज़ कांप रही थी।

शांतनु ने दाना खिलाना बंद नहीं किया। उसने बिना पीछे मुड़े बेहद मीठी और धीमी आवाज़ में कहा, "कबूतर बहुत डरपोक होते हैं गोविंद। तुम्हारी तेज़ आवाज़ से उड़ जाएंगे। शांत रहो और बताओ, क्या गजराज ने उस जर्नलिस्ट और हार्ड ड्राइव का काम तमाम कर दिया?"

"नहीं सर," गोविंद ने अपना पसीना पोंछते हुए कहा। "लड़के हाथ से निकल गए। तनिशा ने वो हार्ड ड्राइव हासिल कर ली है। और सबसे बड़ी बात... आर्यन प्रताप भाग गया है। वो पुलिस को नहीं मिला। उसने अपना फोन फेंक दिया है। मुझे लगता है वो तनिशा के साथ मिल गया है।"

शांतनु के हाथ अचानक रुक गए। उसने मुट्ठी में बचा हुआ सारा दाना ज़मीन पर फेंक दिया और धीरे से मुड़ा। उसके चेहरे की वो संत वाली मुस्कान अब गायब हो चुकी थी। उसकी आंखों में एक ऐसा खौफनाक अंधकार था जिसे देखकर गोविंद की रूह कांप गई।

"तुम्हें मैंने एक बहुत ही सीधा सा काम दिया था गोविंद," शांतनु की आवाज़ अब मीठी नहीं, बल्कि किसी ज़हरीले सांप की फुफकार जैसी थी। "विक्रम बजाज के केस को हमेशा के लिए दफ्न रखना। तुमने आर्यन को फंसाने का आईडिया दिया, मैंने मान लिया। लेकिन अब तुम्हारा बुना हुआ जाल मेरे गले का फंदा बन रहा है।"

"सर, मैं गजराज को..."

"गजराज एक बेवकूफ कुत्ता है!" शांतनु अचानक दहाड़ा। उसकी आवाज़ सुनकर लॉन के सारे कबूतर उड़ गए। "अगर वो हार्ड ड्राइव मीडिया में प्ले हो गई, तो उसमें मेरे डिजिटल सिग्नेचर हैं। मेरी पूरी ज़िंदगी की तपस्या, मेरी साख, सब एक झटके में खाक हो जाएगी। और गोविंद, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं, अगर मैं डूबा, तो तुम्हें जेल नहीं जाने दूंगा। मैं तुम्हें तुम्हारे पूरे परिवार के साथ ज़िंदा जला दूंगा।"

गोविंद के घुटने कांपने लगे। वो सत्ता का खिलाड़ी था, लेकिन शांतनु के सामने वो एक कीड़े से ज़्यादा कुछ नहीं था।

"चौबीस घंटे हैं तुम्हारे पास," शांतनु ने वापस मुड़ते हुए कहा। "मुझे आर्यन की लाश और वो हार्ड ड्राइव मेरी टेबल पर चाहिए। गो!"

रात का वक्त, वापस 'स्वदेशी टेक्सटाइल मिल' में।

आर्यन और तनिशा गोदाम के एक कोने में बैठे थे। दोनों ने एक प्लान बनाया था।

"हम शांतनु के प्राइवेट बैंक अकाउंट्स को हैक करेंगे। वो स्विस अकाउंट्स जिनमें विक्रम बजाज ने पैसे भेजे थे। अगर हम वो अकाउंट डिटेल्स लाइव टीवी पर फ्लैश कर दें, तो कोई जज शांतनु को नहीं बचा पाएगा," आर्यन ने अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाते हुए कहा।

"कुणाल ये काम कर सकता है," तनिशा ने हामी भरी। "हमें उसे सुरक्षित जगह पर ले जाना होगा।"

अचानक, गोदाम के बाहर एक अजीब सी खामोशी छा गई। बारिश बंद हो चुकी थी, लेकिन झींगुरों की आवाज़ भी आनी बंद हो गई थी। आर्यन, जिसका बचपन शिकार खेलते हुए बीता था, इस सन्नाटे का मतलब समझता था।

"कोई बाहर है," आर्यन ने अपनी पिस्तौल का सेफ्टी कैच हटाते हुए फुसफुसाया।

उसने तनिशा को पीछे एक भारी मशीन के ओट में छुपने का इशारा किया और खुद दीवार से सटकर बाहर झांकने लगा।

मिल के कंपाउंड में तीन पुलिस की जिप्सियां बिना सायरन के आकर रुकी थीं। उनमें से ब्लैक कमांडो यूनिफॉर्म पहने कुछ पुलिसवाले बाहर निकले। उनके हाथों में ऑटोमैटिक राइफल्स थीं। और उनके आगे चल रहा था डीसीपी विराजराजपूत।

"ये गजराज के आदमी नहीं हैं," आर्यन के माथे पर पसीना आ गया। "ये स्टेट पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स है। और अगर डीसीपी खुद आया है, तो इसका मतलब वो मुझे अरेस्ट करने नहीं, मेरा एनकाउंटर करने आए हैं।"

"उन्हें हमारी लोकेशन कैसे मिली?" तनिशा ने खौफ से पूछा।

आर्यन ने तनिशा के वाटरप्रूफ बैकपैक की तरफ देखा। "तुम्हारा फोन! तुमने इसे ऑफ किया था?"

"शिट! मैंने इसे फ्लाइट मोड पर रखा था, लेकिन इसका जीपीएस..." तनिशा ने अपना फोन तुरंत बैग से निकाला और उसे ज़मीन पर पटक कर भारी पत्थर से कुचल दिया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।

"आर्यन प्रताप!" बाहर से डीसीपी विराजकी गरजती हुई आवाज़ आई। "पूरी मिल को घेर लिया गया है। सरेंडर कर दो, वरना गोली मार दी जाएगी!"

आर्यन ने तनिशा की तरफ देखा। "तुमने मुझे जो रास्ता बताया था, पीछे वाले ड्रेनेज पाइप का। तुम वहां से निकलो। हार्ड ड्राइव तुम्हारे पास होनी चाहिए।"

"मैं तुम्हें यहां मरने के लिए नहीं छोड़ सकती!" तनिशा ने ज़िद की।

"अगर हम दोनों मर गए, तो ये सच हमेशा के लिए इस मिल में दफ्न हो जाएगा," आर्यन ने तनिशा का कंधा कसकर पकड़ा। उसकी आंखों में एक अजीब सा ठहराव था। "अब ये मेरी लड़ाई है। जाओ!"

तनिशा ने एक आखिरी बार आर्यन को देखा और हार्ड ड्राइव का बैग सीने से लगाकर गोदाम के पीछे के अंधेरे रास्ते की तरफ भाग गई।

बाहर पुलिस ने दरवाज़े पर लातें मारना शुरु कर दिया था। आर्यन ने अपनी पिस्तौल की ग्रिप को कसकर पकड़ा, गहरी सांस ली और गोदाम के मुख्य दरवाज़े के पास रखे पुराने लोहे के ड्रम्स के पीछे पोज़िशन ले ली।

दरवाज़ा एक ज़ोरदार धमाके के साथ टूटा। तीन पुलिस कमांडोज़ अंदर घुसे।

आर्यन ने बिना सोचे फायर कर दिया। 'बैंग! बैंग!'

गोलियां कमांडोज़ के बुलेटप्रूफ वेस्ट पर लगीं, वो लड़खड़ा कर पीछे गिरे।

"फायर! फायर!" डीसीपी विराजचिल्लाया।

अगले ही सेकंड, गोदाम के अंदर गोलियों की ऐसी बौछार हुई जिसने अंधेरे को चीर कर रख दिया। दीवारें छलनी होने लगीं, पुरानी मशीनों से चिंगारियां निकलने लगीं। आर्यन एक मोहरे से उठकर अब एक खूंखार बागी बन चुका था, और वो इतनी आसानी से अपनी जान देने वाला नहीं था।

सत्ता की इस बिसात पर अब खून की होली शुरु हो चुकी थी।

## अध्याय 12:

स्वदेशी टेक्सटाइल मिल का वो बंद और अंधेरा गोदाम अब एक खौफनाक युद्ध के मैदान में बदल चुका था। हवा में बारूद की तीखी गंध और उड़ती

हुई धूल का गुबार था। डीसीपी विराजराजपूत के एसटीएफ कमांडोज़ अपनी ऑटोमैटिक राइफल्स से अंधाधुंध फायरिंग कर रहे थे।

आर्यन प्रताप एक पुरानी, भारी लोहे की डाई-मशीन के पीछे दुबका हुआ था। गोलियों की बौछार से मशीन से चिंगारियां छूट रही थीं। आर्यन का दिल पसलियों को तोड़कर बाहर आने को बेताब था। वह कोई ट्रेंड शूटर या कमांडो नहीं था, लेकिन सत्ता की इस क्रूर बिसात ने आज उसे एक खूंखार बागी बना दिया था।

"कवर फायर दो! उसे ज़िंदा या मुर्दा, दोनों हाल में पकड़ना है!" विराजराजपूत की गरजती हुई आवाज़ धुएं को चीरती हुई आई।

आर्यन जानता था कि उसके पास अपनी पिस्तौल में सिर्फ छह गोलियां बची हैं और बाहर एक पूरी फौज है। उसे एक डायवर्जन चाहिए था। उसकी नज़रें अंधेरे को चीरती हुई गोदाम के दूसरे कोने पर गईं, जहां सालों पुराने इंडस्ट्रियल केमिकल के कुछ जंग खाए हुए ड्रम रखे थे।

उसने गहरी सांस ली, खुद को शांत किया और मशीन के पीछे से अचानक बाहर निकलकर उन केमिकल ड्रम्स की तरफ लगातार तीन गोलियां दाग दीं।

'बूम!'

एक कानफाड़ू धमाका हुआ। केमिकल के उन ड्रम्स में बची हुई गैस और ज्वलनशील पदार्थ ने आग पकड़ ली थी। आग की एक भयंकर लपट उठी और पूरा गोदाम काले धुएं से भर गया। कमांडोज़ धमाके की गूंज से लड़खड़ा कर पीछे गिर पड़े। विराजराजपूत ने अपना चेहरा हाथों से ढक लिया।

यही वो पल था जिसका आर्यन को इंतज़ार था। धुएं की आड़ लेकर वह गोदाम के पीछे वाली टूटी हुई ईंटों की दीवार की तरफ भागा। जैसे ही उसने दीवार फांदने के लिए छलांग लगाई, एक अंधी गोली उसके बाएं कंधे को चीरती हुई निकल गई।

आर्यन के मुंह से एक दर्दनाक चीख निकली, लेकिन एड्रेनालाईन का नशा इतना तेज़ था कि उसने रुकने का नाम नहीं लिया। वह मिल की चारदीवारी फांदकर बाहर घने जंगल और अंधेरे में ओझल हो गया।

जब तक विराजऔर उसके कमांडोज़ धुएं से बाहर आए, शिकार हाथ से निकल चुका था। विराजने गुस्से में अपना वायरलेस सेट ज़मीन पर पटक दिया। माया चौधरी से किया गया वादा और डीजीपी बनने का सपना, दोनों खतरे में थे।

राजधानी के शोर-शराबे से बहुत दूर, अरावली की पहाड़ियों में छिपे एक बेहद आलीशान और सीक्रेट फार्महाउस में एक अलग ही तरह का खेल चल रहा था। यह फार्महाउस कागज़ों पर किसी बेनामी कंपनी के नाम था, लेकिन असल में यह पार्टी प्रेसिडेंट शांतनु मुखर्जी का निजी स्वर्ग था।

बाहर की दुनिया के लिए शांतनु एक गांधीवादी, सफेद खादी पहनने वाला और ज़मीन पर सोने वाला संत था। लेकिन इस फार्महाउस के मास्टर बेडरूम की हकीकत कुछ और ही थी।

कमरे की बत्तियां मद्धिम थीं। बैकग्राउंड में एक बेहद धीमी और मादक शास्त्रीय धुन बज रही थी। हवा में महंगे चंदन के इत्र और स्कॉच की खुशबू घुली थी। कमरे के बीचों-बीच रखे एक बड़े से विंटेज बेड पर शांतनु बैठा था। उसने सिल्क का एक महंगा नाइट-रोब पहना हुआ था और उसके चेहरे पर सत्ता का एक क्रूर गुरूर था।

उसके सामने बिस्तर पर पच्चीस साल की काव्या बैठी थी। काव्या पार्टी की यूथ विंग की सबसे एंबिशियस नेता थी, जो आने वाले चुनाव में शहर की सबसे वीआईपी सीट से टिकट मांग रही थी। उसने एक बेहद पारदर्शी और पतली सफेद शिफॉन की साड़ी पहनी थी, जिसका पल्लू उसके कांपते हुए कंधों से नीचे खिसक चुका था।

"सत्ता कोई मंदिर का प्रसाद नहीं है काव्या, जो हाथ फैलाने से मिल जाए," शांतनु की आवाज़ में एक अजीब सी मादकता और भारीपन था। उसने अपना स्कॉच का ग्लास साइड टेबल पर रखा और अपने खुरदुरे हाथों से काव्या के गाल को सहलाया।

काव्या की सांसें तेज़ हो गईं। वह जानती थी कि इस कमरे में आने का क्या मतलब है, लेकिन मुख्यमंत्री के बाद राज्य के सबसे ताकतवर इंसान का टिकट पाने के लिए वह कोई भी कीमत चुकाने को तैयार थी।

"मैं... मैं आपके लिए कुछ भी कर सकती हूं सर," काव्या ने अपनी नज़रें झुकाते हुए फुसफुसाया।

शांतनु के होठों पर एक शैतानी मुस्कान आ गई। "मुझे 'सर' मत कहो। यहां कोई राजनीति नहीं है।"

शांतनु ने काव्या की कमर को अपने मज़बूत हाथों में जकड़ा और उसे अपनी तरफ खींच लिया। काव्या का नर्म जिस्म शांतनु के सीने से टकराया। शांतनु

ने अपने होंठ काव्या की गर्दन पर रख दिए। उसके खुरदुरे और लालची चुंबनों ने काव्या के शरीर में एक अजीब सी सिहरन और उत्तेजना पैदा कर दी।

काव्या ने अपनी आंखें बंद कर लीं और शांतनु के बालों में अपनी उंगलियां फंसा दीं। कमरे का तापमान अचानक बढ़ गया। शांतनु के हाथ काव्या की साड़ी की प्लीट्स को खोल रहे थे। उस सफेदपोश संत का असली, हवसी और क्रूर चेहरा अब पूरी तरह नंगा हो चुका था।

"तुम्हें वो वीआईपी सीट मिलेगी काव्या... लेकिन उससे पहले तुम्हें मुझे ये यकीन दिलाना होगा कि तुम मेरी सबसे वफादार शिष्या हो," शांतनु ने काव्या को बिस्तर पर लिटाते हुए कहा।

सिल्क की चादरों पर दोनों के जिस्म उलझ गए। वासना, लालच और महत्वाकांक्षा के इस गंदे खेल में काव्या ने खुद को पूरी तरह शांतनु के हवाले कर दिया था। बाहर दुनिया में चाहे आर्यन प्रताप की तलाश में गोलियां चल रही हों, लेकिन शांतनु अपने इस निजी स्वर्ग में एक जवान जिस्म की गर्मी और अपनी ताकत के गुरूर में डूबा हुआ था। उसे अंदाज़ा भी नहीं था कि उसका बुना हुआ जाल अब उसी की तरफ बढ़ रहा है।

रात के तीन बज चुके थे। हाईवे पर बारिश का पानी जमा था। तनिशा कीचड़ में लथपथ, लगभग भागते हुए एक सुनसान ढाबे तक पहुंची। उसकी सांसें धौंकनी की तरह चल रही थीं। उसने अपना वाटरप्रूफ बैकपैक कसकर सीने से लगा रखा था, जिसमें राज्य की सबसे बड़ी राजनीतिक मौत का सुबूत था।

ढाबे का मालिक सो रहा था। तनिशा ने गल्ले के पास रखा पीसीओ फोन उठाया और कुछ सिक्के डालकर कुणाल का नंबर डायल किया।

"हेलो..." कुणाल की नींद भरी आवाज़ आई।

"कुणाल! मैं तनिशा बोल रही हूं। कोई सवाल मत पूछना। बस सीधे काम की बात सुनो," तनिशा ने तेज़ी से कहा। "डार्क वेब सर्वर्स रेडी करो। नेशनल ट्रुथ का मेन सर्वर हैक होने वाला है। मैं नहीं चाहती कि सरकार हमारा ब्रॉडकास्ट रोक पाए। हमारे पास शांतनु मुखर्जी और विक्रम बजाज के 50 करोड़ के ट्रांजेक्शन का सीधा सुबूत है।"

कुणाल की नींद एक झटके में उड़ गई। "मैडम, आप शांतनु मुखर्जी की बात कर रही हैं? वो आपको ज़िंदा ज़मीन में गाड़ देगा!"

"मुझे गाड़ने से पहले मैं उसकी कब्र खोद दूंगी," तनिशा ने खूंखार लहज़े में कहा। "कल सुबह आठ बजे, हम हर न्यूज़ चैनल की फ्रीक्वेंसी हाईजैक

करेंगे। वो सुबूत हर मोबाइल स्क्रीन, हर टीवी पर प्ले होना चाहिए। मैं आधे घंटे में तुम्हारे सीक्रेट वाले घर पहुंच रही हूं। गेट रेडी!"

तनिशा ने फोन पटका और हाईवे पर आती हुई एक खाली ट्रक को हाथ दिया। यह रात अब खत्म होने वाली थी, और सुबह का सूरज इस राज्य के इतिहास का सबसे बड़ा भूचाल लेकर आने वाला था।

राजधानी के एक पॉश लेकिन शांत इलाके में स्थित गोविंद सिंह का प्राइवेट फ्लैट इस वक्त खौफ के साये में था। गोविंद अपने बेडरूम में पागलों की तरह सूटकेस में कैश, ज्वेलरी और नकली पासपोर्ट ठूंस रहा था।

कुछ मिनट पहले ही डीसीपी विराजका कॉल आया था कि आर्यन मिल से ज़िंदा भाग निकला है।

गोविंद जानता था कि आर्यन कोई आम नेता नहीं है। वो घायल शेर है और सबसे पहले उस इंसान की गर्दन नापेगा जिसने उसे धोखा दिया— यानी खुद गोविंद। शांतनु ने भी अल्टीमेटम दे दिया था। गोविंद के लिए अब इस देश में रुकना मौत को दावत देने जैसा था। उसे आज रात ही नेपाल बॉर्डर पार करना था।

उसने सूटकेस की ज़िप बंद की और पसीना पोंछते हुए पलटा।

अचानक, फ्लैट की सारी बत्तियां गुल हो गईं।

गोविंद के दिल की धड़कन रुक सी गई। बाहर बारिश तेज़ हो चुकी थी और खिड़की से आ रही बिजली की चमक में उसे कमरे के दरवाज़े पर एक साया खड़ा दिखाई दिया।

"कौन है?" गोविंद की आवाज़ कांप गई। उसने कांपते हाथों से अपनी दराज़ खोली और एक रिवॉल्वर निकाल ली।

बिजली फिर चमकी, और इस बार उस साये का चेहरा साफ दिखाई दिया।

काले कपड़े, भीगे हुए बाल, चेहरे पर खून की छींटें और बाएं कंधे से टपकता हुआ खून। आर्यन प्रताप की आंखों में मौत नाच रही थी।

"बहुत जल्दी में लग रहे हो, दोस्त?" आर्यन की आवाज़ उस अंधेरे कमरे में किसी यमदूत की तरह गूंजी।

गोविंद ने अपनी रिवॉल्वर आर्यन की तरफ तान दी। "वहीं रुक जाओ आर्यन! वरना मैं गोली मार दूंगा! मैंने पहले भी तुम्हारे सिर पर इल्ज़ाम मढ़ा था, आज तुम्हें मारकर सेल्फ-डिफेंस का केस बना दूंगा!"

आर्यन के चेहरे पर कोई खौफ नहीं था। वो अपनी गैर-लाइसेंसी पिस्तौल को नीचे लटकाए, बहुत इत्मीनान से गोविंद की तरफ कदम बढ़ाने लगा।

"तुम एक बहुत अच्छे रणनीतिकार हो गोविंद। तुमने हर चाल बहुत सफाई से चली। माया से हाथ मिलाया, शांतनु का पैसा खाया, और मुझे बलि का बकरा बनाया," आर्यन अब गोविंद से महज़ दो कदम की दूरी पर था। "लेकिन तुम एक चीज़ भूल गए।"

"क्या?" गोविंद का हाथ कांप रहा था, उंगली ट्रिगर पर थी।

"मैं वो इंसान हूं जिसने कभी हारना नहीं सीखा," इतना कहते ही आर्यन ने बिजली की फुर्ती से अपनी दाईं टांग से गोविंद के हाथ पर एक ज़ोरदार किक मारी।

गोविंद की रिवॉल्वर छिटक कर दूर जा गिरी। इससे पहले कि गोविंद कुछ समझ पाता, आर्यन ने उसे कॉलर से पकड़ा और पूरी ताकत से कांच की बड़ी सी खिड़की की तरफ दे मारा।

कांच के टुकड़ों के साथ गोविंद ज़मीन पर गिरा। उसके चेहरे से खून बहने लगा। आर्यन उसके ऊपर आकर बैठ गया और उसने अपनी पिस्तौल की ठंडी बैरल सीधे गोविंद के माथे पर टिका दी।

"आर्यन... प्लीज़... मुझे मत मारो!" गोविंद अब एक बच्चे की तरह रो रहा था। उसकी सारी चालाकी, सारा गुरूर आंसुओं में बह चुका था। "मैं... मैं सब कुछ सच उगल दूंगा! मैं मीडिया के सामने कहूंगा कि विक्रम बजाज को शांतनु ने मरवाया था! मैं गवाह बनूंगा आर्यन! मुझे छोड़ दो!"

आर्यन ने अपनी पिस्तौल का हैमर पीछे खींचा। 'क्लिक' की आवाज़ मौत के फरमान जैसी थी।

"तुम्हारी गवाही की अब कोई ज़रूरत नहीं है गोविंद। तनिशा के पास सारे सुबूत पहुंच चुके हैं," आर्यन ने बेहद ठंडी और खौफनाक आवाज़ में कहा। "मैं तुम्हें इंसाफ के लिए नहीं मार रहा हूं। मैं तुम्हें इसलिए मार रहा हूं क्योंकि तुमने मेरी दोस्ती को धोखा दिया।"

"आर्यन नहीं!" गोविंद चीखा।

बिजली कड़की, बादलों की गरज ने फ्लैट की दीवारों को हिला दिया और उसी गरज के बीच आर्यन की पिस्तौल ने आग उगल दी।

खेल का एक मोहरा हमेशा के लिए बिसात से मिट चुका था। अब बारी थी वज़ीर और बादशाह की।

## अध्याय 13:

सुबह के सात बजकर पचपन मिनट हो चुके थे। राजधानी अभी पूरी तरह जागी भी नहीं थी कि कुणाल के सीक्रेट अंडरग्राउंड बेसमेंट में सर्वर मशीनों की भिनभिनाहट किसी बड़े तूफान का संकेत दे रही थी।

यह कमरा ज़मीन के नीचे बना था, जहां सूरज की रोशनी कभी नहीं पहुंचती थी। दीवारों पर कई मॉनिटर्स लगे थे, जिन पर हरे और लाल रंग के कोड्स तेज़ी से दौड़ रहे थे। तनिशा अपनी कुर्सी के किनारे पर बैठी थी। उसकी आंखें स्क्रीन पर गड़ी थीं और उंगलियां मेज़ पर लगातार टैप कर रही थीं। रात भर के खौफ और भागदौड़ के बाद उसके चेहरे पर थकान ज़रूर थी, लेकिन उसकी आंखों की चमक बता रही थी कि वो इतिहास रचने वाली है।

"कुणाल, स्टेटस?" तनिशा ने अपनी ब्लैक कॉफी का आखिरी घूंट लेते हुए पूछा।

"मैडम, मैंने स्टेट के सभी छह बड़े न्यूज़ नेटवर्क्स के मेन सर्वर में बैकडोर एंट्री बना ली है। एन्क्रिप्शन तोड़ दिया गया है। जैसे ही घड़ी में आठ बजेंगे, उनके कंट्रोल रूम का एक्सेस कट जाएगा और हमारी हार्ड ड्राइव का वीडियो सीधा सैटेलाइट फीड पर चला जाएगा," कुणाल की उंगलियां कीबोर्ड पर किसी जादूगर की तरह चल रही थीं।

"परफेक्ट। आज इस राज्य की जनता वो देखेगी जो उनसे सालों से छुपाया गया है," तनिशा ने गहरी सांस ली।

आठ बजने में दस सेकंड बाकी थे। दस... नौ... आठ... तनिशा की धड़कनें तेज़ हो गईं। तीन... दो... एक... "एक्ज़ीक्यूट!" तनिशा ने चिल्लाकर कहा।

कुणाल ने एंटर की (key) दबाई।

राजधानी से लेकर छोटे-छोटे कस्बों तक, जिन-जिन घरों और दुकानों में सुबह की न्यूज़ चल रही थी, वहां अचानक टीवी स्क्रीन्स पर झिलमिलाहट हुई। एंकर्स के चेहरे अचानक गायब हो गए और उनकी जगह एक काले बैकग्राउंड वाला वीडियो प्ले होने लगा।

वीडियो में पसीने से लथपथ विक्रम बजाज बैठा था। उसकी हांफती हुई और डरी हुई आवाज़ पूरे राज्य में गूंज उठी।

*"मेरा नाम विक्रम बजाज है। आज 14 अगस्त 2019 है। अगर आप ये वीडियो देख रहे हैं, तो इसका मतलब है कि मैं मारा जा चुका हूं..."*

लोगों के हाथों से चाय के कप छूटने लगे। जो लोग काम पर जाने के लिए तैयार हो रहे थे, वो टीवी के सामने बुत बनकर खड़े हो गए।

*"आर्यन प्रताप और गोविंद सिंह सिर्फ मोहरे हैं... असली मास्टरमाइंड, जो इस पूरे सिंडिकेट को चला रहा है, वो कोई और नहीं, बल्कि पार्टी प्रेसिडेंट... शांतनु मुखर्जी है।"*

जैसे ही बजाज ने वो नाम लिया, स्क्रीन पर वो बैंक स्टेटमेंट फ्लैश हो गया, जिसमें 50 करोड़ के ट्रांजेक्शन के ठीक नीचे शांतनु मुखर्जी का डिजिटल सिग्नेचर था।

यह कोई स्कैंडल नहीं था, यह एक राजनीतिक महाविस्फोट था।

अरावली की पहाड़ियों में स्थित शांतनु मुखर्जी के उस आलीशान फार्महाउस में भी टीवी ऑन था। शांतनु अपने सिल्क के नाइट-रोब में बिस्तर पर बैठा अपनी सुबह की दार्जिलिंग चाय पी रहा था। काव्या उसके बगल में लेटी थी, उसके नंगे कंधों पर सिर्फ एक सफेद रेशमी चादर थी।

जैसे ही टीवी पर विक्रम बजाज का चेहरा आया, शांतनु के हाथ में पकड़ा चीनी मिट्टी का कप ज़मीन पर गिरकर चकनाचूर हो गया। गर्म चाय उसके पैरों पर गिरी, लेकिन उसे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ।

उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं।

"ये... ये असंभव है!" शांतनु बड़बड़ाया।

काव्या ने उठकर टीवी की तरफ देखा और जब उसने शांतनु का नाम सुना, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसे समझ आ गया कि वो जिस इंसान के साथ बिस्तर पर है, वो अब राज्य का सबसे बड़ा अपराधी बन चुका है। काव्या बिना कुछ कहे उठी, अपने कपड़े समेटे और खौफ के मारे कमरे से बाहर भाग गई।

शांतनु का फोन पागलों की तरह बजने लगा। पहला कॉल दिल्ली हाईकमान का था। दूसरा कॉल पुलिस कमिश्नर का। शांतनु ने फोन उठाकर ज़मीन पर पटक दिया।

उसका वो संत वाला सौम्य चेहरा अब एक खूंखार, बौखलाए हुए जानवर में बदल चुका था। उसने अपनी अलमारी खोली, उसमें से एक सैटेलाइट फोन निकाला और डीसीपी विराजराजपूत का नंबर डायल किया।

"अर्जुन!" शांतनु चिल्लाया। "वो वीडियो कैसे ब्रॉडकास्ट हुआ? तुमने कहा था कि तुमने तनिशा को घेर लिया है!"

"सर... वो हैकिंग थी। हम कुछ नहीं कर पाए," दूसरी तरफ से विराजकी दबी हुई आवाज़ आई।

"मुझे कोई बहाना नहीं चाहिए! पूरा शहर मेरे खून का प्यासा होने वाला है। दिल्ली वाले मुझे सस्पेंड कर रहे हैं। अर्जुन, मुझे तनिशा और आर्यन की लाश चाहिए। अभी! शूट एट साइट (देखते ही गोली मार दो)। मैं तुम्हें पुलिस कमिश्नर बना दूंगा, बस उन्हें खत्म कर दो!" शांतनु बुरी तरह हांफ रहा था।

"जी सर," विराजने फोन काट दिया।

शांतनु अपने भारी कदमों से बालकनी में आया। वह जानता था कि अब सीबीआई और ईडी के छापे पड़ने वाले हैं। उसका राजनीतिक करियर खत्म हो चुका था, लेकिन वो शांतनु मुखर्जी था। वो इतनी आसानी से हार नहीं मानने वाला था। उसने अपनी प्राइवेट सिक्योरिटी को अलर्ट किया और फार्महाउस को एक अभेद्य किले में तब्दील करने का हुक्म दे दिया।

राजधानी के द इंपीरियल होटल के प्रेसिडेंशियल सुइट में डीसीपी विराजराजपूत बेड के किनारे बैठा था। उसने अभी-अभी शांतनु का कॉल काटा था। टीवी पर अभी भी शांतनु के खिलाफ सबूतों की लड़ी चल रही थी।

तभी पीछे से माया चौधरी के नाज़ुक और गर्म हाथ विराजके चौड़े कंधों पर आकर टिक गए। माया के बदन पर सिर्फ एक बेहद छोटी ब्लैक लेस ब्रालेट और मैचिंग पैंटी थी, जो उसके सुडौल जिस्म को और भी कातिलाना बना रही थी।

उसने विराजकी पीठ पर अपने होंठों से एक हल्का सा चुंबन लिया। विराजके शरीर में एक सिहरन दौड़ गई।

"क्या कहा उस बूढ़े शैतान ने?" माया ने अपनी मखमली आवाज़ में विराजके कान के पास फुसफुसाया।

"वो चाहता है कि मैं आर्यन और तनिशा को मार दूं। वो पूरी तरह पागल हो चुका है माया," विराजने अपना सिर पकड़ते हुए कहा। "अगर मैंने ऐसा किया, तो कल को वो सारा इल्ज़ाम मेरे सिर पर डाल देगा। मैं फंस जाऊंगा।"

माया मुस्कुराई। वो विराजके सामने आकर बैठ गई। उसने विराजके हाथों को अपने हाथों में लिया और अपनी गहरी, नशीली आंखों से उसकी आंखों में देखा।

"अर्जुन... एक डूबते हुए जहाज़ का नौकर बनने से क्या फायदा, जब तुम खुद उस जहाज़ के कप्तान बन सकते हो?" माया ने विराजके सीने पर अपनी उंगलियां फेरते हुए कहा।

"क्या मतलब?" विराजकी सांसें तेज़ होने लगी थीं, माया की नज़दीकी उसे हमेशा मदहोश कर देती थी।

"शांतनु अब एक मुर्दा सांप है। पूरी दुनिया जानती है कि वो खूनी है," माया ने विराजके होठों के बिल्कुल करीब आकर कहा। "अगर तुम अब आर्यन को मारोगे, तो तुम भी हत्यारे कहलाओगे। लेकिन सोचो... अगर तुम अपनी एसटीएफ टीम लेकर सीधे शांतनु मुखर्जी के फार्महाउस पर रेड डाल दो और उसे अरेस्ट कर लो, तो क्या होगा?"

विराजकी आंखें चौड़ी हो गईं।

"तुम पूरे राज्य के हीरो बन जाओगे अर्जुन। मीडिया तुम्हें सिंघम कहेगी। हाईकमान तुम्हें हाथों-हाथ लेगा," माया ने विराजकी गर्दन के पीछे हाथ डालकर उसे अपनी तरफ खींचा। "शांतनु अंदर जाएगा। मैं विपक्ष की सबसे बड़ी नेता हूं, अगला चुनाव मैं जीतूंगी और सीएम बनूंगी। और तुम... तुम मेरे डीजीपी होगे। पुलिस के सबसे बड़े बॉस।"

माया ने अपने होंठ विराजके होठों पर रख दिए। यह कोई आम चुंबन नहीं था, यह सत्ता, लालच और धोखे की एक ऐसी मुहर थी, जिसने विराजके दिमाग को पूरी तरह पलट कर रख दिया था। विराजने माया को अपनी बाहों में कस लिया और उसे बिस्तर पर गिरा दिया।

"मैं शांतनु को अरेस्ट करूंगा," विराजने माया के जिस्म में खोते हुए हांफती आवाज़ में कहा।

माया की आंखों में एक शैतानी और विजयी चमक थी। उसने अपना सबसे बड़ा मोहरा चल दिया था। शांतनु और आर्यन लड़कर खत्म हो जाएंगे, और आखिरी बाज़ी माया के हाथ लगेगी।

शहर के बाहरी इलाके में एक पुरानी, बंद पड़ी वर्कशॉप के अंदर आर्यन प्रताप बैठा था। उसके सामने ज़मीन पर एक पोर्टेबल टीवी रखा था, जिस पर लगातार शांतनु मुखर्जी का एक्सपोज़ चल रहा था।

आर्यन के सफेद कुर्ते पर अभी भी गोविंद का खून लगा था और उसके बाएं कंधे पर बंधी पट्टी से हल्का खून रिस रहा था। लेकिन आर्यन को कोई दर्द महसूस नहीं हो रहा था। उसके चेहरे पर एक खौफनाक और ठंडी मुस्कान थी।

तनिशा ने अपना काम कर दिया था। शांतनु नंगा हो चुका था।

लेकिन आर्यन जानता था कि कानून शांतनु जैसे लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। कुछ दिन जेल, फिर बेल, और फिर से राजनीति। शांतनु ने आर्यन के करियर, उसके विश्वास और उसकी पूरी ज़िंदगी को बर्बाद किया था। आर्यन को इंसाफ नहीं, इंतकाम चाहिए था।

आर्यन ने अपनी गैर-लाइसेंसी पिस्तौल निकाली। उसने मैगज़ीन चेक की। उसमें सिर्फ पांच गोलियां बची थीं।

"पांच गोलियां... और एक गद्दार," आर्यन ने बड़बड़ाते हुए पिस्तौल को लोड किया।

उसने वर्कशॉप के कोने में खड़ी एक पुरानी, चोरी की हुई बाइक स्टार्ट की। इंजन की भारी आवाज़ से पूरा वर्कशॉप गूंज उठा। आर्यन ने हुडी पहनी, चेहरे पर एक काला रुमाल बांधा और बाइक को अरावली की पहाड़ियों की तरफ मोड़ दिया।

उसे पता था कि शांतनु अपने उसी सीक्रेट फार्महाउस में छिपा होगा। और आर्यन यह भी जानता था कि आज वहां या तो शांतनु की लाश गिरेगी, या फिर उसकी खुद की।

सत्ता की इस शतरंज का अब आखिरी खेल शुरू होने वाला था। राजा अब चारों तरफ से घिर चुका था, लेकिन वज़ीर अभी भी खंजर लिए उसकी गर्दन तक पहुंचने के लिए बेताब था।

## अध्याय 14:

राजधानी के शोर और अरावली की पहाड़ियों में हो रहे खूनी तांडव से कोसों दूर, 'द इंपीरियल' होटल के प्रेसिडेंशियल सुइट का माहौल बिल्कुल अलग था। यह सुइट अब माया चौधरी की जीत का जश्न मना रहा था।

बाथरूम में गर्म पानी और महंगे फ्रेंच बाथ-बॉम्ब्स से भरा एक विशाल जकूज़ी था। पानी की सतह पर गुलाब की पंखुड़ियां और सफेद झाग तैर रहा था। माया उस गुनगुने पानी में डूबी हुई थी। उसका नग्न, सुडौल बदन पानी के अंदर एक संगमरमर की मूरत जैसा लग रहा था। उसने अपने एक हाथ में विंटेज शैम्पेन का क्रिस्टल ग्लास पकड़ा हुआ था और उसकी आंखें खुशी से बंद थीं।

"सत्ता..." माया ने फुसफुसाते हुए शैम्पेन का एक घूंट लिया। पानी की गर्माहट उसके शरीर को रिलैक्स कर रही थी, लेकिन उसके दिमाग में जीत की एक अलग ही उत्तेजना दौड़ रही थी।

उसे विराजराजपूत के चौड़े सीने और उसके पसीने की गंध याद आ रही थी। माया जानती थी कि मर्दों को कंट्रोल करने का सबसे बेहतरीन तरीका उनका दिमाग नहीं, बल्कि उनकी हवस होती है। उसने विराजके जिस्म की आग को भड़का कर उसे अपना पालतू कुत्ता बना लिया था। शांतनु मुखर्जी अब कुछ ही घंटों में अरेस्ट होने वाला था, आर्यन प्रताप पुलिस के एनकाउंटर में मारा जाएगा, और कल सुबह की पहली किरण के साथ विपक्ष की इस खूबसूरत और शातिर नेता के लिए मुख्यमंत्री की कुर्सी का रास्ता बिल्कुल साफ हो जाएगा।

माया ने अपने गीले बालों को पीछे किया और पानी से बाहर आ गई। उसके भीगे हुए जिस्म से पानी की बूंदें टपक रही थीं। उसने एक लाल रंग का सिल्क रोब पहना और बालकनी में आकर खड़ी हो गई। उसने शहर की जगमगाती रोशनियों को देखा। "ये पूरा शहर अब मेरा है," उसकी कातिलाना मुस्कान रात के अंधेरे में और भी खतरनाक लग रही थी।

अरावली की पहाड़ियों में स्थित शांतनु मुखर्जी का फार्महाउस अब एक अभेद्य किले में तब्दील हो चुका था। फार्महाउस के चारों तरफ ऊंची दीवारें थीं जिन पर कंटीले तार लगे थे, और चप्पे-चप्पे पर शांतनु के हथियारबंद प्राइवेट गार्ड्स तैनात थे।

आर्यन प्रताप ने अपनी चोरी की हुई बाइक को फार्महाउस से दो किलोमीटर पहले ही एक घनी झाड़ी में छुपा दिया था। वह पैदल, चुपचाप एक शिकारी चीते की तरह जंगल के रास्ते आगे बढ़ रहा था। उसके सफेद कुर्ते पर लगा खून सूखकर काला पड़ चुका था।

आर्यन को इस फार्महाउस का चप्पा-चप्पा पता था। जब वो शांतनु का सबसे चहेता 'शिष्य' हुआ करता था, तब उसने यहां कई रातें गुज़ारी थीं। उसे पता था कि फार्महाउस के पीछे एक पुरानी सर्विस लेन है, जहां सिक्योरिटी कैमरा का ब्लाइंड स्पॉट है।

आर्यन सर्विस लेन की दीवार के पास पहुंचा। वहां एक गार्ड ऑटोमैटिक राइफल लिए खड़ा सिगरेट पी रहा था।

आर्यन ने एक पत्थर उठाया और उसे दूसरी तरफ फेंक दिया। 'खट!' की आवाज़ सुनकर गार्ड तुरंत मुड़ा।

"कौन है वहां?" गार्ड ने अपनी राइफल सीधी की और अंधेरे की तरफ बढ़ा।

इससे पहले कि वो कुछ समझ पाता, आर्यन अंधेरे से बाहर निकला और उसने पीछे से गार्ड के मुंह पर हाथ रखकर उसकी गर्दन को एक ज़ोरदार झटके से घुमा दिया। एक हल्की सी 'क्रैक' की आवाज़ हुई और गार्ड बिना कोई आवाज़ किए ज़मीन पर गिर पड़ा। आर्यन ने उसकी बेल्ट से चाबियों का गुच्छा निकाला और पीछे के लोहे के दरवाज़े को खोलकर फार्महाउस के कंपाउंड में दाखिल हो गया।

उसी वक्त, फार्महाउस के मुख्य दरवाज़े (मेन गेट) पर पुलिस के सायरन की कानफाड़ू आवाज़ गूंज उठी।

डीसीपी विराजराजपूत अपनी स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) के साथ तीन बुलेटप्रूफ गाड़ियों में वहां पहुंच चुका था। माया के जिस्म और उसके वादों के नशे में विराजअब पूरी तरह अंधा हो चुका था। उसे सिर्फ शांतनु की गिरफ्तारी और अपना डीजीपी का प्रमोशन दिखाई दे रहा था।

"गेट खोलो! ये पुलिस है!" विराजने लाउडस्पीकर पर चिल्लाते हुए कहा।

लेकिन शांतनु के गार्ड्स को पुलिस से लड़ने के आदेश मिल चुके थे। उन्होंने गेट खोलने के बजाय कंपाउंड की दीवारों से पुलिस की गाड़ियों पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी।

"फायर बैक!" विराजने अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकालते हुए एसटीएफ कमांडोज़ को आदेश दिया।

अरावली की उन शांत पहाड़ियों में अब गोलियों की गूंज और बारूद की महक फैल गई थी। पुलिस और शांतनु की प्राइवेट आर्मी के बीच एक भयंकर मुठभेड़ शुरु हो गई।

फार्महाउस के अंदर, इस भारी गोलीबारी का फायदा उठाते हुए आर्यन प्रताप बहुत आसानी से मुख्य इमारत में घुस गया। सारे गार्ड्स मेन गेट की तरफ जा चुके थे।

आर्यन सीधे मास्टर बेडरूम से होते हुए उस सीक्रेट स्टडी रूम की तरफ बढ़ा, जो एक बुकशेल्फ के पीछे छिपा था। उसने बुकशेल्फ की एक खास किताब को खींचा और दरवाज़ा खुल गया।

स्टडी रूम के अंदर का नज़ारा किसी हॉलीवुड थ्रिलर से कम नहीं था। कमरे के बीचों-बीच एक बड़ा सा फायरप्लेस था, जिसमें शांतनु मुखर्जी अपनी सारी सीक्रेट फाइल्स, ब्लैकमेल के सुबूत और पेन ड्राइव्स जला रहा था। पास ही एक खुला हुआ लेदर का डफेल बैग रखा था, जिसमें करोड़ों रुपये के बंडल और विदेशी पासपोर्ट भरे थे।

शांतनु ने वो संत वाला सफेद खादी का कुरता उतार दिया था और एक साधारण सा सफारी सूट पहन लिया था। उसे पता था कि वो हार चुका है, लेकिन वो देश छोड़कर भागने की तैयारी कर रहा था।

तभी शांतनु को अपने पीछे किसी की आहट महसूस हुई। उसने झटके से मुड़कर देखा।

दरवाज़े पर आर्यन प्रताप खड़ा था। उसकी गैर-लाइसेंसी पिस्तौल का निशाना सीधा शांतनु के सीने पर था। आर्यन की आंखों में ऐसी सर्द नफरत थी, जो आग से भी ज्यादा जला देने वाली थी।

"तुम..." शांतनु के हाथ से फाइलों का बंडल छूटकर ज़मीन पर गिर गया।

"मैं तुम्हें कोई भाषण नहीं दूंगा शांतनु," आर्यन की आवाज़ बिल्कुल सपाट और खौफनाक थी। "तुमने मेरी ज़िंदगी, मेरा यकीन और मेरी इज़्ज़त... सब कुछ जला दिया। तुमने एक निर्दोष इंसान (विक्रम बजाज) को मरवाया और उसका खून मेरे हाथों पर मल दिया। आज ये खेल खत्म होगा।"

शांतनु ने अपने चेहरे पर एक झूठी, पिता वाली मुस्कान लाने की कोशिश की। वो आर्यन के दिमाग से खेलने लगा। "आर्यन, मेरे बेटे। तुम एक बहुत बड़ी गलती कर रहे हो। बाहर पुलिस है। अगर तुम मुझे मार दोगे, तो तुम भी कभी ज़िंदा बाहर नहीं जा पाओगे। हम दोनों मिलकर एक डील कर सकते हैं। मेरे पास स्विस बैंक में इतने पैसे हैं कि हम दोनों किसी और देश में एक नई ज़िंदगी, एक नई सत्ता खड़ी कर सकते हैं!"

"मुझे सत्ता नहीं चाहिए शांतनु। मुझे तुम्हारी चीखें चाहिए," आर्यन ने पिस्तौल का हैमर पीछे खींच लिया।

शांतनु को समझ आ गया कि आर्यन अब बातों में नहीं आने वाला। उसकी नज़रें अपनी डेस्क की दराज़ पर गईं, जहां उसकी लोडेड पिस्तौल रखी थी।

"आर्यन, तुमने राजनीति मुझसे ही सीखी है, और तुम जानते हो कि मैं कभी बिना बैकअप के नहीं खेलता!" इतना कहते ही शांतनु बिजली की तेज़ी से डेस्क की तरफ लपका। उसने दराज़ खोलकर अपनी पिस्तौल निकालनी चाही।

लेकिन आर्यन उससे बहुत तेज़ था।

'बैंग! बैंग!'

आर्यन ने शांतनु के सीने पर गोली नहीं मारी। उसने दो फायर किए और दोनों गोलियां शांतनु के दोनों घुटनों को चीरती हुई निकल गईं।

शांतनु के मुंह से एक सूअर जैसी दर्दनाक चीख निकली और वो डेस्क से टकराता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी दोनों टांगों से खून का फव्वारा फूट पड़ा। वो दर्द से तड़पने लगा, उसके हाथ-पैर ज़मीन पर घिसट रहे थे।

आर्यन धीरे-धीरे चलकर उसके पास आया और उसने शांतनु की पिस्तौल को अपने पैर से दूर धकेल दिया।

"आहहह! तुमने मुझे अपाहिज कर दिया कमीने!" शांतनु दर्द से बिलखते हुए चिल्लाया।

"मौत तो बहुत आसान सज़ा है शांतनु," आर्यन ने शांतनु के बालों को मुट्ठी में पकड़कर उसका चेहरा ऊपर उठाया। "अगर मैं तुम्हें मार देता, तो लोग तुम्हें एक शहीद नेता मान लेते। लेकिन अब... अब तुम अपनी बची हुई ज़िंदगी एक अपाहिज, एक लाचार कीड़े की तरह तिहाड़ जेल की सलाखों के

पीछे गुज़ारोगे। तुम हर दिन टीवी पर खुद को ज़लील होते देखोगे। यही मेरा इंतकाम है।"

आर्यन ने शांतनु का सिर ज़मीन पर पटक दिया।

तभी बाहर कॉरिडोर में पुलिस के भारी जूतों की आवाज़ सुनाई दी। विराजराजपूत और उसकी एसटीएफ टीम ने मेन गेट का दरवाज़ा तोड़कर अंदर एंट्री ले ली थी।

"पूरे घर को घेर लो! कोई ज़िंदा बचना नहीं चाहिए!" विराजकी आवाज़ आ रही थी।

आर्यन जानता था कि अगर विराजने उसे देख लिया, तो वो उसे सीधे शूट कर देगा। आर्यन ने उस सीक्रेट रूम के पीछे लगे एक बड़े से ओक-वुड पैनल को ज़ोर से धक्का दिया। यह एक हिडन एस्केप टनल थी, जिसे शांतनु अपने भागने के लिए इस्तेमाल करने वाला था।

टनल का दरवाज़ा खुला। आर्यन ने एक आखिरी बार ज़मीन पर तड़पते हुए शांतनु मुखर्जी को देखा, एक ठंडी मुस्कान दी और उस अंधेरी टनल में गायब हो गया।

कुछ ही सेकंड बाद, विराजराजपूत अपनी पिस्तौल ताने उस स्टडी रूम में दाखिल हुआ।

अंदर का नज़ारा देखकर विराजभी एक पल के लिए सन्न रह गया। फायरप्लेस में फाइलें जल रही थीं और राज्य का सबसे ताकतवर नेता, शांतनु मुखर्जी, खून से लथपथ ज़मीन पर पड़ा दर्द से कराह रहा था।

"डीसीपी..." शांतनु ने विराजकी तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा। "मुझे... मुझे अस्पताल ले चलो। मैं तुम्हें... तुम्हें कमिश्नर बना दूंगा।"

विराजने अपनी पिस्तौल नीचे की और शांतनु के पास आकर घुटने के बल बैठ गया। उसने शांतनु की हालत देखी और फिर उसकी नज़र उस पैसों से भरे डफेल बैग पर गई।

"कमिश्नर बनने का वक्त जा चुका है सर," विराजने मुस्कुराते हुए अपनी जेब से हथकड़ी निकाली। "आपकी गिरफ्तारी से मुझे जो मेडल मिलेगा, वो मुझे सीधा डीजीपी की कुर्सी पर बैठाएगा। यू आर अंडर अरेस्ट, शांतनु मुखर्जी।"

विराजने शांतनु के खून से सने हाथों में हथकड़ी पहना दी।

राज्य के सबसे बड़े राजनीतिक साम्राज्य का पतन हो चुका था।

सुबह के छह बज रहे थे। अरावली की पहाड़ियों के पीछे से सूरज की पहली किरण फूट रही थी। बारिश धुल चुकी थी और हवा में एक अजीब सी ठंडक और ताज़गी थी।

फार्महाउस से करीब पांच किलोमीटर दूर, हाईवे के किनारे एक छोटे से चाय के खोखे पर तनिशा खड़ी थी। उसने अपना लैपटॉप बैग कसकर पकड़ा हुआ था।

तभी हाईवे के दूसरी तरफ से एक पुरानी बाइक की आवाज़ आई। आर्यन प्रताप अपनी बाइक रोकता हुआ खोखे के पास पहुंचा। उसका हुडी खून और कीचड़ से सना था, लेकिन उसके चेहरे पर एक अजीब सा सुकून था, जो उसने पिछले पांच सालों में कभी महसूस नहीं किया था।

तनिशा ने राहत की सांस ली और एक फीकी सी मुस्कान के साथ उसकी तरफ बढ़ी।

"शांतनु अरेस्ट हो गया है," तनिशा ने अपना फोन आर्यन को दिखाते हुए कहा, जिस पर ब्रेकिंग न्यूज़ फ्लैश हो रही थी: *'पार्टी प्रेसिडेंट शांतनु मुखर्जी को डीसीपी विराजराजपूत ने किया गिरफ्तार। विक्रम बजाज हत्याकांड में मुख्य आरोपी।'*

आर्यन ने स्क्रीन को देखा और सिर हिलाया। "मुझे पता है। मैंने ही उसे अपाहिज करके विराजके लिए छोड़ा था।"

तनिशा थोड़ी हैरान हुई, लेकिन फिर वो समझ गई कि आर्यन ने अपने तरीके से इंसाफ कर लिया है।

"अब तुम्हारा क्या प्लान है आर्यन? पुलिस अभी भी तुम्हें ढूंढ रही है। 14 अगस्त की रात तुम उस गाड़ी में थे, तुम पर भी केस चलेगा," तनिशा ने पूछा।

"मैं भागूंगा नहीं तनिशा। मैं आज शाम कोर्ट में सरेंडर कर दूंगा," आर्यन ने चाय के खोखे वाले से एक कप चाय लेते हुए कहा। "मैंने वो जुर्म नहीं किया, लेकिन मैंने उसे छुपाने की कोशिश ज़रूर की थी। मुझे उसकी सज़ा मिलनी चाहिए। जब तक मेरी स्लेट पूरी तरह साफ नहीं हो जाती, मैं वापस नहीं आऊंगा।"

"और माया चौधरी?" तनिशा ने एक गहरी सांस लेते हुए कहा। "शांतनु और तुम, दोनों रास्ते से हट गए हो। अब सत्ता माया के हाथों में जा रही है। वो इस पूरे खेल की असली मास्टरमाइंड बन बैठी है।"

आर्यन ने चाय का घूंट लिया और उसकी आंखों में फिर से वही शिकारी वाली चमक आ गई।

"माया को लगता है कि उसने गेम जीत लिया है," आर्यन ने बाइक स्टार्ट करते हुए कहा। "लेकिन उसे नहीं पता कि जिस सत्ता को उसने धोखे और ब्लैकमेल से हासिल किया है, उसकी नींव बहुत कमज़ोर है। मैं जेल जाऊंगा तनिशा... लेकिन मैं वापस भी आऊंगा। और जब मैं वापस आऊंगा, तो मैं माया चौधरी का वो हश्र करूंगा, जो उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा।"

आर्यन ने तनिशा की तरफ देखा। "अपना चैनल तैयार रखना। दूसरा भाग बहुत जल्द शुरू होगा।"

आर्यन ने बाइक का गियर डाला और सुबह के उस धुंधलके में हाईवे पर आगे बढ़ गया, पीछे एक ऐसा तूफान छोड़कर जिसने राज्य की पूरी राजनीति को हमेशा के लिए बदल दिया था।

## अध्याय 15:

छः महीने बीत चुके थे। राजधानी की राजनीति का वो खूनी तूफान अब शांत नज़र आ रहा था, लेकिन सत्ता के गलियारों में सन्नाटा हमेशा किसी नए बवंडर की आहट होता है।

शांतनु मुखर्जी तिहाड़ जेल के अस्पताल में व्हीलचेयर पर अपनी ज़िंदगी के दिन गिन रहा था। आर्यन प्रताप ने अपने वादे के मुताबिक सरेंडर कर दिया था और विक्रम बजाज के एक्सीडेंट को छुपाने के जुर्म में वो भी तिहाड़ की हाई-सिक्योरिटी सेल में बंद था।

और राज्य की मुख्यमंत्री की कुर्सी पर अब वो औरत बैठी थी, जिसने इस पूरी बिसात को अपने रेशमी फंदों से बुना था— **माया चौधरी**।

रात के ग्यारह बज रहे थे। मुख्यमंत्री का आधिकारिक बंगला, जिसे अब माया ने अपने शाही महल में तब्दील कर दिया था, बाहर से शांत लेकिन अंदर से वासना और साज़िश की गर्मी में सुलग रहा था।

बंगले के प्राइवेट पूल साइड पर मद्धिम नीली रोशनी फैली थी। हवा में क्यूबन सिगार और महंगे शनेल इत्र की मिली-जुली खुशबू तैर रही थी। माया पूल के किनारे एक मखमली लाउंजर पर लेटी थी। उसने एक बेहद छोटी और पारदर्शी ब्लैक सैटिन स्लिप पहनी हुई थी, जो उसके पानी से भीगे हुए सुडौल बदन पर किसी दूसरी त्वचा की तरह चिपकी थी।

उसके सामने एक छब्बीस साल का बेहद हैंडसम और एथलेटिक लड़का बैठा था— **विक्रांत रायचंद**। विक्रांत देश के सबसे बड़े कॉर्पोरेट घरानों का चीफ लॉबीस्ट था। उसका काम था बड़े नेताओं को खरीदना और करोड़ों के टेंडर पास करवाना। लेकिन माया चौधरी को खरीदना इतना आसान नहीं था; उसे जीतना पड़ता था।

"तुम जानते हो विक्रांत, तुम्हारी कंपनी का वो माइनिंग टेंडर मेरी एक साइन का मोहताज है," माया ने अपने हाथ में पकड़े शैम्पेन के ग्लास को हल्के से घुमाते हुए अपनी मादक आवाज़ में कहा।

विक्रांत ने अपना सिगार ऐशट्रे में रखा और अपनी शर्ट के बटन खोलते हुए माया के करीब आ गया। "मैं टेंडर मांगने नहीं आया हूं माया। मैं तुम्हें वो देने आया हूं, जो तुम्हें चीफ मिनिस्टर से प्राइम मिनिस्टर बना सकता है," विक्रांत की नज़रें माया के क्लीवेज पर टिकी थीं।

माया के होठों पर एक शैतानी मुस्कान आ गई। "मुझे वादे नहीं, परफॉरमेंस पसंद है विक्रांत। राजनीति में भी और बिस्तर पर भी।"

विक्रांत ने बिना एक शब्द कहे माया के हाथ से शैम्पेन का ग्लास लिया और उसे टेबल पर रख दिया। उसने माया की कमर को अपनी मज़बूत बाहों में भरा और उसे लाउंजर से उठाकर सीधे अपने ऊपर खींच लिया। माया ने अपनी आंखें बंद कर लीं जब विक्रांत के गर्म और भूखे होंठ उसकी गर्दन को चूमने लगे।

माया की उंगलियां विक्रांत के बालों में उलझ गईं। वो एक ताकतवर मुख्यमंत्री थी, लेकिन इस वक्त वो एक जवान और मस्कुलर जिस्म की गर्मी में पूरी तरह पिघल रही थी। विक्रांत के हाथ माया की सैटिन स्लिप को पार करते हुए उसके जिस्म के हर कर्व को टटोल रहे थे। पूल साइड का वो सन्नाटा अब माया की मदहोश सिसकियों और कपड़ों की सरसराहट से टूट रहा था।

"मैं इस राज्य की मालकिन हूं..." माया ने हांफते हुए विक्रांत के कान में फुसफुसाया।

"और मैं तुम्हारा सबसे वफादार गुलाम," विक्रांत ने माया को पलटा और उसे लाउंजर पर लिटाते हुए उसके जिस्म पर टूट पड़ा। वासना और ताकत के इस खौफनाक कॉकटेल में माया पूरी तरह अंधी हो चुकी थी।

लेकिन माया को ये नहीं पता था कि जब वो आंखें बंद करके विक्रांत के पसीने से लथपथ सीने को चूम रही थी, तब विक्रांत की आंखें खुली थीं। उसकी नज़रें लाउंजर के पास टेबल पर रखी माया की सीक्रेट लाल डायरी पर थीं। विक्रांत सिर्फ एक लॉबीस्ट नहीं था, वो किसी और का मोहरा था, जिसे माया के बेडरूम में बहुत सफाई से प्लांट किया गया था।

अगली सुबह, द नेशनल ट्रुथ का न्यूज़रूम अपनी पूरी रफ्तार पर था। तनिशा अब सिर्फ एक रिपोर्टर नहीं, बल्कि चैनल की मैनेजिंग एडिटर बन चुकी थी। उसका रुतबा अब किसी बड़े नेता से कम नहीं था, लेकिन उसके अंदर की वो खोजी पत्रकार अभी भी ज़िंदा थी।

तनिशा अपनी डेस्क पर बैठी एक अनजान लिफाफे को घूर रही थी, जो सुबह उसे उसकी कार के वाइपर पर फंसा हुआ मिला था।

उसने लिफाफा खोला। अंदर कोई चिट्ठी नहीं थी, सिर्फ एक पेन ड्राइव थी। तनिशा ने अपने सिक्योर लैपटॉप में पेन ड्राइव लगाई। उसमें सिर्फ एक तस्वीर थी।

तस्वीर रात के अंधेरे में खींची गई थी। उसमें विक्रांत रायचंद की कार मुख्यमंत्री आवास के पिछले गेट से अंदर जाती हुई दिख रही थी। और तस्वीर के नीचे एक लाइन लिखी थी— *"विक्रम बजाज की मौत के 50 करोड़ शांतनु ने नहीं, विक्रांत रायचंद के बॉस ने दिए थे। माया अब उसी के साथ सो रही है।"*

तनिशा की रीढ़ की हड्डी में एक ठंडी सिहरन दौड़ गई। छः महीने पहले उसे लगा था कि शांतनु मुखर्जी के अरेस्ट के साथ कहानी खत्म हो गई है। लेकिन ये तस्वीर बता रही थी कि असली खूनी, असली मास्टरमाइंड अभी भी आज़ाद है और अब उसने माया चौधरी को अपने जाल में फंसा लिया है।

"मुझे तिहाड़ जाना होगा," तनिशा ने अपना लेदर जैकेट उठाया और अपने असिस्टेंट को आवाज़ दी। "मेरा आज दोपहर का ब्रॉडकास्ट कैंसल कर दो। मेरी एक ज़रूरी मीटिंग है।"

तिहाड़ जेल का सेल नंबर 420। ये कोई आम सेल नहीं था। हाई-प्रोफाइल कैदियों के लिए बने इस सेल में टीवी, किताबें और एक छोटा सा अटैच्ड वॉशरूम था।

आर्यन प्रताप ज़मीन पर बैठा पुश-अप्स लगा रहा था। छः महीने की जेल ने उसे कमज़ोर नहीं किया था, बल्कि उसकी बॉडी अब पहले से ज़्यादा मस्कुलर और लीन हो गई थी। उसके चेहरे पर बढ़ी हुई दाढ़ी और आंखों में एक खामोश आग उसे पहले से भी ज़्यादा खतरनाक बना रही थी।

तभी जेल के वॉर्डन ने लोहे की सलाखों पर डंडा मारा। "कैदी नंबर 420, तुम्हारे लिए एक वीआईपी मुलाकाती है। विज़िटर रूम में चलो।"

आर्यन ने पसीना पोंछा, अपनी सफेद टी-शर्ट पहनी और वॉर्डन के पीछे-पीछे विज़िटर रूम की तरफ चल दिया।

विज़िटर रूम में एक कांच की दीवार के दोनों तरफ कुर्सियां लगी थीं। तनिशा वहां पहले से बैठी थी। उसने आर्यन को देखा तो वो एक पल के लिए सन्न रह गई। ये वो आर्यन प्रताप नहीं था जो चुनाव हारने के डर से कांपता था; ये एक ऐसा खूंखार बागी था जो सिर्फ सही वक्त का इंतज़ार कर रहा था।

आर्यन कुर्सी पर बैठा और उसने इंटरकॉम का फोन उठाया। तनिशा ने भी अपना फोन उठाया।

"तुम काफी फिट लग रहे हो आर्यन," तनिशा ने बात शुरू की।

"शेर जब पिंजरे में होता है, तो वो शिकार करना नहीं भूलता तनिशा, वो बस अपनी छलांग लंबी करने की तैयारी करता है," आर्यन ने बिना मुस्कुराए कहा। "तुम यहां मेरा इंटरव्यू लेने तो नहीं आई हो। क्या मिला है तुम्हें?"

तनिशा ने वो तस्वीर कांच की दीवार पर चिपका दी। "विक्रांत रायचंद। ये कल रात माया के बंगले पर था। किसी ने मुझे ये टिप दी है कि विक्रम बजाज की मौत का पैसा विक्रांत के नेटवर्क से आया था। आर्यन, क्या तुम्हें पता है कि विक्रांत कौन है?"

आर्यन ने तस्वीर को देखा और उसके होठों पर एक ठंडी, कैलकुलेटेड मुस्कान आ गई।

"मुझे पता है तनिशा। क्योंकि वो तस्वीर मेरे ही आदमियों ने तुम्हें भेजी है," आर्यन ने बम फोड़ते हुए कहा।

तनिशा की आंखें फटी रह गईं। "क्या? तुम जेल के अंदर से अपना खुफिया नेटवर्क चला रहे हो?"

"मैंने तुमसे कहा था तनिशा, मैं अपनी स्लेट साफ करने आया हूं," आर्यन की आवाज़ भारी और रहस्यमयी हो गई। "शांतनु सिर्फ एक पॉलिटिकल फेस था। लेकिन जो 50 करोड़ रुपये विक्रम बजाज को दिए गए थे, वो 'रायचंद ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़' के थे। वो लोग इस राज्य की सारी खदानों पर कब्ज़ा करना चाहते थे। शांतनु उनका मोहरा था। और अब, माया चौधरी उनकी नई मोहरी बन चुकी है।"

"लेकिन विक्रांत तो माया के साथ... वो उसके बेडरूम तक पहुंच गया है," तनिशा ने कहा।

"यही तो माया की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। उसका जिस्मानी लालच और उसकी सत्ता की भूख," आर्यन अपनी कुर्सी के आगे झुका। "विक्रांत रायचंद माया से वो माइनिंग टेंडर साइन करवाने आया है, जो राज्य को हज़ारों करोड़ का चूना लगाएगा। माया सोच रही है कि वो विक्रांत का इस्तेमाल कर रही है, लेकिन असल में विक्रांत माया को एक ऐसे स्कैंडल में फंसा रहा है, जिसके बाद माया सीएम की कुर्सी तो क्या, तिहाड़ की इस ज़मीन पर भी बैठने लायक नहीं रहेगी।"

"हम क्या कर सकते हैं? तुम तो अंदर हो," तनिशा ने उलझन में पूछा।

"मैं अंदर हूं, लेकिन तुम बाहर हो तनिशा," आर्यन ने अपनी हथेली कांच पर रखी। "विक्रांत रायचंद आज रात 'द ओबेरॉय' में एक बहुत बड़ी सीक्रेट पार्टी

कर रहा है। वहां वो टेंडर साइन होने वाला है। तुम्हें उस पार्टी में घुसना होगा। तुम्हें विक्रांत और माया के उस कॉन्ट्रैक्ट की कॉपी चाहिए।"

"मैं एक जर्नलिस्ट हूं, स्पाई (जासूस) नहीं आर्यन! मुझे वहां एंट्री कैसे मिलेगी?"

"तुम्हें एंट्री वो दिलाएगा, जो इस वक्त विक्रांत रायचंद की सिक्योरिटी का इंचार्ज है," आर्यन ने मुस्कुराते हुए कहा।

"कौन?"

"गजराज," आर्यन ने एक और बड़ा धमाका किया।

"गजराज? शांतनु का वो एनकाउंटर स्पेशलिस्ट कुत्ता? वो तुम्हें मारने के लिए घूम रहा था आर्यन, वो मेरी मदद क्यों करेगा?" तनिशा लगभग अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई।

"क्योंकि मैंने गजराज को वो दे दिया है, जो शांतनु उसे कभी नहीं दे पाया—उसकी ज़िंदगी की कीमत," आर्यन की आंखों में एक अजीब सा कॉन्फिडेंस था। "जब शांतनु अरेस्ट हुआ, तो गजराज दर-दर भटक रहा था। मैंने अपने आदमियों से कहकर गजराज को विदेश भागने का पैसा दिया और उसे विक्रांत की सिक्योरिटी टीम में प्लांट करवाया। गजराज अब मेरे लिए काम करता है।"

तनिशा आर्यन को घूरती रह गई। ये आदमी जेल में बैठकर पूरे राज्य की शतरंज खेल रहा था। माया को लग रहा था कि वो जीत गई है, लेकिन असल में आर्यन ने माया के चारों तरफ एक ऐसा चक्रव्यूह रच दिया था, जिससे बाहर निकलना नामुमकिन था।

"आज रात ओबेरॉय के बेसमेंट में गजराज तुम्हें मिलेगा। वो तुम्हें विक्रांत के प्राइवेट सुइट का एक्सेस कार्ड देगा," आर्यन ने इंटरकॉम रखने से पहले कहा। "माया के उस रेशमी महल में आज आग लगने वाली है तनिशा। बस ध्यान रखना कि तुम उस आग में ना जल जाओ।"

आर्यन ने फोन रखा, एक ठंडी मुस्कान दी और वापस अपने सेल की तरफ मुड़ गया।

तनिशा ने गहरी सांस ली। सत्ता का ये नया स्कैंडल पहले वाले से भी ज़्यादा गंदा, ज़्यादा खूनी और ज़्यादा मदहोश करने वाला था। और अब वो सीधे शेर की मांद में घुसने वाली थी।

## अध्याय 16:

रात के दस बज चुके थे। दिल्ली का फाइव-स्टार 'द ओबेरॉय' होटल आज किसी शाही महल की तरह जगमगा रहा था। होटल के सबसे एक्सक्लूसिव रूफटॉप लाउंज में विक्रांत रायचंद की सीक्रेट कॉकटेल पार्टी चल रही थी। शहर के टॉप बिजनेसमैन, मॉडल्स और ब्यूरोक्रेट्स शैम्पेन के ग्लास लिए सत्ता के इस नए पावर-ब्रोकर के इर्द-गिर्द मंडरा रहे थे।

होटल के अंडरग्राउंड पार्किंग बेसमेंट में एक मर्सिडीज आकर रुकी। ड्राइविंग सीट से तनिशा बाहर निकली। आज उसने अपनी पुरानी डेनिम और बिखरे बालों वाला रिपोर्टर लुक पूरी तरह से त्याग दिया था। उसने एक बेहद खूबसूरत, डीप-नेक और थाई-हाई स्लिट वाला एमराल्ड ग्रीन इवनिंग गाउन पहना था। उसके बाल सलीके से सेट थे और डार्क रेड लिपस्टिक उसे किसी हाई-सोसाइटी सोशलाइट का लुक दे रही थी।

"रिपोर्टिंग का क्या-क्या रूप लेना पड़ता है," तनिशा ने गाड़ी के शीशे में खुद को देखते हुए बड़बड़ाया।

तभी अंधेरे पिलर के पीछे से एक लंबा-चौड़ा साया बाहर निकला। वह गजराज था। उसने काले रंग का परफेक्ट टेलर्ड सूट पहना हुआ था और उसके कान में एक वायरलेस इयरपीस लगा था।

तनिशा का शरीर एक पल के लिए तन गया। यह वही आदमी था जिसने कुछ महीने पहले पहाड़गंज की छतों पर उसे मारने के लिए गोलियां चलाई थीं।

"डरो मत मैडम," गजराज की आवाज़ अभी भी उतनी ही खुरदुरी और ठंडी थी। "मैं अब आर्यन प्रताप का वफादार हूं। उसने मुझे ज़िंदगी दी है।"

गजराज ने अपनी जेब से एक वीआईपी मास्टर की-कार्ड निकाला और तनिशा की तरफ बढ़ा दिया।

"ये विक्रांत रायचंद के प्रेसिडेंशियल सुइट नंबर 1001 का एक्सेस कार्ड है। विक्रांत अभी रूफटॉप पार्टी में है, लेकिन वो किसी भी वक्त अपनी 'खास मेहमान' के साथ नीचे आ सकता है। तुम्हारे पास सिर्फ पंद्रह मिनट हैं। सुइट के अंदर स्टडी टेबल पर एक बायोमेट्रिक ब्रीफकेस है। मैंने उसका लॉक डिसेबल कर दिया है। अंदर वो टेंडर और कॉन्ट्रैक्ट की कॉपी है। फोटो खींचो और पीछे वाले सर्विस एलिवेटर से निकल जाओ।"

"थैंक्स गजराज," तनिशा ने कार्ड लिया और बेसमेंट की प्राइवेट लिफ्ट की तरफ बढ़ गई।

सुइट 1001 का दरवाज़ा एक हल्की सी बीप के साथ खुला। अंदर का नज़ारा बेहद आलीशान था। इटैलियन मार्बल का फर्श, क्रिस्टल शैंडेलियर और बड़ी-बड़ी कांच की खिड़कियां जिनसे पूरा शहर दिख रहा था।

तनिशा बिना वक्त बर्बाद किए सीधे बेडरूम से लगे हुए छोटे स्टडी एरिया में गई। गजराज ने सही कहा था। वहां महोगनी की टेबल पर एक स्लीक सिल्वर ब्रीफकेस रखा था। तनिशा ने जैसे ही उसका बटन दबाया, वो खटक से खुल गया।

अंदर कई लीगल डॉक्यूमेंट्स थे। तनिशा ने अपना फोन निकाला और उनकी तस्वीरें खींचने लगी। 'स्टेट माइनिंग लीज़ - रायचंद कॉर्पोरेशन'।

लेकिन जैसे ही वो पन्ने पलट रही थी, उसकी नज़र एक सीक्रेट एनेक्सचर पर पड़ी। इस पर 'टॉप सीक्रेट' की लाल मुहर लगी थी। तनिशा ने उसे पढ़ा तो उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

ये महज़ एक माइनिंग टेंडर नहीं था। रायचंद ग्रुप जिस ज़मीन पर कब्ज़ा कर रहा था, वहां कोयला या लोहा नहीं, बल्कि हज़ारों करोड़ का अवैध यूरेनियम दबा था। विक्रांत की कंपनी इसे विदेशी ब्लैक मार्केट में बेचने का प्लान बना रही थी। और सबसे खौफनाक बात ये थी कि इस कॉन्ट्रैक्ट पर माया चौधरी के साइन हो चुके थे!

अचानक, सुइट के मेन दरवाज़े का इलेक्ट्रॉनिक लॉक बीप हुआ।

तनिशा की सांसें अटक गईं। किसी के अंदर आने की आवाज़ हुई।

"विक्रांत... मुझे नफरत है जब मुझे इंतज़ार करना पड़ता है," माया चौधरी की मादक और सत्ता के गुरूर से भरी आवाज़ सुइट में गूंजी।

तनिशा को भागने का कोई रास्ता नहीं मिला। वो तुरंत स्टडी एरिया से सटी हुई बड़ी सी वॉक-इन क्लॉसेट में घुस गई और डिज़ाइनर कोट की लंबी कतार के पीछे छुप गई। क्लॉसेट के दरवाज़े की हल्की सी झिरी से उसे बेडरूम का नज़ारा साफ दिख रहा था।

माया चौधरी बेडरूम में दाखिल हुई। उसने एक लंबा क्रीम कलर का ट्रेंच कोट पहना हुआ था। उसके पीछे-पीछे विक्रांत रायचंद अंदर आया। विक्रांत

ने दरवाज़ा लॉक किया और अपनी टाई को ढीला करते हुए माया की तरफ बढ़ा।

"एक मुख्यमंत्री को इंतज़ार करवाना मेरी शान के खिलाफ है माया," विक्रांत ने माया की कमर में हाथ डालकर उसे अपनी तरफ खींचा।

"मैं सिर्फ एक मुख्यमंत्री नहीं हूं विक्रांत, मैं इस राज्य की मलिका हूं। और तुम मेरे पैरों में पड़े एक मोहरे," माया ने विक्रांत की आंखों में घूरते हुए अपना ट्रेंच कोट खोल दिया।

कोट के नीचे माया ने सिर्फ एक ब्लैक लेस लॉन्ज़री और थाई-हाई स्टॉकिंग्स पहनी हुई थीं। उसका हुस्न इतना कातिलाना और बोल्ड था कि विक्रांत की आंखें फटी रह गईं। माया जानती थी कि मर्दों के गुरूर को कैसे तोड़ना है। उसने विक्रांत को ज़ोर से धक्का दिया जिससे विक्रांत पीछे रखे किंग-साइज़ बेड पर गिर पड़ा।

माया धीमी चाल चलते हुए बिस्तर के पास आई और विक्रांत के ऊपर चढ़कर बैठ गई। "तुमने वो यूरेनियम वाली बात मुझसे छुपाई थी विक्रांत," माया ने विक्रांत की शर्ट के बटन बेरहमी से खींचकर तोड़ दिए। "लेकिन मुझे सब पता है। मेरी साइन की कीमत अब डबल होगी।"

"तुम बहुत लालची हो माया," विक्रांत ने हांफते हुए माया की नंगी पीठ को अपने हाथों से जकड़ लिया और उसे अपने सीने पर खींच लिया।

"लालच ही तो मेरा परफ्यूम है डार्लिंग," माया ने विक्रांत के होठों को एक जंगली और भूखे चुंबन में कैद कर लिया।

कमरे का तापमान मानों उबलने लगा। कपड़ों की सरसराहट और दोनों की भारी, मदहोश सांसों ने सन्नाटे को चीर दिया। माया विक्रांत पर पूरी तरह से हावी थी। उसका हर स्पर्श, हर मूवमेंट विक्रांत को पागल कर रहा था। विक्रांत ने माया को पलटा और उसे रेशमी चादरों में दबा लिया। दोनों वासना और ताकत की एक ऐसी आग में जल रहे थे जहां कोई किसी का सगा नहीं था।

वॉक-इन क्लॉसेट के अंदर छिपी तनिशा का गला सूख रहा था। वो अपनी सांसें रोककर खड़ी थी। उसे इन दोनों की इस अंधी हवस से घिन आ रही थी, लेकिन यही उसके लिए भागने का सबसे अच्छा मौका था।

बिस्तर पर माया और विक्रांत जब अपनी चरम उत्तेजना में डूबे थे और उनकी सिसकियां तेज़ हो गई थीं, तनिशा दबे पांव क्लॉसेट से बाहर निकली। उसने

अपना फोन और ब्रीफकेस से लिए गए कुछ ओरिजिनल पन्ने अपने क्लच में डाले और बेडरूम के दरवाज़े की तरफ रेंगते हुए बढ़ने लगी।

तभी बेडरूम के साइड टेबल पर रखा विक्रांत का प्राइवेट सैटेलाइट फोन वाइब्रेट होने लगा।

विक्रांत की आंखें खुलीं। वो माया के जिस्म की गिरफ्त से किसी तरह बाहर निकला। "रुक जाओ माया... ये मेरे डैड का कॉल है। बहुत ज़रूरी है।"

माया ने झुंझलाते हुए एक तकिया विक्रांत पर फेंका और चादर से अपना बदन ढक लिया।

विक्रांत ने फोन उठाया और बेडरूम से बाहर लिविंग एरिया की तरफ आ गया। तनिशा लिविंग एरिया के एक बड़े सोफे के पीछे दुबक गई।

"यस डैड," विक्रांत ने फोन कान से लगाया। वो पूरी तरह नंगा था और उसका शरीर पसीने से चमक रहा था। "हां, माया ने साइन कर दिए हैं। वो औरत पूरी तरह से मेरे कंट्रोल में है। उसे लगता है कि वो मुझे यूज़ कर रही है, लेकिन कल सुबह जब ये यूरेनियम स्कैंडल मीडिया में लीक होगा, तो सारा इल्ज़ाम माया के सिर जाएगा और हम साफ बच निकलेंगे।"

तनिशा की आंखें फटी रह गईं। विक्रांत माया को फंसा रहा था!

"और आर्यन प्रताप?" विक्रांत की अगली लाइन सुनकर तनिशा के रोंगटे खड़े हो गए। "डैड, आप फिक्र मत कीजिए। तिहाड़ जेल के जेलर को हमारे अकाउंट से दस करोड़ ट्रांसफर हो चुके हैं। आज रात ठीक बारह बजे आर्यन प्रताप के सेल में जेल के ही कुछ खूंखार कैदी घुसेंगे। उसे चाकू से गोदकर मार दिया जाएगा। सुबह न्यूज़ आएगी कि गैंग-वॉर में आर्यन की मौत हो गई। हमारा आखिरी कांटा भी निकल जाएगा।"

फोन कट गया। विक्रांत वापस बेडरूम में चला गया।

तनिशा का दिल किसी बुलेट ट्रेन की तरह धड़क रहा था। उसने अपनी घड़ी देखी। रात के ग्यारह बजकर चालीस मिनट (11:40 PM) हो रहे थे।

आर्यन प्रताप की मौत में सिर्फ बीस मिनट बचे थे!

तनिशा तुरंत सुइट के बाहर निकली और सर्विस एलिवेटर की तरफ भागी। उसे किसी भी तरह तिहाड़ जेल पहुंचना था या वहां किसी को फोन करना था। आर्यन ने अपनी जान दांव पर लगाकर उसे ये सुबूत दिलवाए थे। वो आर्यन को मरने नहीं दे सकती थी।

बेसमेंट में पहुंचते ही तनिशा ने गजराज को देखा।

"गजराज! आर्यन की जान खतरे में है! विक्रांत ने तिहाड़ में उसे मारने की सुपारी दी है, ठीक बारह बजे!" तनिशा चिल्लाई।

गजराज का सख्त चेहरा भी एक पल के लिए सफेद पड़ गया। उसने अपनी गाड़ी की चाबी निकाली और तनिशा की तरफ फेंकी। "तुम निकलो तनिशा! मैं विक्रांत को यहां देखता हूं!"

तनिशा अपनी मर्सिडीज में बैठी और एक्सीलरेटर पूरी ताकत से दबा दिया। कार ओबेरॉय की पार्किंग से निकलकर दिल्ली की खाली सड़कों पर हवा से बातें करने लगी।

तिहाड़ जेल का सेल नंबर 420।

रात का खामोश अंधेरा। आर्यन प्रताप अपनी सीमेंट की ठंडी स्लैब पर लेटा था। उसकी आंखें बंद थीं, लेकिन वो सो नहीं रहा था। उसका दिमाग शतरंज की चालें चल रहा था।

अचानक, सेल के बाहर की लाइट बुझ गई। पूरा कॉरिडोर घुप अंधेरे में डूब गया।

आर्यन की आंखें झटके से खुलीं। उसने जेल में बिताए छः महीनों में ये सीख लिया था कि जब लाइट बिना वजह कटती है, तो इसका मतलब है कि मौत दरवाज़े पर है।

सेल का भारी लोहे का दरवाज़ा एक हल्की सी 'क्लिक' के साथ खुला। जेलर ने मास्टर कंट्रोल से लॉक खोल दिया था।

अंधेरे में चार भारी-भरकम साये सेल के अंदर दाखिल हुए। उनके हाथों में जेल की कैंटीन से चुराए गए तेज़ धार वाले चाकू और लोहे के सुए चमक रहे थे।

"आर्यन प्रताप... राम-राम बोल दे," उनमें से एक कैदी ने खूंखार आवाज़ में फुसफुसाया और अपना चाकू लेकर आर्यन की तरफ लपका।

आर्यन अपनी जगह से बिजली की फुर्ती से हटा। वो खाली हाथ था, लेकिन वो कोई कमज़ोर नेता नहीं था। तिहाड़ की सलाखों ने उसके अंदर के जानवर को पूरी तरह जगा दिया था।

चाकू सीधा स्लैब से टकराया। आर्यन ने मुड़कर उस कैदी के हाथ की कलाई को इतनी ज़ोर से मरोड़ा कि हड्डी टूटने की साफ आवाज़ आई। कैदी दर्द से चीखा, लेकिन बाकी तीन आर्यन पर एक साथ टूट पड़े।

एक लोहे का सुआ आर्यन के पेट को छूता हुआ निकल गया, जिससे उसकी टी-शर्ट खून से लाल हो गई।

सेल के उस घुप अंधेरे में अब एक खौफनाक और खूनी लड़ाई शुरू हो चुकी थी। विक्रांत रायचंद का मौत का फरमान आर्यन तक पहुंच चुका था, और आज रात या तो सत्ता की बिसात का ये बागी हमेशा के लिए दफ्न हो जाएगा, या फिर एक ऐसा खूनी खेल शुरू होगा जिसकी कल्पना विक्रांत और माया ने भी नहीं की थी।

## अध्याय 17:

तिहाड़ जेल के सेल नंबर 420 में छाया घुप अंधेरा अब मौत की चादर बन चुका था। आर्यन प्रताप के पेट के बायीं तरफ से खून की गर्म धार बह रही थी। लोहे का सुआ उसकी मांसपेशियों को चीर गया था, लेकिन इस दर्द ने उसके अंदर के उस खूंखार जानवर को जगा दिया था जो पिछले छः महीनों से सलाखों के पीछे सो रहा था।

अंधेरे में तीन साये एक साथ उसकी तरफ झपटे। आर्यन ने अपनी जगह से छलांग लगाई और सीधे सामने वाले कैदी के घुटने पर एक ज़ोरदार लात मारी। हड्डी टूटने की भयानक 'क्रैक' की आवाज़ गूंजी और वो कैदी चीखता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा।

"इसे घेर लो! ये ज़िंदा नहीं बचना चाहिए!" पीछे से एक भारी आवाज़ आई।

आर्यन ने अपनी टी-शर्ट फाड़कर अपने घाव पर कसकर बांधी। अब उसके पास खोने के लिए कुछ नहीं था। जब एक कैदी ने पीछे से चाकू से वार किया, तो आर्यन ने फुर्ती से झुककर उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने कंधे के ऊपर से घुमाकर सीमेंट की स्लैब पर दे मारा। कैदी का सिर स्लैब से टकराया और वो वहीं बेहोश हो गया।

अब सिर्फ लीडर बचा था। उसने अपना लंबा चाकू निकाला और आर्यन की तरफ अंधाधुंध वार करने लगा। आर्यन दीवार से सट गया। जैसे ही लीडर ने आखिरी वार किया, आर्यन ने उसके हाथ को दोनों हाथों से जकड़ा और पूरी ताकत से उसकी कलाई मरोड़ दी। चाकू ज़मीन पर गिर गया। आर्यन ने उसे कॉलर से पकड़ा और उसका गला दीवार से दबा दिया।

"किसने भेजा है तुम्हें?" आर्यन की आवाज़ किसी भूखे भेड़िये जैसी थी। उसका खून से सना चेहरा अंधेरे में भी खौफनाक लग रहा था।

"वि... विक्रांत रायचंद! उसने जेलर को दस करोड़ दिए हैं तेरी लाश के लिए!" लीडर हांफते हुए बोला।

आर्यन की आंखों में एक ठंडी चमक आ गई। "दस करोड़? बहुत सस्ती कीमत लगाई है मेरी।" आर्यन ने उस लीडर के चेहरे पर एक ज़ोरदार मुक्का मारा और उसे वहीं ढेर कर दिया।

सेल में अब चारों हत्यारे बेसुध पड़े थे, और आर्यन खून से लथपथ, भारी सांसें ले रहा था। उसे पता था कि जेलर कुछ ही मिनटों में उसकी लाश चेक करने आने वाला है। अब यहां से निकलने का सिर्फ एक ही रास्ता था।

उधर, 'द ओबेरॉय' के प्रेसिडेंशियल सुइट नंबर 1001 में वासना और धोखे का तापमान अपने चरम पर था।

विक्रांत रायचंद अपना फोन कॉल खत्म करके वापस बेडरूम में लौटा। कमरे की बत्तियां अभी भी मद्धिम थीं। माया चौधरी किंग-साइज़ बेड के बीचों-बीच लेटी थी। उसने अपना ब्लैक लेस लॉन्ज़री (Lingerie) भी उतार दिया था और अब उसका मखमली, नग्न बदन सिर्फ एक सफेद रेशमी चादर से आधा ढका हुआ था। उसकी गहरी क्लीवेज और सुडौल जांघें चादर के बाहर झांक रही थीं, जो किसी भी मर्द का ईमान डिगाने के लिए काफी थीं।

"कॉल खत्म हो गया डार्लिंग?" माया ने अपनी नशीली आंखों से विक्रांत को देखते हुए अपनी उंगली से उसे अपने पास बुलाया।

विक्रांत के अंदर की हवस एक बार फिर भड़क उठी। "तुम्हारी इस खूबसूरती के आगे बड़े-बड़े साम्राज्य छोटे लगते हैं माया," विक्रांत ने चादर को पूरी तरह से हटा दिया और माया के जिस्म पर टूट पड़ा।

माया ने विक्रांत के बालों को अपनी मुट्ठी में जकड़ा और उसके होठों को चूमने लगी। विक्रांत के हाथ माया की पीठ से होते हुए उसकी कमर तक फिसल रहे थे। माया का हर स्पर्श, हर करवट विक्रांत को एक अलग ही दुनिया में ले जा रही थी। माया ने विक्रांत को पलटा और वो उसके ऊपर आ गई।

"तुम्हें क्या लगा विक्रांत... सत्ता सिर्फ पैसों से मिलती है?" माया ने विक्रांत के सीने पर अपने नाखूनों से खरोंचते हुए, मदहोश आवाज़ में कहा। "सत्ता इस जिस्म की तरह होती है... जो इसे कंट्रोल करना सीख गया, दुनिया उसके कदमों में होती है।"

विक्रांत पूरी तरह से माया के इस कामुक मायाजाल में फंस चुका था। कमरे में सिर्फ दोनों की भारी सांसों और बिस्तर की चरमराहट की आवाज़ गूंज रही थी। माया विक्रांत पर हावी थी, वो उसे वो सब दे रही थी जिसकी विक्रांत ने कल्पना भी नहीं की थी। इस अंधी हवस में विक्रांत यह भूल गया था कि वो जिस औरत के साथ बिस्तर पर है, वो राज्य की सबसे खतरनाक और शातिर मुख्यमंत्री है।

कुछ देर बाद, जब दोनों पसीने से तर-बतर होकर एक-दूसरे से अलग हुए, तो विक्रांत गहरी सांसें लेते हुए बिस्तर पर लेट गया। माया उठी, उसने अपना लाल रंग का सिल्क रोब पहना और वाइन का ग्लास भरने लगी।

"माया... वो कॉन्ट्रैक्ट," विक्रांत ने अचानक उठते हुए कहा। हवस का नशा उतरते ही उसे यूरेनियम टेंडर की याद आई।

विक्रांत नंगा ही बिस्तर से उठा और स्टडी टेबल की तरफ गया। उसने अपना सिल्वर ब्रीफकेस देखा।

ब्रीफकेस का ढक्कन हल्का सा खुला हुआ था।

विक्रांत के दिल की धड़कन रुक गई। उसने झटके से ब्रीफकेस खोला। अंदर के पन्ने बिखरे हुए थे और वो 'टॉप सीक्रेट' वाला यूरेनियम एनेक्सचर अपनी जगह पर नहीं था।

"माई गॉड!" विक्रांत के मुंह से चीख निकल गई।

माया वाइन का ग्लास हाथ में लिए इत्मीनान से चलकर उसके पास आई। "क्या हुआ विक्रांत? कोई खज़ाना लुट गया क्या?" उसके होठों पर एक बहुत ही रहस्यमयी और शातिर मुस्कान थी।

"पेपर... वो कॉन्ट्रैक्ट! किसी ने चोरी कर लिया है!" विक्रांत पागलों की तरह कमरे में इधर-उधर देखने लगा।

"अरे विक्रांत, तुम तो बहुत कच्चे खिलाड़ी निकले," माया ने वाइन का घूंट लिया और विक्रांत के बिल्कुल करीब आकर फुसफुसाई। "तुम्हें क्या लगा? मैं आंखें बंद करके उस यूरेनियम वाले पन्ने पर साइन कर दूंगी और तुम वो इल्ज़ाम मेरे सिर पर मढ़ दोगे? वो पन्ना मैंने ही तनिशा को चोरी करने दिया है।"

विक्रांत की आंखें फटी की फटी रह गईं। "तुम... तुमने ये सब जानबूझकर किया?"

"बिल्कुल," माया ने ज़ोर से हंसते हुए कहा। "वो जो सिग्नेचर तुमने उस पन्ने पर देखे थे, वो मेरे नहीं थे। वो तुम्हारे बाप, रायचंद के जाली सिग्नेचर थे। कल सुबह जब तनिशा वो पेपर्स टीवी पर फ्लैश करेगी, तो पूरा रायचंद ग्रुप देशद्रोह के इल्ज़ाम में अरेस्ट होगा। और मैं... मैं राज्य की वो ईमानदार मुख्यमंत्री कहलाऊंगी जिसने एक बड़े कॉर्पोरेट घोटाले का पर्दाफाश किया।"

विक्रांत को लगा जैसे किसी ने उसके पैरों तले से ज़मीन खींच ली हो। माया चौधरी ने अपने हुस्न और हवस का इस्तेमाल करके उसे इतना अंधा कर दिया था कि विक्रांत अपनी ही मौत के कुएं में कूद गया था।

रात के बारह बजकर पैंतालीस मिनट (12:45 AM)।

तनिशा की मर्सिडीज 150 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दिल्ली की खाली सड़कों को चीर रही थी। उसका पैर एक्सीलरेटर से हट नहीं रहा था। स्टीयरिंग पर उसके हाथ पसीने से फिसल रहे थे।

"प्लीज़ आर्यन... ज़िंदा रहना। प्लीज़!" तनिशा खुद से बड़बड़ा रही थी।

वो जैसे ही तिहाड़ जेल के बाहरी परिधि वाले रोड पर पहुंची, उसने सामने जो नज़ारा देखा, उससे उसके शरीर का सारा खून जम गया।

जेल के मेन गेट के बाहर तीन पीसीआर वैन, दो एंबुलेंस और कई मीडिया ओबी वैन खड़ी थीं। पुलिस की नीली और लाल बत्तियां रात के अंधेरे को चीर रही थीं।

तनिशा ने झटके से ब्रेक मारा। वो कार से बाहर निकली और मीडिया के हुजूम की तरफ दौड़ी।

"क्या हुआ है यहां?" तनिशा ने एक लोकल रिपोर्टर को कंधे से पकड़कर पूछा।

"मैडम, अंदर सेल ब्लॉक फोर में भयंकर गैंग-वॉर हो गया है। लाइट कटी हुई थी। खबर आ रही है कि आर्यन प्रताप को चाकुओं से गोद दिया गया है। वो मारा गया!" रिपोर्टर ने एक्साइटमेंट में कहा।

तनिशा के हाथ से उसका क्लच नीचे गिर गया। यूरेनियम के वो सीक्रेट पेपर्स सड़क की धूल में बिखर गए। आर्यन प्रताप मारा गया? वो इंसान जो एक तूफान था, वो इतनी आसानी से कैसे मर सकता है? तनिशा की आंखों से आंसू बहने लगे। माया और विक्रांत जीत गए थे।

तभी तनिशा के पीछे एक काले रंग की एसयूवी आकर रुकी। गाड़ी का पिछला दरवाज़ा खुला।

"सड़क पर रोने से सत्ता नहीं बदलती तनिशा," एक बेहद भारी और जानी-पहचानी आवाज़ आई।

तनिशा झटके से मुड़ी। एसयूवी की पिछली सीट पर एक आदमी बैठा था। उसने एक पुलिस इंस्पेक्टर की यूनिफॉर्म पहनी हुई थी, लेकिन यूनिफॉर्म के नीचे उसके पेट से खून रिस रहा था। उसके चेहरे पर दाढ़ी थी और आंखों में वही पुरानी, खूंखार चमक।

**आर्यन प्रताप।**

"आर्यन!" तनिशा की चीख निकल गई। "तुम... तुम ज़िंदा हो? लेकिन अंदर..."

"अंदर जो लाशें स्ट्रेचर पर बाहर आ रही हैं, वो उन चार हत्यारों की हैं जो मुझे मारने आए थे," आर्यन ने अपनी शर्ट का बटन खोलते हुए घाव को दबाया। "और जो जेलर विक्रांत के पे-रोल पर था, वो अब सेल 420 में बंधा पड़ा है। मैंने तुम्हें कहा था ना तनिशा, मैं इतनी आसानी से नहीं मरता।"

"तुम बाहर कैसे आए?" तनिशा तुरंत गाड़ी में उसके बगल में जाकर बैठ गई।

तभी ड्राइविंग सीट पर बैठे इंसान ने पीछे मुड़कर देखा। वो गजराज था।

"गजराज ने मुझे जेल के पीछे वाले सर्विस गेट से बाहर निकाला, उसी जेलर की गाड़ी में," आर्यन ने एक खौफनाक मुस्कान के साथ कहा। "जेल में आर्यन प्रताप मर चुका है तनिशा। अब मैं पूरी तरह आज़ाद हूं। एक भूत को कोई पुलिस अरेस्ट नहीं कर सकती।"

तनिशा ने चैन की सांस ली और तुरंत नीचे गिरे हुए वो सीक्रेट पेपर्स उठाकर आर्यन को दिखाए। "माया ने विक्रांत को फंसा दिया है आर्यन। ये पेपर्स रायचंद ग्रुप को खत्म कर देंगे।"

आर्यन ने उन पेपर्स को देखा और उसकी मुस्कान और भी गहरी हो गई। "माया बहुत शातिर है। उसने विक्रांत को रास्ते से हटाकर रायचंद की सारी खदानों पर खुद कब्ज़ा करने का प्लान बनाया है। लेकिन माया ये भूल गई कि खेल के नियम अब मैं तय करूंगा।"

आर्यन ने गजराज की तरफ देखा। "गाड़ी शहर के बाहर वाले हाइड-आउट की तरफ लो। कल सुबह की ब्रेकिंग न्यूज़ तनिशा नहीं, हम खुद बनाएंगे।"

एसयूवी अंधेरे में गायब हो गई। तिहाड़ में सायरन बज रहे थे, ओबेरॉय में विक्रांत अपनी बर्बादी का मातम मना रहा था, और माया चौधरी मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठकर अपनी जीत का जश्न।

लेकिन किसी को भी अंदाज़ा नहीं था कि आर्यन प्रताप अब एक नेता से उठकर एक खौफनाक अंडरवर्ल्ड मास्टरमाइंड बन चुका था। असली महायुद्ध तो अब शुरु होने वाला था।

## अध्याय 18:

अगली सुबह, राजधानी के आसमान पर सूरज तो निकला, लेकिन उसकी रोशनी में एक खौफनाक सन्नाटा घुला हुआ था। हर न्यूज़ चैनल, हर अखबार के फ्रंट पेज पर सिर्फ एक ही खबर थी, जिसने पूरे राज्य की राजनीति में भूचाल ला दिया था।

'तिहाड़ जेल में भयंकर गैंग-वॉर। पूर्व मुख्यमंत्री पद के दावेदार आर्यन प्रताप की चाकुओं से गोदकर बेरहमी से हत्या।'

टीवी स्क्रीन्स पर एक सफेद चादर में लिपटी हुई लाश को स्ट्रेचर पर एंबुलेंस में रखते हुए दिखाया जा रहा था। जेलर ने कैमरे के सामने बयान दिया था कि अंधेरे का फायदा उठाकर कुछ कैदियों ने पुरानी दुश्मनी के चलते आर्यन पर हमला किया। पूरा राज्य इस खबर से सन्न था। किसी को यकीन नहीं हो रहा था कि सत्ता का वो बेदाग युवा चेहरा इस तरह तिहाड़ की कालकोठरी में खत्म हो जाएगा।

लेकिन इस मातम से कोसों दूर, राज्य के मुख्यमंत्री आवास में जश्न का माहौल था।

मुख्यमंत्री आवास का अंदरूनी हिस्सा किसी आलीशान महल से कम नहीं था। माया चौधरी अपने मास्टर बेडरूम में थी। कमरे के भारी रेशमी पर्दे गिरे हुए थे और मद्धिम पीली रोशनी में एक अजीब सी मादकता फैली थी। बैकग्राउंड में एक धीमी, कामुक धुन बज रही थी।

माया किंग-साइज़ बेड पर औंधे मुंह लेटी थी। उसके बदन पर कपड़ों के नाम पर कुछ नहीं था, सिवाय एक पतली, पारदर्शी सिल्क की चादर के, जो उसकी कमर तक ही थी। उसकी नंगी, सुडौल पीठ चमक रही थी।

बिस्तर के पास ही डीसीपी विराजराजपूत बैठा था। उसने अपनी पुलिस यूनिफॉर्म उतार दी थी। उसकी नज़रें माया के हुस्न पर किसी भूखे जानवर की तरह गड़ी थीं। विराजके हाथों में खुशबूदार मसाज ऑयल था। उसने तेल की कुछ बूंदें अपनी हथेलियों पर रगड़ीं और अपने मज़बूत हाथों को माया की मुलायम पीठ पर रख दिया।

माया के होठों से एक गहरी, संतुष्ट आह निकली। "थोड़ा और नीचे अर्जुन... कल रात की थकान अभी मिटी नहीं है।"

विराजके हाथ माया की पीठ से फिसलते हुए उसकी कमर के निचले हिस्से तक गए। उसकी उंगलियां माया के जिस्म के हर हिस्से को ऐसे टटोल रही थीं जैसे वो इस हुस्न का गुलाम बन चुका हो। माया ने अपनी आंखें बंद कर लीं। उसका शरीर विराजके स्पर्श से सिहर रहा था, लेकिन उसका दिमाग अपनी सबसे बड़ी जीत का स्वाद चख रहा था।

"आर्यन प्रताप हमेशा के लिए खत्म हो गया माया," विराजने माया की गर्दन को चूमते हुए भारी आवाज़ में कहा। "मैंने खुद वो रिपोर्ट तैयार करवाई है। किसी को शक नहीं होगा कि वो एक सोची-समझी हत्या थी।"

माया ने करवट ली। अब उसका नग्न बदन सीधे विराजके सामने था। उसने विराजके कॉलर को पकड़ा और उसे अपने ऊपर खींच लिया। "तुमने मेरा सबसे बड़ा कांटा निकाल दिया अर्जुन। अब शांतनु जेल में सड़ेगा, आर्यन राख बन चुका है, और विक्रांत रायचंद..." माया के होठों पर एक शैतानी मुस्कान आ गई, "...विक्रांत बहुत जल्द देशद्रोह के आरोप में अंदर होगा।"

"तुम एक जादूगरनी हो माया," विराजअब खुद पर काबू नहीं रख पा रहा था। हवस और सत्ता के इस कॉकटेल ने उसे पूरी तरह अंधा कर दिया था। उसने माया के होठों को जंगली तरीके से चूमना शुरू कर दिया।

माया ने भी पूरा साथ दिया। उसने अपनी बाहें विराजकी मज़बूत गर्दन में डाल दीं और उसे अपने जिस्म की गहराइयों में खींच लिया। रेशमी चादरें फर्श पर गिर चुकी थीं। उस बंद कमरे में सिर्फ वासना की सिसकियां और दो जिस्मों के टकराने की आवाज़ें गूंज रही थीं। माया विराजको वो सब दे रही थी, जिसकी कीमत विराजने अपनी वर्दी और अपने ज़मीर को बेचकर चुकाई थी। वो जानती थी कि जब तक विराजके दिमाग पर इस हुस्न का नशा रहेगा, पुलिस फोर्स उसके इशारों पर नाचेगी।

राजधानी से साठ किलोमीटर दूर, एक घने जंगल के बीच बने एक पुराने, बंद पड़े शराब के कारखाने में एक अलग ही दुनिया बस चुकी थी।

ये कारखाना पिछले पंद्रह सालों से वीरान था, लेकिन आज ये आर्यन प्रताप का नया और सीक्रेट हेडक्वार्टर बन चुका था। कारखाने के एक बड़े से हॉल में कुछ पुरानी मशीनें और लकड़ी के क्रेट रखे थे। एक क्रेट के ऊपर आर्यन शर्टलेस बैठा था।

गजराज उसके सामने खड़ा था। उसके हाथों में सर्जिकल सुई और धागा था। वो बिना किसी एनेस्थीसिया के आर्यन के पेट पर लगे उस गहरे घाव को सिल रहा था।

आर्यन के दांत भिंचे हुए थे। माथे से पसीने की बूंदें टपक रही थीं, लेकिन उसके मुंह से उफ तक नहीं निकल रही थी। तनिशा कुछ दूरी पर खड़ी ये सब देख रही थी। उसे आर्यन की इस बर्दाश्त करने की ताकत पर हैरत हो रही थी। ये वो राजनेता नहीं था जो कैमरों के सामने मुस्कुराता था; ये एक ऐसा लोहे का इंसान बन चुका था जिसे दर्द से कोई फर्क नहीं पड़ता।

"बस एक और टांका, बॉस," गजराज ने सुई खींचते हुए कहा। धागे के कसने से घाव से हल्का सा खून और रिस गया।

"बांध दो इसे," आर्यन ने ठंडी आवाज़ में कहा।

गजराज ने पट्टी बांधी और पीछे हट गया। आर्यन ने पास पड़ी एक काली टी-शर्ट पहनी और तनिशा की तरफ देखा।

"न्यूज़ चैनल्स पर मेरा अंतिम संस्कार हो चुका है तनिशा?" आर्यन ने एक व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ पूछा।

"पूरा देश मान चुका है कि तुम मर गए हो," तनिशा ने अपना लैपटॉप एक पुरानी टेबल पर रखते हुए कहा। "मैंने वो यूरेनियम वाले पेपर्स स्कैन कर लिए हैं। अगर मैं इन्हें अभी अपने चैनल के सर्वर पर अपलोड कर दूं, तो विक्रांत रायचंद का पूरा साम्राज्य गिर जाएगा।"

"नहीं," आर्यन ने अचानक कहा। "वो पेपर्स अभी लीक नहीं होंगे।"

तनिशा हैरान रह गई। "क्यों? हमने अपनी जान दांव पर लगाकर वो सुबूत निकाले हैं आर्यन! माया ने विक्रांत को फंसाया है। अगर हम ये सुबूत दिखाएंगे तो विक्रांत तो फंसेगा ही, साथ में हम माया को भी एक्सपोज़ कर सकते हैं।"

आर्यन अपनी जगह से उठा और धीरे-धीरे चलते हुए तनिशा के पास आया। उसकी आंखों में एक खौफनाक और सोची-समझी साज़िश की चमक थी।

"माया ने वो जाली हस्ताक्षर करवाकर विक्रांत को मौत के कुएं में धकेला है। अगर तुम ये सुबूत पुलिस या मीडिया को दोगी, तो माया साफ मुकर जाएगी कि उसने कोई साइन नहीं किए। विक्रांत बर्बाद होगा और माया अपने रास्ते का एक और कांटा निकाल लेगी," आर्यन ने एक पुराना लेदर जैकेट पहनते हुए कहा। "हम माया का काम आसान क्यों करें? हम विक्रांत के इस खौफ का इस्तेमाल करेंगे।"

"तुम क्या सोच रहे हो?" तनिशा ने उलझन में पूछा।

"विक्रांत का बाप, के.के. रायचंद... देश का सबसे बड़ा कॉर्पोरेट माफिया है। उसके पास हज़ारों करोड़ की ब्लैक मनी और एक प्राइवेट आर्मी है। इस वक्त वो लोग दहशत में होंगे क्योंकि उनका वो यूरेनियम टेंडर चोरी हो चुका है और उन्हें लगता है कि माया उन्हें जेल भिजवाने वाली है," आर्यन ने गजराज की तरफ देखा। "गजराज, क्या तुम्हारे पास के.के. रायचंद का डायरेक्ट नंबर है?"

गजराज ने सिर हिलाया। "विक्रांत की सिक्योरिटी में रहते हुए मैंने वो नंबर निकाल लिया था बॉस।"

"मुझे लाइन मिलाकर दो," आर्यन की आवाज़ में एक अजीब सी सत्ता की खनक थी, जो मुख्यमंत्री की कुर्सी से भी ज़्यादा भारी थी।

मुंबई के सबसे पॉश इलाके में स्थित 'रायचंद टावर्स' की सबसे ऊपरी मंज़िल पर के.के. रायचंद का ऑफिस था। साठ साल का के.के. रायचंद, जिसके एक इशारे पर शेयर बाज़ार गिर जाता था, आज वो बुरी तरह पसीना-पसीना हो रहा था।

उसके सामने उसका बेटा विक्रांत सिर झुकाए बैठा था। विक्रांत के चेहरे पर डर साफ झलक रहा था।

"तुम एक औरत के हुस्न में इतने अंधे हो गए विक्रांत कि तुमने पूरे रायचंद ग्रुप की गर्दन उसके हाथों में दे दी!" के.के. रायचंद दहाड़ा। "माया चौधरी हमें देशद्रोह के केस में फंसा देगी। अगर वो यूरेनियम का पेपर बाहर आ गया, तो हमारी सारी खदानें सील हो जाएंगी और हम ज़िंदगी भर जेल में सड़ेंगे!"

तभी के.के. रायचंद के डेस्क पर रखा रेड-लाइन फोन (जो सिर्फ बेहद खास लोगों के पास था) बजने लगा।

के.के. ने कांपते हाथों से फोन उठाया। "कौन?"

"लगता है मुंबई का मौसम आज कुछ ज़्यादा ही गर्म है, मिस्टर रायचंद," दूसरी तरफ से एक बेहद सर्द और शांत आवाज़ आई।

आवाज़ सुनकर के.के. रायचंद के माथे पर सिलवटें पड़ गईं। ये आवाज़ बहुत जानी-पहचानी लग रही थी। "तुम कौन बोल रहे हो? ये नंबर तुम्हारे पास कैसे आया?"

"नंबर छोड़िए, मिस्टर रायचंद। उस यूरेनियम एनेक्सचर की बात करते हैं जो कल रात आपके बेटे की बेवकूफी की वजह से 'द ओबेरॉय' से चोरी हो गया था। वो पेपर इस वक्त मेरे हाथ में है," आर्यन ने कहा।

"मंज़ूर है," के.के. ने गहरी सांस लेते हुए कहा। "तुम्हें जो चाहिए, वो मिल जाएगा।"

आर्यन ने फोन काट दिया।

कारखाने के उस अंधेरे हॉल में आर्यन ने तनिशा की तरफ देखा।

"तुमने शैतान से हाथ मिला लिया आर्यन," तनिशा ने चिंता से कहा। "के.के. रायचंद कोई शरीफ आदमी नहीं है।"

"सत्ता की इस बिसात पर कोई शरीफ नहीं होता तनिशा," आर्यन ने अपनी पिस्तौल को लोड करते हुए कहा। "माया ने सेक्स, ब्लैकमेल और खून का इस्तेमाल करके ये गद्दी हासिल की है। अब मैं उसी के बनाए हुए इस रेशमी जाल को आग लगाऊंगा। और इस आग की शुरुआत कल रात माया के महल से होगी।"

आर्यन की आंखों में अब सिर्फ इंतकाम का खून दौड़ रहा था। वो राजनीति की मर्यादाओं को बहुत पीछे छोड़ चुका था। राज्य के सबसे बड़े महायुद्ध का बिगुल बज चुका था, और माया चौधरी को भनक तक नहीं थी कि उसकी मौत का फरमान उसी के दरवाज़े की तरफ तेज़ी से बढ़ रहा है।

## अध्याय 19:

मुख्यमंत्री आवास आज किसी सजे हुए दुल्हन की तरह लग रहा था। बाहर हज़ारों रंग-बिरंगी लाइटें, महंगी विदेशी गाड़ियां और भारी पुलिस बंदोबस्त। अंदर, शहर के सबसे रसूखदार लोग—मंत्री, ब्यूरोक्रेट्स, उद्योगपति और पेज-थ्री सेलेब्रिटीज़—शैम्पेन के ग्लास थामे सत्ता की इस नई मल्लिका, माया चौधरी के स्वागत में खड़े थे।

लेकिन इस शोर-शराबे से दूर, ऊपर फर्स्ट फ्लोर पर माया के प्राइवेट मास्टर बेडरूम में एक अलग ही खेल चल रहा था।

कमरे के भारी वेलवेट के पर्दे गिरे हुए थे। माया एक विशाल आदमकद शीशे के सामने खड़ी थी। उसने एक बेहद टाइट, ब्लड-रेड (खूनी लाल) रंग का बैकलेस सिल्क गाउन पहना था, जिसका स्लिट उसकी जांघों के काफी ऊपर तक जा रहा था। उसके खुले बाल और रूबी का भारी नेकलेस उसकी कातिलाना खूबसूरती को और भी जानलेवा बना रहे थे।

तभी दरवाज़ा खुला और डीसीपी विराजराजपूत अंदर दाखिल हुआ। विराजने अपनी पुलिस की खाकी वर्दी पहन रखी थी, जो उसकी मस्कुलर बॉडी पर कसी हुई थी। माया को देखकर विराजके कदम वहीं रुक गए। उसकी आंखों में एक भूखे जानवर जैसी हवस उतर आई।

"तुम नीचे जाने के लिए तैयार हो, डीजीपी साहब?" माया ने शीशे में से ही विराजकी आंखों में देखते हुए अपनी मखमली आवाज़ में पूछा। उसने जानबूझकर विराजको डीजीपी कहा, ताकि उसका लालच और बढ़ जाए।

विराजने दरवाज़ा लॉक किया और धीमे कदमों से माया के पीछे आकर खड़ा हो गया। उसने अपने रफ और मज़बूत हाथों को माया की नंगी कमर पर रखा। माया के जिस्म में एक सिहरन दौड़ गई, लेकिन उसने खुद को शीशे में देखते हुए एक कातिल मुस्कान दी।

"तुम्हारे इस हुस्न के आगे कोई भी कुर्सी छोटी है माया," विराजने माया की खुली हुई पीठ पर अपने होठों को फेरते हुए फुसफुसाया। उसके हाथ माया के सिल्क गाउन के ऊपर से ही उसके जिस्म को इस तरह टटोल रहे थे जैसे वो उसे पूरी तरह से अपने कब्ज़े में करना चाहता हो।

माया पलटी। उसने अपनी लंबी उंगलियों से विराजकी वर्दी के कॉलर को पकड़ा और उसे अपनी तरफ खींच लिया। दोनों के जिस्म एक-दूसरे से पूरी तरह चिपक गए। माया ने विराजके होठों को एक गहरे और मादक चुंबन में कैद कर लिया। कमरे का तापमान अचानक बढ़ गया। विराजका एक हाथ माया की जांघों को सहला रहा था। हवस के इस नशे में विराजयह भूल चुका था कि वो अपनी वर्दी और अपनी ड्यूटी का कितना बड़ा सौदा कर रहा है।

"नीचे पूरी दुनिया मेरा इंतज़ार कर रही है अर्जुन," माया ने हांफते हुए विराजके कान में कहा और उसे हल्का सा पीछे धकेला। "पार्टी खत्म होने दो... आज की रात मैं तुम्हें वो दूंगी, जो तुमने कभी किसी ख्वाब में भी नहीं सोचा होगा। बस इस बात का ध्यान रखना कि आज रात कोई परिंदा भी इस घर में पर ना मार सके।"

"तुम बेफिक्र रहो," विराजने अपनी वर्दी ठीक करते हुए कहा, उसकी सांसें अभी भी भारी थीं। "मैंने चारों तरफ एसटीएफ के स्नाइपर्स लगा दिए हैं। यहां कोई नहीं आ सकता।"

माया ने एक आखिरी बार शीशे में खुद को देखा, विराजको एक कामुक मुस्कान दी और कमरे से बाहर निकल गई।

लेकिन विराजराजपूत और माया चौधरी को ये नहीं पता था कि सत्ता के इस महल में सेंध लगाने वाला कोई आम परिंदा नहीं, बल्कि मौत का वो फरिश्ता था जो अपनी ही चिता से उठकर आया था।

मुख्यमंत्री आवास से करीब एक किलोमीटर दूर, एक अंधेरी गली में तीन काली रंग की वैन खड़ी थीं। इन गाड़ियों पर के.के. रायचंद की सिक्योरिटी कंपनी का लोगो लगा था, जिन्हें वीआईपी कैटरिंग का टेंडर मिला हुआ था।

बीच वाली वैन के अंदर एक पूरा कमांडो सेंटर बना था। कुणाल अपने लैपटॉप पर उंगलियां चला रहा था, और उसके पीछे आर्यन प्रताप खड़ा था।

आर्यन का हुलिया पूरी तरह बदल चुका था। उसने ब्लैक कॉम्बैट पैंट्स, एक टाइट ब्लैक टी-शर्ट और टैक्टिकल वेस्ट पहन रखा था। उसकी दाढ़ी ट्रिम की हुई थी, लेकिन उसकी आंखों में जो खौफनाक सन्नाटा था, वो किसी भी हथियार से ज़्यादा खतरनाक था। उसके पेट का घाव अभी पूरी तरह भरा नहीं था, लेकिन दर्द की कोई शिकन उसके चेहरे पर नहीं थी।

गजराज अपनी असॉल्ट राइफल लोड करते हुए आर्यन के पास आया। "बॉस, के.के. रायचंद के पच्चीस बेस्ट मर्सिनरीज़ (भाड़े के सैनिक) कैटरिंग स्टाफ और

सिक्योरिटी गाईस की वर्दी में अंदर घुस चुके हैं। हमारे पास सिर्फ दस मिनट का वो विंडो होगा, जब कुणाल कैमरों को लूप पर डालेगा।"

"परफेक्ट," आर्यन ने अपनी गैर-लाइसेंसी 9mm पिस्तौल को लोड करके अपने होल्स्टर में डाला।

"आर्यन..." तनिशा, जो वैन के कोने में बैठी सब देख रही थी, आगे आई। उसकी आवाज़ में एक अनकहा डर था। "माया कोई बेवकूफ औरत नहीं है। वो विराजराजपूत का इस्तेमाल एक ढाल की तरह कर रही है। अगर तुम वहां गए तो सीधे गोलियां चलेंगी।"

"गोलियां तो चलेंगी तनिशा, लेकिन माया की तरफ से नहीं," आर्यन ने अपनी टी-शर्ट के अंदर एक केबल माइक सेट करते हुए कहा। "तुम्हें जो काम दिया है, वो रेडी है?"

"हां। तुम्हारी जैकेट का हिडन कैमरा मेरे सर्वर से कनेक्टेड है। तुम जो भी देखोगे, जो भी बात करोगे, वो सीधा नेशनल ट्रुथ के लाइव ब्रॉडकास्ट पर जाएगा," तनिशा ने कहा।

आर्यन ने एक गहरी सांस ली। "लेट्स गो।"

मुख्यमंत्री आवास के भव्य हॉल में पार्टी अपने शबाब पर थी। माया चौधरी एक हाथ में शैम्पेन का ग्लास पकड़े हर बड़े नेता और उद्योगपति से मिल रही थी। उसकी खूबसूरती और उसकी सत्ता का गुरूर लोगों को अंधा कर रहा था। विक्रांत रायचंद भी वहां मौजूद था, लेकिन वो एक कोने में पसीना-पसीना हो रहा था, क्योंकि वो जानता था कि आज रात कुछ बहुत भयानक होने वाला है।

तभी माया के पर्सनल फोन पर एक मैसेज फ्लैश हुआ। *'विक्रांत की कार से यूरेनियम वाले पेपर्स चोरी हो गए हैं। मैं तुम्हारे प्राइवेट स्टडी रूम में इंतज़ार कर रहा हूं। विराजको बाहर रखना।'*

मैसेज अननोन नंबर से था। माया के चेहरे की मुस्कान एक सेकंड के लिए गायब हो गई। उसने चारों तरफ देखा, लेकिन उसे कोई संदिग्ध नहीं दिखा। उसने विराजको एक इशारा किया कि वो ऊपर जा रही है, और खुद लिफ्ट की तरफ बढ़ गई।

प्राइवेट स्टडी रूम फर्स्ट फ्लोर के आखिर में था। माया ने दरवाज़ा खोला और अंदर दाखिल हुई। कमरा अंधेरे में डूबा था, सिर्फ फायरप्लेस की हल्की रोशनी थी।

"कौन है?" माया ने अपनी तेज़ और कॉन्फिडेंट आवाज़ में पूछा।

फायरप्लेस के पास रखी लेदर की भारी कुर्सी धीरे से घूमी। उस पर एक शख्स बैठा था। उसने अपना चेहरा एक काली हुडी से ढक रखा था।

"सत्ता का नशा भी अजीब होता है माया। इंसान को लगता है कि वो भगवान बन गया है, जब तक कि यमराज खुद आकर उसका दरवाज़ा नहीं खटखटाता," एक बेहद भारी, सर्द और खौफनाक आवाज़ कमरे में गूंजी।

माया के हाथ से शैम्पेन का ग्लास छूटकर कालीन पर गिरा। उसका पूरा शरीर बर्फ की तरह जम गया। ये आवाज़... ये आवाज़ तो कल सुबह ही तिहाड़ जेल में हमेशा के लिए खामोश हो चुकी थी।

वो शख्स अपनी कुर्सी से उठा। हुडी पीछे सरकी। फायरप्लेस की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी।

**आर्यन प्रताप।**

माया की आंखें फटी की फटी रह गईं। "तुम... तुम ज़िंदा हो? ये कैसे..."

लेकिन माया चौधरी कोई आम औरत नहीं थी। उसका खौफ सिर्फ दो सेकंड में ही उसकी शातिर चालाकी में बदल गया। उसने अपने चेहरे पर वापस वही कातिलाना मुस्कान ला दी और अपनी लाल सिल्क गाउन के स्लिट को थोड़ा और खिसकाते हुए आर्यन की तरफ बढ़ने लगी।

"आर्यन... माई गॉड! तुम ज़िंदा हो!" माया ने अपनी आवाज़ में एक झूठी राहत और मादकता घोल दी। "तुम्हें क्या लगा मैं तुम्हें मरवाना चाहती थी? वो सब तो शांतनु और विक्रांत का खेल था। मैं तो तुम्हें बचाना चाहती थी!"

माया चलते-चलते आर्यन के बिल्कुल करीब आ गई। उसने अपना हाथ आर्यन के सीने पर रख दिया, ठीक वहां जहां उसकी धड़कनें चल रही थीं।

"तुम्हारे इस नए अवतार ने तो तुम्हें और भी मर्दाना बना दिया है आर्यन," माया की उंगलियां आर्यन के गले तक फिसलने लगीं। वो जानती थी कि उसके हुस्न के आगे अच्छे-अच्छे मर्द पिघल जाते हैं। "अब जब शांतनु रास्ते से हट गया है, तो हम दोनों मिलकर ये राज्य चला सकते हैं। तुम और मैं, आर्यन। मैं तुम्हें वो सब दूंगी जो तुम चाहते हो।"

माया ने अपने होठों को आर्यन के होठों के करीब लाया। वो आर्यन को अपने जिस्मानी जाल में फंसाकर अपना पैनिक बटन दबाने वाली थी, जो उसकी रिंग में लगा था।

लेकिन आर्यन ने अचानक माया के उस हाथ को इतनी ज़ोर से जकड़ा कि माया की चीख निकल गई।

"तुम्हारे जिस्म का जादू अब सिर्फ विराजराजपूत जैसे बेवकूफ कुत्तों पर चलता है माया," आर्यन ने माया को ज़ोर से पीछे धकेल दिया। माया लड़खड़ा कर सोफे पर गिर गई।

"तुम एक खूनी, ब्लैकमेलर और एक बेहद गंदी औरत हो माया। और तुम्हारा ये सारा सच इस वक्त नेशनल टीवी पर लाइव चल रहा है," आर्यन ने अपनी जैकेट में लगे उस छोटे से कैमरे की तरफ इशारा किया।

माया का चेहरा सफेद पड़ गया।

तभी स्टडी रूम का दरवाज़ा एक भयानक ज़ोर से टूटा। डीसीपी विराजराजपूत अपनी सर्विस रिवॉल्वर ताने अंदर घुसा। उसने अपनी रिंग का पैनिक बटन दबा दिया था।

"हैंड्स अप आर्यन! वरना सीधा सिर में गोली मारूंगा!" विराजने दहाड़ते हुए कहा।

माया तुरंत उठ खड़ी हुई। "इसे मार दो अर्जुन! ये हमारे लिए खतरा है! शूट हिम!" माया चिल्लाई।

आर्यन ने कोई घबराहट नहीं दिखाई। उसने बिल्कुल शांति से अपनी जैकेट से एक छोटा सा ऑडियो प्लेयर निकाला और उसका बटन दबा दिया।

कमरे में माया की ही आवाज़ गूंजने लगी। ये वो रिकॉर्डिंग थी जो गजराज ने ओबेरॉय होटल के बेसमेंट में विक्रांत से हैक करके निकाली थी।

ऑडियो में माया कह रही थी: *"विराजएक बेवकूफ कुत्ता है विक्रांत। जिस दिन शांतनु और आर्यन का काम तमाम होगा, मैं विराजपर करप्शन का केस लगाकर उसे जेल भेज दूंगी। वो मेरे लिए सिर्फ एक यूज़-एंड-थ्रो टिश्यू पेपर है। सत्ता पर मैं सिर्फ तुम्हारे साथ राज करूंगी।"*

रिकॉर्डिंग बंद हो गई।

विराजके हाथों में पकड़ी हुई रिवॉल्वर अचानक कांपने लगी। उसने झटके से माया की तरफ देखा। उसकी आंखों में हवस का वो नशा अब टूट चुका था और उसकी जगह एक भयंकर धोखे के दर्द ने ले ली थी।

"अर्जुन... ये झूठ है! ये एआई से बनाई हुई आवाज़ है! ये तुम्हें भड़का रहा है!" माया घबराते हुए चिल्लाई।

"झूठ नहीं है अर्जुन," आर्यन ने धीरे से कहा। "तुमने इस औरत के जिस्म की खातिर अपनी वर्दी बेची, और इसने तुम्हें एक इस्तेमाल किए हुए कंडोम की तरह डस्टबिन में फेंकने का प्लान बनाया था।"

विराजका चेहरा गुस्से से लाल हो चुका था। वो बुरी तरह हांफ रहा था। उसने अपनी रिवॉल्वर आर्यन से हटाकर सीधे माया चौधरी के सीने पर तान दी।

"तुमने मुझे धोखा दिया माया... तुमने मेरे प्यार का मज़ाक बनाया!" विराजकी उंगली ट्रिगर पर कसने लगी।

"विराजनहीं! पागल मत बनो!" माया अब सच में मौत के खौफ से कांप रही थी। वो पीछे दीवार से सट गई।

स्टडी रूम के उस तनाव भरे सन्नाटे में, जहां तीन खूंखार खिलाड़ी एक-दूसरे की जान के प्यासे खड़े थे, तभी एक कानफाड़ू गोली की आवाज़ गूंजी। 'बैंग!'

खून के ताज़े छींटों ने कमरे की दीवार को लाल कर दिया। एक भारी शरीर धड़ाम से कालीन पर गिरा।

लेकिन वो गोली विराजकी रिवॉल्वर से नहीं चली थी।

आर्यन ने अपनी पिस्तौल का धुआं निकलता हुआ बैरल नीचे किया। ट्विस्ट अभी बाकी था। मौत का ये खेल इतनी आसानी से खत्म नहीं होने वाला था।

## अध्याय 20:

'बैंग!'

गोली की वो गूंज अभी भी स्टडी रूम की दीवारों से टकरा रही थी। बारूद की तीखी और दमघोंटू गंध ने हवा में मौजूद माया के महंगे शनेल परफ्यूम की खुशबू को पूरी तरह निगल लिया था।

डीसीपी विराजराजपूत का भारी-भरकम शरीर किसी कटे हुए पेड़ की तरह धड़ाम से फर्श पर गिरा। उसके माथे के ठीक बीचों-बीच एक सुराख हो गया था, जहां से खून का एक गहरा लाल फव्वारा फूटकर सीधे माया चौधरी के चेहरे और उसके ब्लड-रेड सिल्क गाउन पर पड़ा। विराजकी आंखें खुली रह गई थीं, जिनमें हवस, धोखा और मौत का एक भयानक कॉकटेल जम गया था।

माया की चीख उसके गले में ही घुट गई। वो खौफ से कांपते हुए सोफे के पीछे सिकुड़ गई।

आर्यन प्रताप ने बहुत इत्मीनान से अपनी पिस्तौल का बैरल नीचे किया, जिससे अभी भी हल्का-हल्का धुआं निकल रहा था।

"तुमने... तुमने उसे क्यों मारा?" माया के होंठ थरथरा रहे थे। उसे समझ नहीं आ रहा था कि जो विराजउसे मारने वाला था, आर्यन ने उसे क्यों बचाया।

"मैंने उसे तुम्हें बचाने के लिए नहीं मारा माया," आर्यन ने विराजकी लाश को अपने जूतों से किनारे धकेलते हुए कहा। उसकी आवाज़ में एक ऐसा सन्नाटा था जो मौत से भी ज़्यादा डरावना था। "विराजएक बिका हुआ कुत्ता था। वो अपनी वर्दी और अपने ज़मीर को तुम्हारे जिस्म की गर्मी में भस्म कर चुका था। अगर वो तुम्हें मार देता, तो तुम इतिहास में एक बेचारी, शहीद मुख्यमंत्री बन जातीं। लोग तुम्हारी मूर्तियां बनाते। लेकिन मैं ऐसा होने नहीं दे सकता। तुम्हें तो मैं वो दर्द दूंगा, जिसके बाद तुम मौत की भीख मांगोगी, लेकिन मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा।"

माया समझ चुकी थी कि वो अब चारों तरफ से घिर चुकी है। बाहर उसकी पार्टी चल रही थी, लेकिन इस कमरे में यमराज खड़ा था। माया एक बेहद शातिर खिलाड़ी थी और वो जानती थी कि जब सारे हथियार फेल हो जाएं,

तो औरत का सबसे आदिम और खतरनाक हथियार इस्तेमाल करना चाहिए — उसका जिस्म।

माया धीरे से सोफे के पीछे से उठी। उसके चेहरे पर लगा विराजका खून उसके हुस्न को एक अजीब सी खौफनाक कशिश दे रहा था। उसने अपनी घबराहट को एक कातिलाना और मादक मुस्कान के पीछे छुपा लिया।

"तुम एक बहुत अलग किस्म के मर्द हो आर्यन," माया धीमी चाल चलते हुए आर्यन के बिल्कुल करीब आ गई। "जो न पैसे से बिकता है, न खौफ से डराया जा सकता है।"

माया ने अपनी उंगलियों से अपने सिल्क गाउन की डोरी खींची। वो लाल गाउन एक ही झटके में उसके कंधों से खिसक कर फर्श पर गिर गया।

अब माया आर्यन के सामने पूरी तरह नंगी खड़ी थी। उसका सुडौल, दूधिया जिस्म जिस पर खून की कुछ छींटें थीं, किसी भी मर्द के होश उड़ाने के लिए काफी था। उसकी उभरी हुई छाती तेज़ी से ऊपर-नीचे हो रही थी। उसने अपने नंगे बदन को आर्यन के बिल्कुल करीब ला दिया। उसके जिस्म की गर्माहट आर्यन को महसूस हो रही थी।

"सत्ता, पैसा, बदला... ये सब बहुत छोटी चीज़ें हैं आर्यन," माया ने आर्यन के गले में अपनी बाहें डालते हुए अपनी नशीली आवाज़ में फुसफुसाया। उसके गर्म होंठ आर्यन के कान को छू रहे थे। "एक बार... सिर्फ एक बार इस जिस्म का नशा करके देखो। तुम दुनिया भूल जाओगे। मैं तुम्हें वो सब दूंगी जो तुमने कभी सोचा भी नहीं होगा। हम दोनों मिलकर इस राज्य पर राज करेंगे। तुम मुझे अपने बिस्तर की मल्लिका बना लो, मैं तुम्हें इस देश का राजा बना दूंगी।"

माया का नंगा बदन आर्यन के सीने से रगड़ खा रहा था। माया ने आर्यन के होठों को चूमने के लिए अपना चेहरा आगे बढ़ाया। उसे पूरा यकीन था कि कोई भी मर्द, चाहे वो कितना भी बड़ा बागी क्यों न हो, इस अंधी हवस के जाल से बच नहीं सकता।

लेकिन माया गलत थी।

आर्यन ने अचानक माया के बालों को अपनी मुट्ठी में इतनी ज़ोर से जकड़ा कि माया दर्द से कराह उठी। आर्यन ने उसे खुद से दूर धकेला और उसकी आंखों में देखते हुए कहा, "तुम्हारे जिस्म में खून नहीं, ज़हर दौड़ता है माया। और मैं सांपों से खेलना पसंद नहीं करता।"

आर्यन ने पास ही रखे एक भारी लेदर कोट को उठाया और उसे माया के नंगे बदन पर फेंक दिया।

"इसे पहन लो। क्योंकि नंगी तो तुम अब पूरी दुनिया के सामने होने वाली हो," आर्यन ने अपनी जैकेट में लगे हिडन कैमरे को सेट करते हुए कहा।

उसी वक्त, नीचे ग्राउंड फ्लोर के विशाल और जगमगाते हॉल में, माया की विक्ट्री पार्टी पूरे शबाब पर थी। राज्य के होम सेक्रेटरी, डीजीपी, दर्जनों मंत्री और बड़े बिल्डर्स शैम्पेन के नशे में चूर थे। विक्रांत रायचंद भी एक कोने में खड़ा था, लेकिन उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। उसे पता था कि आर्यन प्रताप इस पार्टी में किसी भी वक्त मौत का तांडव शुरू कर सकता है।

तभी, हॉल की सारी क्रिस्टल शैंडेलियर्स (झूमर) एक साथ बुझ गईं। चारों तरफ घुप अंधेरा छा गया।

"ये क्या बकवास है? सिक्योरिटी!" होम सेक्रेटरी गुस्से में चिल्लाया।

कुछ सेकंड बाद, हॉल की इमरजेंसी रेड लाइट्स ऑन हो गईं। पूरी जगह लाल रोशनी में नहा गई। और उस लाल रोशनी में जो नज़ारा दिखा, उसने वहां मौजूद हर वीआईपी की सांसें अटका दीं।

हॉल के चारों दरवाज़ों पर कैटरिंग स्टाफ और सिक्योरिटी गाईस की वर्दी पहने पच्चीस लोग खड़े थे। लेकिन उनके हाथों में अब शैम्पेन की ट्रे नहीं, बल्कि ऑटोमैटिक असॉल्ट राइफल्स थीं।

ये के.के. रायचंद के मर्सिनरीज़ (भाड़े के सैनिक) थे, जिन्हें आर्यन ने अंदर घुसाया था।

गजराज, जिसने काले रंग का कॉम्बैट सूट पहना हुआ था, भीड़ के बीचों-बीच आकर खड़ा हो गया। उसने अपनी राइफल से हवा में एक फायर किया।

'धांय!'

हॉल में मौजूद औरतें चीख पड़ीं। मंत्री और ब्यूरोक्रेट्स ज़मीन पर बैठ गए।

"कोई अपनी जगह से नहीं हिलेगा! जो जहां है, वहीं बैठा रहे। किसी ने भी फोन निकालने की कोशिश की, तो मैं उसके हाथ के साथ उसका सिर भी धड़ से अलग कर दूंगा," गजराज की खुरदुरी और खतरनाक आवाज़ हॉल में गूंजी।

"तुम जानते हो मैं कौन हूं? मैं इस स्टेट का डीजीपी हूं!" एक मोटा सा आदमी अपनी जगह से उठते हुए चिल्लाया।

गजराज ने बिजली की फुर्ती से अपनी राइफल का बट डीजीपी के मुंह पर दे मारा। डीजीपी के मुंह से खून का फव्वारा फूटा और वो ज़मीन पर गिर पड़ा। "अब तुम सिर्फ एक बंधक हो। चुपचाप ज़मीन पर पड़े रहो," गजराज ने डीजीपी के सीने पर अपना बूट रखते हुए कहा।

पूरे हॉल में मौत का सन्नाटा छा गया। राज्य की पूरी सरकार, पूरी ब्यूरोक्रेसी और सारा रसूख इस वक्त बंदूक की नोक पर ज़मीन पर रेंग रहा था। विक्रांत रायचंद ने राहत की सांस ली; वो समझ गया था कि आर्यन का प्लान शुरू हो चुका है।

हॉल के एक कोने में लगी 100 इंच की एलईडी स्क्रीन, जिस पर थोड़ी देर पहले माया चौधरी के कैंपेन के वीडियो चल रहे थे, अचानक झिलमिलाई।

बाहर अंधेरी गली में खड़ी कमांडो वैन के अंदर तनिशा ने अपना मास्टरस्ट्रोक खेल दिया था।

"कुणाल, फीड लाइव करो! हर न्यूज़ चैनल की फ्रीक्वेंसी हाईजैक हो चुकी है। पूरा देश देख रहा है," तनिशा ने अपने हेडफोन पर कमांड दी।

हॉल की वो बड़ी स्क्रीन और राज्य के हर घर में मौजूद टीवी की स्क्रीन अचानक बदल गई। स्क्रीन पर आर्यन प्रताप के सीने पर लगे हिडन कैमरे का लाइव वीडियो फीड आने लगा।

वीडियो में आर्यन प्रताप का खून से सना चेहरा और उसकी वो खौफनाक आंखें दिख रही थीं। पूरा देश, जो आर्यन को मरा हुआ समझ रहा था, उसे टीवी पर ज़िंदा देखकर सन्न रह गया।

वीडियो में आर्यन के पीछे फर्श पर डीसीपी विराजराजपूत की लाश पड़ी थी और माया चौधरी ज़मीन पर घुटनों के बल बैठी थी। उसने वो लेदर कोट पहन रखा था, लेकिन उसके चेहरे पर लगा खून और खौफ पूरी दुनिया साफ-साफ देख सकती थी।

आर्यन ने कैमरे की तरफ देखते हुए बोलना शुरू किया। उसकी आवाज़ में एक ऐसा दर्द और गुस्सा था, जिसने पूरे देश के रोंगटे खड़े कर दिए।

*"मेरा नाम आर्यन प्रताप है। और जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं ज़िंदा हूं।"*

हॉल में बैठे मंत्रियों के चेहरों से खून सूख गया।

*"आज सुबह मुझे तिहाड़ जेल में मरवाने की कोशिश की गई। और ये सुपारी देने वाला कोई और नहीं, बल्कि इस राज्य की मुख्यमंत्री माया चौधरी और विक्रांत रायचंद थे।"*

आर्यन ने अपना कैमरा माया की तरफ घुमाया।

*"ये औरत, जिसे आप अपनी मुख्यमंत्री मानते हैं, इसने सत्ता के लिए अपने हुस्न, ब्लैकमेल और खून का बाज़ार लगाया है। इसने विक्रम बजाज के मर्डर में शांतनु मुखर्जी की मदद की, मेरे दोस्त गोविंद को खरीदा, और फिर डीसीपी विराजराजपूत से जिस्मानी सौदेबाज़ी करके सारे सुबूत मिटा दिए। और जब विराजका काम खत्म हो गया, तो इसने मुझे भड़का कर उसे भी मरवा दिया।"*

आर्यन ने अपनी जेब से वो यूरेनियम वाला टॉप-सीक्रेट कॉन्ट्रैक्ट निकाला और कैमरे के सामने कर दिया।

*"और ये है वो कागज़, जिसके लिए ये सारा खेल खेला गया। हज़ारों करोड़ का यूरेनियम टेंडर, जो माया चौधरी ने रायचंद ग्रुप को कौड़ियों के भाव बेच दिया, और फिर उसी पेपर को चोरी करवाकर विक्रांत रायचंद को फंसाने की साज़िश रची।"*

आर्यन कैमरे के बिल्कुल पास आ गया। उसकी आवाज़ अब एक दहाड़ में बदल चुकी थी।

*"मैं आज राजनीति के हर उस कीड़े को नंगा कर रहा हूं, जिसने इस कुर्सी को एक तवायफ बना दिया है। माया चौधरी का खेल खत्म हो चुका है।"*

आर्यन ने अपनी जैकेट से एक भारी ज़ंजीर निकाली और माया चौधरी के हाथों को पीछे की तरफ कसकर बांध दिया। माया रो रही थी, गिड़गिड़ा रही थी। जो औरत कुछ मिनट पहले आर्यन को अपने नंगे जिस्म का लालच दे रही थी, वो अब एक कुत्ते की तरह ज़मीन पर घिसट रही थी।

"आर्यन... मुझे माफ कर दो! मैं तुम्हें सब कुछ दे दूंगी! मुझे टीवी पर ऐसे ज़लील मत करो!" माया भीख मांग रही थी।

"ज़िल्लत तो अभी शुरू हुई है माया," आर्यन ने ज़ंजीर का दूसरा सिरा अपने हाथ में लपेटा और माया को ज़मीन से घसीटते हुए स्टडी रूम के दरवाज़े की तरफ ले गया।

ग्राउंड फ्लोर पर मौजूद सभी बंधक वीआईपी की नज़रें हॉल की शानदार सीढ़ियों पर टिक गईं।

सीढ़ियों के सबसे ऊपर आर्यन प्रताप खड़ा था। वो किसी बागी देवता की तरह लग रहा था। और उसके हाथ में बंधी ज़ंजीर से घिसटती हुई, लेदर कोट में लिपटी माया चौधरी नीचे आ रही थी। राज्य की सबसे ताकतवर औरत आज अपने ही घर में एक गुलाम की तरह सीढ़ियों से नीचे घसीटी जा रही थी।

ये नज़ारा कैमरे के ज़रिए पूरा देश लाइव देख रहा था।

आर्यन ने सीढ़ियों से उतरकर माया को हॉल के बीचों-बीच धकेल दिया। माया मुंह के बल ज़मीन पर गिरी और वहां बैठे सभी रसूखदारों के सामने ज़ार-ज़ार रोने लगी।

"गजराज!" आर्यन ने आवाज़ दी। "दरवाज़े खोल दो।"

गजराज ने मेन गेट के भारी दरवाज़े खोल दिए। बाहर मीडिया की सैकड़ों ओबी वैन्स, कैमरे और पुलिस की फौज खड़ी थी। लेकिन आर्यन का खौफ इतना था कि कोई पुलिसवाला अंदर घुसने की हिम्मत नहीं कर रहा था।

आर्यन ने माया की ज़ंजीर तनिशा के हाथ में थमा दी, जो अभी-अभी वैन से बाहर आकर हॉल में दाखिल हुई थी।

"ये रही तुम्हारी ब्रेकिंग न्यूज़ तनिशा। इसे ले जाओ और पुलिस के हवाले कर दो। इसके पापों का घड़ा भर चुका है," आर्यन ने कहा।

तनिशा ने ज़ंजीर पकड़ ली। उसकी आंखों में आर्यन के लिए एक अजीब सा सम्मान था।

"और तुम?" तनिशा ने पूछा। "तुम फिर से पुलिस से भागोगे?"

आर्यन ने अपनी पिस्तौल अपनी बेल्ट में वापस रखी और एक गहरी सांस ली। "मैंने कहा था ना तनिशा, मैं अपनी स्लेट साफ करने आया था। शांतनु जेल में है, माया बर्बाद हो चुकी है, और रायचंद ग्रुप का यूरेनियम स्कैंडल एक्सपोज़ हो गया है। मेरा इंतकाम पूरा हुआ।"

आर्यन ने मुड़कर पुलिस की उन चमकती हुई लाल-नीली बत्तियों की तरफ देखा। वो धीरे-धीरे चलते हुए घर से बाहर निकला और दोनों हाथ हवा में उठाकर पुलिस के सामने घुटनों के बल बैठ गया।

"मैं आर्यन प्रताप हूं। मैं सरेंडर कर रहा हूं," उसकी शांत आवाज़ रात की हवा में गूंजी।

फ्लैशलाइट्स चमकने लगीं। कैमरे आर्यन को कैद करने लगे।

लेकिन सत्ता की ये बिसात अभी पूरी तरह पलटी नहीं थी। हॉल के अंदर, विक्रांत रायचंद ने भीड़ का फायदा उठाया और वो चुपके से पिछले दरवाज़े से बाहर निकल गया। उसका बाप के.के. रायचंद आर्यन की मदद करने के बाद भी हार चुका था। और विक्रांत अब एक ऐसे खूनी तूफान की तैयारी में था, जो आर्यन को जेल के अंदर भी सुकून से जीने नहीं देगा।

माया का तिलिस्म टूट चुका था, लेकिन सत्ता का ये स्कैंडल अभी अपने सबसे खौफनाक मोड़ पर पहुंचने वाला था।

## अध्याय 21:

राजधानी के पुलिस हेडक्वार्टर के सबसे सुरक्षित और गुप्त इंटेरोगेशन रूम में एक अजीब सी शांति थी। ये वो शांति थी जो किसी बड़े तूफान के गुज़र जाने के बाद आती है।

कमरे के बीचों-बीच लोहे की कुर्सी पर आर्यन प्रताप बैठा था। उसके हाथों में हथकड़ी थी, लेकिन उसके चेहरे पर कोई थकान या पछतावा नहीं था। उसने रात भर कोई बयान नहीं दिया था। सामने बैठे आईजी सूर्यकांत, जो राज्य के सबसे कड़क पुलिस अफसर माने जाते थे, आर्यन को ऐसे घूर रहे थे जैसे किसी अजूबे को देख रहे हों।

"तुमने पूरा सिस्टम हिला दिया है आर्यन," सूर्यकांत ने मेज़ पर रखी सिगरेट सुलगाते हुए कहा। "माया चौधरी मेंटल ट्रॉमा वॉर्ड में है। शांतनु मुखर्जी व्हीलचेयर पर अस्पताल में सिसक रहा है। लेकिन तुमने खुद को क्यों बर्बाद किया? तुम चाहते तो ये सुबूत हमें देकर साफ बच सकते थे।"

आर्यन ने एक हल्की, ठंडी मुस्कान दी। "अगर मैं सुबूत आपको देता आईजी साहब, तो वो किसी फाइल में दब जाते। इस सिस्टम की जड़ें इतनी सड़ी हुई हैं कि उन्हें उखाड़ने के लिए मुझे खुद उस कीचड़ में उतरना पड़ा। मैंने अपना काम कर दिया है।"

"तुम्हारा काम अभी खत्म नहीं हुआ है," सूर्यकांत ने सिगरेट का धुआं छोड़ते हुए एक फाइल आर्यन के सामने फेंकी। "तुमने लाइव टीवी पर रायचंद ग्रुप और यूरेनियम डील का जो बम फोड़ा है, उसकी गूंज दिल्ली तक पहुंच गई है। सेंट्रल एजेंसियों ने केस टेकओवर कर लिया है। अब तुम स्टेट पुलिस के नहीं, सीधे केंद्र के मेहमान हो।"

आर्यन की आंखों में एक पल के लिए चमक आई। वो जानता था कि रायचंद ग्रुप चुप नहीं बैठेगा। खेल अब राज्य की राजनीति से निकलकर राष्ट्रीय सुरक्षा और कॉर्पोरेट माफिया के हाथों में जा चुका था।

मुंबई, नरीमन पॉइंट। समुद्र की लहरों के सामने खड़ी 'रायचंद कॉर्प' की सत्तर मंज़िला कांच की इमारत के अंदर माहौल बेहद गर्म था।

टॉप फ्लोर के आलीशान बोर्डरूम में के.के. रायचंद ने अपने हाथ में पकड़े क्रिस्टल के ग्लास को ज़ोर से दीवार पर दे मारा। ग्लास के टुकड़े महंगे कालीन

पर बिखर गए। सामने विक्रांत रायचंद सिर झुकाए खड़ा था। उसका पूरा शरीर खौफ से कांप रहा था।

"एक औरत! एक औरत के जिस्म की खातिर तुमने हज़ारों करोड़ का यूरेनियम टेंडर और हमारी पूरी कंपनी की साख दांव पर लगा दी!" के.के. रायचंद दहाड़ रहा था। "पूरा देश टीवी पर देख रहा है कि रायचंद ग्रुप देशद्रोह कर रहा है! हमारे शेयर्स धड़ाम से गिर गए हैं।"

"डैड... मुझे नहीं पता था माया इतनी शातिर निकलेगी। और आर्यन... वो तो मर चुका था!" विक्रांत ने हकलाते हुए अपनी सफाई देने की कोशिश की।

"शट अप!" के.के. ने ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारा। "अगर आर्यन प्रताप ने मुंह खोल दिया तो हम सब तिहाड़ में चक्की पीसेंगे। हमें एक ऐसा क्राइसिस मैनेजर चाहिए जो आर्यन को उसी के बिछाए जाल में फंसा सके।"

तभी बोर्डरूम का भारी दरवाज़ा खुला। एक बेहद लंबी, खूबसूरत और तीखे नैन-नक्श वाली औरत अंदर दाखिल हुई। उसने एक स्लीक ब्लैक बिज़नेस सूट पहना था, जो उसके सुडौल बदन पर बिल्कुल फिट था। उसके बाल एक पोनीटेल में बंधे थे और उसकी आंखों में एक ऐसी क्रूरता थी जो किसी भी मर्द के पसीने छुड़ा दे।

ये निहारिका सिंघानिया थी। देश की सबसे महंगी, शातिर और खतरनाक कॉर्पोरेट लॉयर। उसे रायचंद ग्रुप का 'क्लीनर' कहा जाता था। वो कानून की किताबों से नहीं, बल्कि ब्लैकमेल और साज़िशों से केस जीतती थी।

"रिलैक्स के.के.," निहारिका ने अपनी भारी और कॉन्फिडेंट आवाज़ में कहा और विक्रांत की तरफ एक व्यंग्यात्मक मुस्कान उछाली। "आर्यन प्रताप ने सिर्फ एक पब्लिक स्टंट किया है। असली खेल तो कागज़ों पर होता है, और कागज़ बदलना मुझे बहुत अच्छे से आता है।"

के.के. रायचंद ने गहरी सांस ली और कुर्सी पर बैठ गया। "तुम क्या करने वाली हो निहारिका?"

"मैंने दिल्ली में कुछ फोन कॉल्स कर दिए हैं," निहारिका ने अपनी फाइल मेज़ पर रखते हुए कहा। "कल सुबह तक सेंट्रल इन्वेस्टिगेशन टीम ये डिक्लेयर कर देगी कि वो यूरेनियम कॉन्ट्रैक्ट माया चौधरी और आर्यन प्रताप ने मिलकर बनाया था। हम साबित करेंगे कि आर्यन ने वो यूरेनियम विदेशी आतंकियों को बेचने का प्लान बनाया था और हमने तो बस उसे रोकने की कोशिश की थी।

पर बिखर गए। सामने विक्रांत रायचंद सिर झुकाए खड़ा था। उसका पूरा शरीर खौफ से कांप रहा था।

"एक औरत! एक औरत के जिस्म की खातिर तुमने हज़ारों करोड़ का यूरेनियम टेंडर और हमारी पूरी कंपनी की साख दांव पर लगा दी!" के.के. रायचंद दहाड़ रहा था। "पूरा देश टीवी पर देख रहा है कि रायचंद ग्रुप देशद्रोह कर रहा है! हमारे शेयर्स धड़ाम से गिर गए हैं।"

"डैड... मुझे नहीं पता था माया इतनी शातिर निकलेगी। और आर्यन... वो तो मर चुका था!" विक्रांत ने हकलाते हुए अपनी सफाई देने की कोशिश की।

"शट अप!" के.के. ने ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारा। "अगर आर्यन प्रताप ने मुंह खोल दिया तो हम सब तिहाड़ में चक्की पीसेंगे। हमें एक ऐसा क्राइसिस मैनेजर चाहिए जो आर्यन को उसी के बिछाए जाल में फंसा सके।"

तभी बोर्डरूम का भारी दरवाज़ा खुला। एक बेहद लंबी, खूबसूरत और तीखे नैन-नक्श वाली औरत अंदर दाखिल हुई। उसने एक स्लीक ब्लैक बिज़नेस सूट पहना था, जो उसके सुडौल बदन पर बिल्कुल फिट था। उसके बाल एक पोनीटेल में बंधे थे और उसकी आंखों में एक ऐसी क्रूरता थी जो किसी भी मर्द के पसीने छुड़ा दे।

ये निहारिका सिंघानिया थी। देश की सबसे महंगी, शातिर और खतरनाक कॉर्पोरेट लॉयर। उसे रायचंद ग्रुप का 'क्लीनर' कहा जाता था। वो कानून की किताबों से नहीं, बल्कि ब्लैकमेल और साज़िशों से केस जीतती थी।

"रिलैक्स के.के.," निहारिका ने अपनी भारी और कॉन्फिडेंट आवाज़ में कहा और विक्रांत की तरफ एक व्यंग्यात्मक मुस्कान उछाली। "आर्यन प्रताप ने सिर्फ एक पब्लिक स्टंट किया है। असली खेल तो कागज़ों पर होता है, और कागज़ बदलना मुझे बहुत अच्छे से आता है।"

के.के. रायचंद ने गहरी सांस ली और कुर्सी पर बैठ गया। "तुम क्या करने वाली हो निहारिका?"

"मैंने दिल्ली में कुछ फोन कॉल्स कर दिए हैं," निहारिका ने अपनी फाइल मेज़ पर रखते हुए कहा। "कल सुबह तक सेंट्रल इन्वेस्टिगेशन टीम ये डिक्लेयर कर देगी कि वो यूरेनियम कॉन्ट्रैक्ट माया चौधरी और आर्यन प्रताप ने मिलकर बनाया था। हम साबित करेंगे कि आर्यन ने वो यूरेनियम विदेशी आतंकियों को बेचने का प्लान बनाया था और हमने तो बस उसे रोकने की कोशिश की थी।

पर बिखर गए। सामने विक्रांत रायचंद सिर झुकाए खड़ा था। उसका पूरा शरीर खौफ से कांप रहा था।

"एक औरत! एक औरत के जिस्म की खातिर तुमने हज़ारों करोड़ का यूरेनियम टेंडर और हमारी पूरी कंपनी की साख दांव पर लगा दी!" के.के. रायचंद दहाड़ रहा था। "पूरा देश टीवी पर देख रहा है कि रायचंद ग्रुप देशद्रोह कर रहा है! हमारे शेयर्स धड़ाम से गिर गए हैं।"

"डैड... मुझे नहीं पता था माया इतनी शातिर निकलेगी। और आर्यन... वो तो मर चुका था!" विक्रांत ने हकलाते हुए अपनी सफाई देने की कोशिश की।

"शट अप!" के.के. ने ज़ोर से मेज़ पर हाथ मारा। "अगर आर्यन प्रताप ने मुंह खोल दिया तो हम सब तिहाड़ में चक्की पीसेंगे। हमें एक ऐसा क्राइसिस मैनेजर चाहिए जो आर्यन को उसी के बिछाए जाल में फंसा सके।"

तभी बोर्डरूम का भारी दरवाज़ा खुला। एक बेहद लंबी, खूबसूरत और तीखे नैन-नक्श वाली औरत अंदर दाखिल हुई। उसने एक स्लीक ब्लैक बिज़नेस सूट पहना था, जो उसके सुडौल बदन पर बिल्कुल फिट था। उसके बाल एक पोनीटेल में बंधे थे और उसकी आंखों में एक ऐसी क्रूरता थी जो किसी भी मर्द के पसीने छुड़ा दे।

ये निहारिका सिंघानिया थी। देश की सबसे महंगी, शातिर और खतरनाक कॉर्पोरेट लॉयर। उसे रायचंद ग्रुप का 'क्लीनर' कहा जाता था। वो कानून की किताबों से नहीं, बल्कि ब्लैकमेल और साज़िशों से केस जीतती थी।

"रिलैक्स के.के.," निहारिका ने अपनी भारी और कॉन्फिडेंट आवाज़ में कहा और विक्रांत की तरफ एक व्यंग्यात्मक मुस्कान उछाली। "आर्यन प्रताप ने सिर्फ एक पब्लिक स्टंट किया है। असली खेल तो कागज़ों पर होता है, और कागज़ बदलना मुझे बहुत अच्छे से आता है।"

के.के. रायचंद ने गहरी सांस ली और कुर्सी पर बैठ गया। "तुम क्या करने वाली हो निहारिका?"

"मैंने दिल्ली में कुछ फोन कॉल्स कर दिए हैं," निहारिका ने अपनी फाइल मेज़ पर रखते हुए कहा। "कल सुबह तक सेंट्रल इन्वेस्टिगेशन टीम ये डिक्लेयर कर देगी कि वो यूरेनियम कॉन्ट्रैक्ट माया चौधरी और आर्यन प्रताप ने मिलकर बनाया था। हम साबित करेंगे कि आर्यन ने वो यूरेनियम विदेशी आतंकियों को बेचने का प्लान बनाया था और हमने तो बस उसे रोकने की कोशिश की थी।

आर्यन एक्सपोज़र नहीं कर रहा था, वो खुद को बचाने के लिए रायचंद ग्रुप पर कीचड़ उछाल रहा था।"

विक्रांत की आंखें चमक उठीं। "ये तो मास्टरस्ट्रोक है!"

निहारिका ने विक्रांत को ऊपर से नीचे तक देखा। "तुम्हारी बेवकूफियों को सुधारना मेरी मजबूरी है विक्रांत। वरना तुम तो किसी भी बिछी हुई चादर पर अपना दिमाग छोड़ आते हो।"

के.के. रायचंद वहां से निकल गया। बोर्डरूम में अब सिर्फ विक्रांत और निहारिका अकेले थे।

विक्रांत धीरे से निहारिका के करीब आया। कल रात की उस खौफनाक हार के बाद उसे एक सहारे की ज़रूरत थी। "तुमने मुझे बचा लिया निहारिका," विक्रांत ने निहारिका की कमर पर हाथ रखने की कोशिश की।

निहारिका ने एक झटके में विक्रांत का हाथ झटक दिया और उसे कॉलर से पकड़कर पीछे दीवार की तरफ धकेल दिया।

"तुम्हारी वो सस्ती मुख्यमंत्री माया चौधरी तुम्हारे पैरों में गिरती होगी विक्रांत, लेकिन मैं नहीं," निहारिका ने विक्रांत के बिल्कुल करीब आकर फुसफुसाया। उसकी गर्म सांसें विक्रांत के चेहरे से टकरा रही थीं।

निहारिका का हुस्न और उसका ये डोमिनेंट (हावी होने वाला) अंदाज़ विक्रांत के अंदर एक अजीब सी हवस पैदा कर रहा था। निहारिका ने विक्रांत की बेल्ट को खींचा और उसे अपने और करीब कर लिया।

"तुम सिर्फ एक बिगड़े हुए रईसज़ादे हो विक्रांत," निहारिका ने अपने होंठ विक्रांत के कान के पास ले जाकर कहा। "मुझे वो मर्द पसंद हैं जिन्हें कंट्रोल किया जा सके। और तुम इस वक्त पूरी तरह मेरे कंट्रोल में हो।"

निहारिका ने विक्रांत के होठों को एक बेहद हिंसक और जंगली चुंबन में जकड़ लिया। विक्रांत ने भी कोई विरोध नहीं किया। कल रात माया के धोखे के बाद, आज वो निहारिका के इस क्रूर लेकिन मदहोश कर देने वाले जाल में खुशी-खुशी फंस रहा था।

बोर्डरूम के उस बंद दरवाज़े के पीछे वासना और कॉर्पोरेट साज़िश का एक नया गठबंधन बन रहा था। निहारिका ने विक्रांत को कॉन्फ्रेंस टेबल पर धकेल दिया। कपड़ों की सरसराहट और भारी सांसों के बीच निहारिका विक्रांत पर पूरी तरह से हावी थी। वो विक्रांत के जिस्म का इस्तेमाल सिर्फ अपनी थकान

गाड़ी के अंदर दो हथियारबंद कमांडो बैठे थे।

अचानक, उनमें से एक कमांडो ने अपना हेलमेट उतारा। वो कोई और नहीं, गजराज था।

गजराज ने आर्यन के चेहरे से काला कपड़ा हटाया और अपनी जेब से एक मास्टर की (चाबी) निकालकर आर्यन की हथकड़ी खोल दी।

आर्यन ने अपने हाथों को मला और एक ठंडी मुस्कान के साथ गजराज की तरफ देखा। "रायचंद ने अपना पहला कार्ड खेल दिया गजराज?"

"हां बॉस," गजराज ने अपनी राइफल नीचे करते हुए कहा। "दिल्ली से ऑर्डर आ गए हैं। वो आपको यूरेनियम का इंटरनेशनल स्मगलर बनाकर रास्ते में ही फेक एनकाउंटर में मारने वाले थे। लेकिन हमारी टीम ने उनकी गाड़ी को पहले ही इंटरसेप्ट कर लिया। अब ये गाड़ी सीधे हमारे सेफ हाउस जा रही है।"

आर्यन ने गाड़ी की खिड़की से बाहर चमकते हुए शहर को देखा। उसकी आंखों में कोई डर नहीं था। वो जानता था कि निहारिका सिंघानिया और के.के. रायचंद जैसे लोग सिस्टम को कैसे खरीदते हैं। लेकिन आर्यन अब सिस्टम से नहीं लड़ रहा था; वो अब वो अदृश्य मौत बन चुका था जिसे कोई एजेंसी पकड़ नहीं सकती थी।

"उन्होंने मेरे लिए चक्रव्यूह रचा है," आर्यन ने अपनी पिस्तौल लोड करते हुए कहा। "अब उन्हें ये नहीं पता कि चक्रव्यूह के अंदर जो घुसा है, वो अभिमन्यु नहीं, साक्षात विराज है। कल सुबह की किरण के साथ रायचंद साम्राज्य का पहला खंभा गिरेगा।"

गाड़ी अंधेरे में गायब हो गई। आर्यन प्रताप की मौत का तमाशा अब एक खौफनाक गुरिल्ला वॉर (छापामार युद्ध) में बदलने वाला था, और निहारिका सिंघानिया को ये भनक तक नहीं थी कि उसका पाला किस शैतान से पड़ा है।

## अध्याय 22:

दिल्ली के सबसे महंगे इलाके में स्थित निहारिका सिंघानिया का डुप्लेक्स फ्लैट किसी फाइव-स्टार होटल से भी ज़्यादा आलीशान था। सुबह की हल्की धूप बेडरूम की बड़ी कांच की खिड़कियों से अंदर आ रही थी।

विशाल किंग-साइज़ बेड पर रेशमी चादरें बिखरी हुई थीं। विक्रांत रायचंद पेट के बल लेटा हुआ था। उसका नंगा, मस्कुलर बदन पसीने से हल्का चमक रहा था और उसकी सांसें अभी भी भारी थीं। कल रात निहारिका ने उसे वो सब महसूस कराया था जो उसने अपनी पूरी ज़िंदगी में किसी औरत के साथ महसूस नहीं किया था। निहारिका का प्यार नहीं, बल्कि उसका वो खौफनाक वर्चस्व (डोमिनेंस) विक्रांत के लिए एक नशे की तरह बन गया था।

बाथरूम का दरवाज़ा खुला और निहारिका बाहर आई। उसने अपने भीगे बालों को एक सफेद तौलिये में लपेटा हुआ था और बदन पर सिर्फ एक बेहद छोटी, काली सैटिन की स्लिप पहनी थी, जो उसकी जांघों के ऊपरी हिस्से तक ही पहुंच रही थी। उसके सुडौल और कसे हुए जिस्म का हर कर्व एक जानलेवा कशिश पैदा कर रहा था।

विक्रांत ने करवट ली और निहारिका को अपनी भूखी नज़रों से देखने लगा। "तुम सुबह और भी ज़्यादा कातिलाना लगती हो निहारिका," विक्रांत ने अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा। "इधर आओ।"

निहारिका के होठों पर एक ठंडी, व्यंग्यात्मक मुस्कान आ गई। वो विक्रांत के पास आई, लेकिन उसके बगल में लेटने के बजाय, उसने अपना घुटना बिस्तर पर रखा और विक्रांत के ऊपर झुक गई।

"मैं तुम्हारी उन सस्ती मॉडल्स या माया चौधरी जैसी बेवकूफ औरतों में से नहीं हूं विक्रांत, जो एक रात के बाद तुम्हारे सीने से लगकर लेट जाएं," निहारिका ने अपनी उंगलियों से विक्रांत के सीने के बालों को खींचते हुए कहा। उसकी आवाज़ में एक सर्द खनक थी। "रायचंद साम्राज्य को अब एक कमज़ोर राजकुमार की नहीं, एक खूंखार रानी की ज़रूरत है। और तुम मेरे हुक्म के गुलाम हो।"

हाईवे से गुज़रेगा। तीन बुलेटप्रूफ एसयूवी हैं और अंदर पंद्रह एक्स-मिलिट्री मर्सिनरीज़ (भाड़े के सैनिक) हैं। हथियारों से पूरी तरह लैस।"

"निहारिका सिंघानिया..." आर्यन ने वो नाम बुदबुदाया। "के.के. रायचंद ने अपना सबसे खतरनाक मोहरा आगे कर दिया है। निहारिका को लगता है कि वो इस राज्य के सिस्टम को खरीद सकती है।"

"हम उन पर सीधा हमला नहीं कर सकते बॉस," गजराज ने चिंता जताते हुए कहा। "वो गाड़ियां बुलेटप्रूफ हैं और उनके पास हैवी मशीनगन्स हैं। हम सिर्फ दो लोग हैं।"

आर्यन ने एक लाल मार्कर उठाया और हाईवे के एक सुनसान, घुमावदार हिस्से पर एक क्रॉस का निशान बना दिया।

"हम उनसे गोलियों से नहीं लड़ेंगे गजराज," आर्यन के चेहरे पर एक खौफनाक मुस्कान आ गई। "हम उन्हें अंधा कर देंगे। ये लड़ाई ताकत की नहीं, खौफ की है। आज रात निहारिका सिंघानिया को पता चलेगा कि आर्यन प्रताप अब एक नेता नहीं, एक प्रेत बन चुका है।"

रात के ग्यारह बजकर बीस मिनट। दिल्ली-जयपुर हाईवे का वो हिस्सा जो अरावली की पहाड़ियों के बीच से गुज़रता था, पूरी तरह सुनसान था।

सड़क पर तीन जेड-ब्लैक बुलेटप्रूफ लैंड क्रूज़र बहुत तेज़ रफ्तार से दौड़ रही थीं। बीच वाली गाड़ी में वो पांच सौ करोड़ का कंसाइनमेंट था। गाड़ियों के अंदर बैठे निहारिका के मर्सिनरीज़ अपनी ऑटोमैटिक राइफल्स ताने पूरी तरह अलर्ट थे।

तभी, सबसे आगे वाली गाड़ी के ड्राइवर को सड़क के बीचों-बीच कुछ चमकता हुआ दिखाई दिया।

"ब्रेक! ब्रेक!" को-ड्राइवर चिल्लाया।

ड्राइवर ने ज़ोर से ब्रेक मारे। गाड़ी के टायर सड़क पर रगड़ खाते हुए चीख पड़े। पीछे वाली दोनों गाड़ियों ने भी तुरंत ब्रेक लगाए।

सड़क के बीचों-बीच लोहे की भारी स्पाइक-स्ट्रिप्स (कांटेदार पट्टियां) बिछी थीं। लेकिन बात सिर्फ इतनी नहीं थी। जैसे ही गाड़ियां रुकीं, हाईवे के दोनों तरफ घनी झाड़ियों में छिपे हुए चार मिलिट्री-ग्रेड ईएमपी (इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक पल्स) डिवाइस ऑन हो गए।

एक तेज़ भिनभिनाहट की आवाज़ हुई और अगले ही सेकंड तीनों गाड़ियों के इंजन, हेडलाइट्स, डैशबोर्ड और अंदर बैठे कमांडोज़ के नाइट-विज़न गॉगल्स... सब कुछ एक झटके में फुस्स हो गया। गाड़ियां लोहे के बेजान डिब्बों में तब्दील हो गईं। चारों तरफ घुप अंधेरा छा गया।

"ये क्या बकवास है! एंबुश! (हमला!)" लीड कमांडो चिल्लाया।

कमांडोज़ ने गाड़ियों के दरवाज़े खोले और बाहर पोज़िशन लेने लगे। लेकिन तभी आसमान से कुछ गिरा।

हाईवे के दोनों तरफ से धुएं के ग्रेनेड्स (Smoke Grenades) दागे गए। कुछ ही सेकंड्स में पूरा हाईवे गाढ़े, सफेद और दमघोंटू धुएं से भर गया। कमांडोज़ को अपना हाथ तक दिखाई नहीं दे रहा था। वो खांसने लगे।

"फायर एट विल! (अंधाधुंध गोली चलाओ!)" लीडर ने हुक्म दिया।

कमांडोज़ ने धुएं में गोलियां चलानी शुरू कर दीं, लेकिन उन्हें पता ही नहीं था कि दुश्मन कहां है।

तभी उस धुएं के बीच से मौत का तांडव शुरू हुआ।

आर्यन प्रताप धुएं में एक प्रेत की तरह चल रहा था। उसने एक स्पेशल थर्मल-गॉगल पहन रखा था, जिससे उसे कमांडोज़ की बॉडी हीट साफ दिखाई दे रही थी। आर्यन के हाथों में कोई बंदूक नहीं थी। उसने अपने दोनों हाथों में कार्बन-स्टील के दो धारदार कॉम्बैट चाकू पकड़े हुए थे।

एक कमांडो धुएं में खांसता हुआ आगे बढ़ा। आर्यन उसके पीछे किसी साये की तरह पहुंचा। उसने एक हाथ से कमांडो का मुंह दबाया और दूसरे हाथ से अपनी कोहनी उसके गले पर दे मारी। कमांडो बिना कोई आवाज़ किए ज़मीन पर गिर गया।

अगले दो मिनट हाईवे पर सिर्फ खौफ का राज था। आर्यन धुएं के बीच से निकलता, किसी कमांडो के घुटने पर वार करता, किसी की गर्दन मरोड़ता और वापस धुएं में गायब हो जाता। गजराज दूसरी तरफ से स्नाइपर राइफल के ज़रिए उन कमांडोज़ के पैरों पर सटीक निशाने लगा रहा था।

पंद्रह ट्रेंड मर्सिनरीज़ महज़ पांच मिनट में ज़मीन पर तड़प रहे थे। आर्यन ने किसी को जान से नहीं मारा था, लेकिन उसने सबको बुरी तरह अपाहिज कर दिया था।

आर्यन बीच वाली लैंड क्रूज़र के पास पहुंचा। उसने अपनी पिस्तौल निकाली और गाड़ी के अंदर छिपे आखिरी गार्ड के सिर पर निशाना तान दिया। गार्ड ने डर के मारे हाथ खड़े कर दिए।

आर्यन ने गाड़ी का पिछला दरवाज़ा खोला। वहां टाइटेनियम के दो बड़े ब्रीफकेस रखे थे। आर्यन ने अपनी पिस्तौल की बट से एक ब्रीफकेस का लॉक तोड़ा। अंदर बिना तराशे हुए हीरे और करोड़ों के बांड्स चमक रहे थे।

आर्यन ने उन हीरों को देखा, लेकिन उसकी आंखों में कोई लालच नहीं था। उसने अपनी जेब से एक डिजिटल हार्ड-ड्राइव निकाली जो उसने उन ब्रीफकेस के अंदर से निकाली थी। ये वो लेजर (खाता) था, जिसमें उन सभी सेंट्रल डायरेक्टर्स और मंत्रियों के नाम थे जिन्हें निहारिका रिश्वत देने वाली थी।

"गजराज!" आर्यन ने आवाज़ दी। "हीरों को सड़क पर बिखेर दो।"

गजराज हैरान रह गया। "बॉस? ये करोड़ों के हीरे हैं!"

"मुझे सत्ता की भीख नहीं चाहिए गजराज, मुझे रायचंद का गुरूर तोड़ना है," आर्यन ने ब्रीफकेस उठाया और सारे हीरे हाईवे की पक्की सड़क पर फेंक दिए। अंधेरे में वो हीरे कांच के टुकड़ों की तरह बिखर गए।

आर्यन ने एक छोटा सा कागज़ का टुकड़ा उस खाली ब्रीफकेस के अंदर रखा, गाड़ी का दरवाज़ा खुला छोड़ा और गजराज के साथ अंधेरे में ओझल हो गया।

रात के एक बज चुके थे। निहारिका सिंघानिया अपने फ्लैट के स्टडी रूम में बैठी महंगी स्कॉच पी रही थी। वो सेंट्रल डायरेक्टर्स के कंफर्मेशन कॉल का इंतज़ार कर रही थी।

तभी उसका सैटेलाइट फोन बजा।

"डील डन?" निहारिका ने अपनी भारी आवाज़ में पूछा।

"मैम..." दूसरी तरफ से उसके लीड कमांडो की कांपती हुई और दर्द से भरी आवाज़ आई। "हम लुट गए मैम। हमारा पूरा काफिला तबाह हो गया है। वो इंसान नहीं था मैम... वो कोई भूत था।"

निहारिका के हाथ से स्कॉच का ग्लास छलक गया। "क्या बकवास कर रहे हो? हीरे कहां हैं?"

"हीरे... हीरे सड़क पर पड़े हैं मैम। उसने हीरों को हाथ तक नहीं लगाया। उसने सिर्फ वो डिजिटल लेजर चुराया है। और... और उसने गाड़ी में एक पर्ची छोड़ी है।"

"क्या लिखा है उसमें?" निहारिका का खून खौलने लगा था।

"उसमें लिखा है मैम... 'वेलकम टू द गेम, निहारिका। - द घोस्ट (प्रेत)'।"

निहारिका सिंघानिया का पूरा बदन गुस्से और खौफ के मारे कांपने लगा। उसने फोन ज़मीन पर पटक कर चकनाचूर कर दिया। उसकी वो सर्द और खूंखार मुस्कान अब टूट चुकी थी। उसे समझ आ गया था कि आर्यन प्रताप सिर्फ एक मरा हुआ नेता नहीं है। उसने निहारिका के 500 करोड़ रुपयों को सड़क की धूल में मिलाकर ये साबित कर दिया था कि वो रायचंद साम्राज्य की जड़ें काटने आ चुका है।

निहारिका ने अपने बिखरे हुए बालों को पीछे किया और अपनी लाल आंखें बंद कर लीं। आर्यन प्रताप ने मौत के इस खेल में अपनी पहली चाल चल दी थी, और अब निहारिका को अपने सबसे गंदे और खूनी हथियारों का इस्तेमाल करना था।

ये जंग अब सिर्फ सत्ता की नहीं, बल्कि अस्तित्व की बन चुकी थी।

## अध्याय 23:

दिल्ली के पॉश इलाके में स्थित निहारिका सिंघानिया के फ्लैट का जिम एरिया आज सुबह किसी जंग के मैदान जैसा लग रहा था।

निहारिका ने ब्लैक स्पोर्ट्स ब्रा और टाइट योगा पैंट्स पहनी हुई थीं। उसका पूरा बदन पसीने से भीग कर चमक रहा था। वो लेदर के एक भारी पंचिंग बैग पर अंधाधुंध घूंसे और लातें बरसा रही थी। हर पंच के साथ उसके मुंह से एक खूंखार फुफकार निकल रही थी। बीती रात आर्यन प्रताप ने उसके 500 करोड़ रुपये सड़क पर फेंक कर उसके गुरूर को जो चोट पहुंचाई थी, वो निहारिका को अंदर ही अंदर जला रही थी।

विक्रांत रायचंद एक तौलिया लिए जिम के दरवाज़े पर खड़ा था। निहारिका का ये वाइल्ड और आक्रामक रूप देखकर विक्रांत के अंदर डर और हवस, दोनों एक साथ दौड़ रहे थे।

निहारिका ने एक ज़ोरदार किक मारकर पंचिंग बैग को दूर धकेला और हांफते हुए मुड़ी। उसकी नज़र विक्रांत पर पड़ी।

"तुम्हें दरवाज़े पर खड़े रहने के लिए नहीं रखा है मैंने," निहारिका ने अपनी भारी और कमांडिंग आवाज़ में कहा। उसने अपने बॉक्सिंग ग्लव्स उतारे और ज़मीन पर फेंक दिए।

विक्रांत धीरे से आगे बढ़ा। उसने तौलिया निहारिका की तरफ बढ़ाया। लेकिन निहारिका ने तौलिया लेने के बजाय विक्रांत की शर्ट का कॉलर पकड़ा और उसे अपनी तरफ खींच लिया। विक्रांत का चेहरा निहारिका के पसीने से भीगे हुए सीने के बिल्कुल करीब था।

"रायचंद साम्राज्य की नींव हिल रही है विक्रांत, और तुम अभी भी एक डरे हुए पिल्ले की तरह कांप रहे हो," निहारिका ने विक्रांत की आंखों में घूरते हुए कहा।

"निहारिका... वो एक भूत है। उसने हमारे बेस्ट कमांडोज़ को बिना गोली चलाए हरा दिया," विक्रांत की आवाज़ में खौफ था।

"भूत सिर्फ कहानियों में होते हैं। असली दुनिया में सिर्फ खून और पैसा होता है," निहारिका ने अचानक विक्रांत को धक्का देकर जिम मैट पर गिरा दिया। विक्रांत पीठ के बल गिरा।

निहारिका उसके ऊपर आ गई। उसने अपने पैरों से विक्रांत की दोनों बाजुओं को दबा लिया, ताकि वो हिल न सके। विक्रांत के दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। निहारिका की आंखों में एक अजीब सी वासना और क्रूरता का मिश्रण था। उसने अपना हाथ विक्रांत के सीने पर रखा और धीरे-धीरे नीचे ले जाते हुए उसकी बेल्ट को खोल दिया।

"तुम्हें लगता है माया चौधरी ने तुम्हें कंट्रोल किया था?" निहारिका ने विक्रांत के होठों के करीब आकर फुसफुसाया। "माया एक सस्ती राजनेता थी। मैं तुम्हें वो दर्द और वो नशा दूंगी, जिसके बाद तुम किसी और औरत के बारे में सोच भी नहीं पाओगे।"

निहारिका ने विक्रांत की शर्ट फाड़ दी। उसके नाख़ून विक्रांत के सीने पर खरोंचें बना रहे थे, जिससे हल्का खून रिसने लगा। लेकिन इस दर्द के साथ जो उत्तेजना विक्रांत को महसूस हो रही थी, वो उसे पागल कर रही थी। निहारिका पूरी तरह से हावी थी। वो विक्रांत के जिस्म का इस्तेमाल सिर्फ अपनी कुंठा (frustration) और अपना गुस्सा निकालने के लिए कर रही थी। उस जिम मैट पर पसीने, वासना और एक खौफनाक वर्चस्व (डोमिनेंस) का खेल शुरू हो गया। विक्रांत पूरी तरह निहारिका की मुट्ठी में था— एक ऐसा खिलौना जिसे वो जब चाहे इस्तेमाल कर सकती थी और जब चाहे तोड़ सकती थी।

दूसरी तरफ, शहर के बाहर उस बंद पड़ी कोल्ड-स्टोरेज फैक्ट्री में बर्फीली ठंड के बीच आर्यन प्रताप का दिमाग एक सुपरकंप्यूटर की तरह चल रहा था।

टेबल पर तीन बड़े मॉनिटर्स लगे थे। गजराज ने वो डिजिटल लेजर (हार्ड ड्राइव) कनेक्ट कर दिया था जिसे आर्यन ने रात हाईवे से चुराया था। स्क्रीन पर कोड्स की लाइनें डिक्रिप्ट हो रही थीं।

"बॉस, एन्क्रिप्शन बहुत तगड़ा है, लेकिन कुणाल ने जो सॉफ्टवेयर दिया है, वो इसे तोड़ रहा है," गजराज ने कीबोर्ड पर उंगलियां चलाते हुए कहा।

कुछ ही सेकंड्स में स्क्रीन पर एक लंबी लिस्ट फ्लैश हो गई।

आर्यन की आंखें चमक उठीं। ये सिर्फ एक लिस्ट नहीं थी, ये पूरे देश की सत्ता का एक्स-रे था। इसमें उन सभी सेंट्रल डायरेक्टर्स, मंत्रियों और जजों के नाम थे जिनके विदेशी बैंक अकाउंट्स में रायचंद ग्रुप हर महीने करोड़ों रुपये ट्रांसफर करता था।

"ये रही वो चाबी, जिससे निहारिका सिंघानिया सिस्टम को लॉक करती है," आर्यन ने स्क्रीन को घूरते हुए कहा। उसकी नज़र एक खास नाम पर जाकर टिक गई।

**'डायरेक्टर आर. के. वर्मा - सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (CBI)'**

ये वही अफसर था जिसे आर्यन प्रताप का फेक एनकाउंटर करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी।

"गजराज, डायरेक्टर वर्मा का पर्सनल नंबर निकालो," आर्यन ने अपनी पिस्तौल मेज़ पर रखते हुए कहा। "अब वक्त आ गया है कि शिकार अपने शिकारी को फोन करे।"

कुछ ही मिनटों बाद, दिल्ली के सीबीआई हेडक्वार्टर में बैठे डायरेक्टर वर्मा का सिक्योर वीआईपी फोन बजा। ये नंबर सिर्फ होम मिनिस्टर और प्रधानमंत्री कार्यालय के पास था। वर्मा ने तुरंत फोन उठाया।

"जय हिंद," वर्मा ने भारी आवाज़ में कहा।

"जय हिंद, डायरेक्टर साहब," दूसरी तरफ से आर्यन की सर्द आवाज़ आई। "सुना है आप मुझे एक इंटरनेशनल टेररिस्ट घोषित करने की फाइल तैयार कर रहे हैं?"

वर्मा के हाथ से पेन छूटकर मेज़ पर गिर गया। उसकी रीढ़ की हड्डी में खौफ की एक लहर दौड़ गई। "तुम... आर्यन प्रताप? तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम मुझे सीधे कॉल कर रहे हो? हम तुम्हारी लोकेशन ट्रेस कर रहे हैं, तुम बचोगे नहीं!"

"मेरी लोकेशन ट्रेस करने से पहले अपने स्विस बैंक अकाउंट नंबर '4409-XY-772' का बैलेंस चेक कर लीजिए वर्मा जी," आर्यन ने बेहद शांति से वो नंबर पढ़ा जो लेजर में लिखा था। "पिछले तीन सालों में के.के. रायचंद ने आपको 120 करोड़ रुपये भेजे हैं। और मेरे पास उन सभी ट्रांजेक्शंस के डिजिटल सिग्नेचर मौजूद हैं।"

फोन पर अचानक श्मशान जैसा सन्नाटा छा गया। वर्मा की सांसें अटक गईं।

"तुम... तुम क्या चाहते हो?" वर्मा की आवाज़ अब एक डरे हुए चूहे जैसी हो गई थी।

"मैं सिस्टम को साफ करने निकला हूं वर्मा जी, और मुझे अपने घर का कचरा साफ करने के लिए एक झाड़ू चाहिए," आर्यन की आवाज़ में मौत की गूंज थी। "आज से आप के.के. रायचंद के लिए नहीं, द घोस्ट (प्रेत) के लिए काम

करेंगे। निहारिका सिंघानिया जो भी प्लान बनाएगी, उसकी खबर मेरे पास सबसे पहले आनी चाहिए। अगर आपने चालाकी की, तो कल सुबह पूरा देश आपका बैंक स्टेटमेंट न्यूज़ चैनल्स पर देखेगा। क्या आपको मेरी बात समझ आई?"

"जी... जी आर्यन," वर्मा ने हार मानते हुए कहा।

आर्यन ने फोन काट दिया। उसने रायचंद के सबसे बड़े हथियार को उसी के खिलाफ मोड़ दिया था।

दोपहर के तीन बज चुके थे। दिल्ली के सबसे बड़े प्राइवेट वीआईपी अस्पताल के एक सीक्रेट फ्लोर पर सन्नाटा पसरा था। इस फ्लोर को पूरी तरह से पुलिस ने घेर रखा था।

अस्पताल के एक शानदार वीआईपी कमरे में, व्हीलचेयर पर एक बूढ़ा, कमज़ोर और हारा हुआ शख्स बैठा था। उसकी दोनों टांगों पर प्लास्टर बंधा था और चेहरे पर गहरी झुर्रियां आ चुकी थीं। ये शांतनु मुखर्जी था— राज्य का वो पूर्व किंगमेकर, जिसे आर्यन ने अपने हाथों से अपाहिज बना दिया था।

कमरे का दरवाज़ा खुला और निहारिका सिंघानिया अंदर दाखिल हुई। उसने अपना ब्लैक कोट उतारा और सोफे पर बैठ गई।

शांतनु ने अपनी सूखी हुई आंखों से निहारिका को देखा। "मैं जानता था कि के.के. रायचंद किसी न किसी को मेरे पास भेजेगा। क्या चाहते हो तुम लोग? मेरी तो राजनीति ही खत्म हो चुकी है।"

"तुम्हारी राजनीति खत्म हुई है शांतनु, तुम्हारा दिमाग नहीं," निहारिका ने अपने बैग से एक सिगार निकालकर सुलगाया। "तुमने आर्यन प्रताप को बनाया था। तुमने उसे राजनीति सिखाई। तुम जानते हो कि वो कैसे सोचता है। मुझे आर्यन की कमज़ोरी चाहिए।"

शांतनु के होठों पर एक दर्दनाक और ज़हरीली मुस्कान आ गई। "आर्यन की कमज़ोरी? तुम लोग बेवकूफ हो निहारिका। आर्यन पैसे, कुर्सी या मौत से नहीं डरता। वो एक ऐसा आग का गोला है जो सब कुछ जला देना चाहता है।"

"हर इंसान की कोई न कोई कमज़ोरी होती है शांतनु," निहारिका ने सिगार का धुआं छोड़ते हुए कहा। "उसे ढूंढो, वरना तिहाड़ जेल के जनरल वॉर्ड में तुम्हारी जो हालत होगी, वो मैं तुम्हें बता नहीं सकती।"

शांतनु ने अपनी व्हीलचेयर को थोड़ा आगे किया। उसकी आंखों में अपने इंतकाम की आग भड़क उठी। "आर्यन का कोई परिवार नहीं है। उसका कोई प्यार नहीं है। लेकिन... आर्यन की एक बहुत बड़ी साइकोलॉजिकल कमज़ोरी है। उसकी ज़िद।"

"कैसी ज़िद?" निहारिका ने आंखें सिकोड़ते हुए पूछा।

"आर्यन कभी बेगुनाहों का खून नहीं बहाता। वो सिर्फ सिस्टम के लोगों को मारता है," शांतनु ने खांसते हुए कहा। "अगर तुम उसे किसी जंगल या फैक्ट्री में ढूंढोगी, तो वो तुम्हें काट डालेगा। लेकिन अगर तुम उसे मजबूर करो कि वो पब्लिक के बीच आए... अगर तुम किसी ऐसे इंसान की जान दांव पर लगा दो जो पूरी तरह निर्दोष है, तो आर्यन उसे बचाने के लिए अपने बिल से बाहर आ जाएगा।"

निहारिका के चेहरे पर एक खौफनाक और शातिर मुस्कान छा गई। उसे अपना मास्टरस्ट्रोक मिल गया था।

"निर्दोष..." निहारिका ने सिगार ऐशट्रे में बुझाते हुए कहा। "तो फिर हम आर्यन को उसी के बनाए हुए उसूलों में फंसाएंगे।"

निहारिका ने अपना फोन निकाला और विक्रांत को कॉल किया।

"विक्रांत, वो जर्नलिस्ट... तनिशा। वो आर्यन का सबसे बड़ा सपोर्ट सिस्टम है," निहारिका की आवाज़ में मौत का फरमान था। "तनिशा को उठवा लो। दिन-दहाड़े। अगर आर्यन अपनी इस दोस्त को बचाना चाहता है, तो उसे रायचंद टावर्स आना ही होगा। और जब वो वहां आएगा, तो हम उसे गोलियों से छलनी कर देंगे।"

शांतनु मुखर्जी व्हीलचेयर पर बैठा अपनी बिना दांतों वाली खौफनाक हंसी हंसने लगा। सत्ता का ये अपाहिज बादशाह भले ही खेल से बाहर हो गया था, लेकिन उसने निहारिका को वो तीर दे दिया था, जो सीधे आर्यन के सीने में जाकर लगने वाला था।

(खेल अब और भी खूनी होने वाला था। आर्यन प्रताप ने सिस्टम को हैक कर लिया था, लेकिन निहारिका ने आर्यन की इंसानियत को ही अपना हथियार बना लिया था। अब देखना ये था कि क्या द घोस्ट अपनी दोस्त को बचाने के लिए रायचंद के चक्रव्यूह में फंसेगा, या फिर वो एक ऐसा महाविस्फोट करेगा जिसकी गूंज से पूरी दिल्ली दहल जाएगी।)

## अध्याय 24:

राजधानी के बाहरी इलाके में स्थित एक सरकारी वीआईपी गेस्ट हाउस को अब एक अस्थायी 'सब-जेल' में तब्दील कर दिया गया था। यहीं पर राज्य की पूर्व मुख्यमंत्री, माया चौधरी को कड़ी सुरक्षा के बीच रखा गया था। बाहर मीडिया का जमावड़ा था, लेकिन अंदर के एक बड़े और आलीशान कमरे में माया अकेली थी।

उसका वो कातिलाना ब्लड-रेड सिल्क गाउन अब कई जगह से फट चुका था। उसके बाल बिखरे हुए थे और चेहरे पर थकान थी। लेकिन माया वो औरत थी जो राख के ढेर से भी सत्ता का महल खड़ी कर सकती थी। उसने कमरे में लगे शीशे में खुद को देखा। उसका हुस्न अभी भी किसी भी मर्द का ईमान डिगाने के लिए काफी था।

कमरे के दरवाज़े पर ड्यूटी दे रहा सब-इंस्पेक्टर राणे एक 28 साल का युवा और अनुभवहीन पुलिसवाला था। वो बार-बार दरवाज़े के छोटे से शीशे से माया को छुप-छुप कर देख रहा था।

माया की पारखी नज़रों ने राणे की इस कमज़ोरी को पकड़ लिया। उसने अपने फटे हुए सिल्क गाउन के नेकलाइन को जानबूझकर थोड़ा और खिसका दिया, जिससे उसकी गहरी क्लीवेज और सफेद दूधिया जिस्म का एक बड़ा हिस्सा नंगा हो गया।

"इंस्पेक्टर..." माया ने अपनी सबसे नशीली और दर्द भरी आवाज़ में पुकारा।

राणे घबराते हुए दरवाज़ा खोलकर अंदर आया। "जी... जी मैडम? क्या हुआ?"

माया ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गई और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। राणे तुरंत उसके पास गया। "मुझे बहुत दर्द हो रहा है... आर्यन ने मुझे बहुत मारा है," माया ने राणे का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने नंगे कंधे पर रख दिया।

राणे के शरीर में करंट सा दौड़ गया। राज्य की सबसे खूबसूरत और ताकतवर औरत इस वक्त उसके सामने आधी नंगी और बेबस बैठी थी। माया ने राणे की वर्दी को पकड़ा और उसे अपने बिल्कुल करीब खींच लिया। राणे की सांसें

भारी होने लगीं। माया का गर्म, पसीने और परफ्यूम से महकता बदन राणे के सीने से रगड़ खा रहा था।

"मुझसे ये ज़िल्लत बर्दाश्त नहीं हो रही राणे," माया ने अपने होंठ राणे के कान के पास ले जाकर फुसफुसाया। "मुझे बस एक फोन कॉल करना है। मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगी... और अगर तुमने मेरी मदद की, तो आज रात ये पूरा जिस्म सिर्फ तुम्हारा होगा।"

माया ने राणे के होठों को चूम लिया। ये एक ऐसा मादक और हवस से भरा चुंबन था कि राणे अपना सारा होश, अपनी ड्यूटी और अपना ज़मीर भूल गया। उसने कांपते हाथों से अपना स्मार्टफोन निकाला और माया के हाथ में रख दिया।

माया ने चुंबन तोड़ा, एक कातिलाना मुस्कान दी और फोन लेकर बाथरूम में चली गई। राणे बाहर खड़ा हांफ रहा था, अपनी हवस पूरी होने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन उसे नहीं पता था कि माया ने इस एक फोन कॉल से राज्य की राजनीति में एक नया ज़हर घोल दिया था।

शाम के छह बज चुके थे। 'द नेशनल ट्रुथ' न्यूज़ चैनल की बेसमेंट पार्किंग में सन्नाटा था।

तनिशा अपनी डेस्क पर दिन भर की थका देने वाली कवरेज के बाद घर जाने के लिए अपनी मर्सिडीज की तरफ बढ़ रही थी। उसके दिमाग में आर्यन का वो सीक्रेट मैसेज घूम रहा था। वो जानती थी कि आर्यन कोई बहुत बड़ा धमाका करने वाला है।

जैसे ही तनिशा ने अपनी कार का दरवाज़ा खोला, पीछे से एक काले रंग की वैन तेज़ी से आकर उसके बिल्कुल बगल में रुकी।

इससे पहले कि तनिशा कुछ समझ पाती या चीख पाती, वैन का दरवाज़ा खुला और काले नकाब पहने तीन हट्टे-कट्टे आदमियों ने उसे दबोच लिया। तनिशा ने संघर्ष किया, अपने नाखूनों से एक नकाबपोश का चेहरा खरोंच दिया, लेकिन तभी किसी ने पीछे से एक क्लोरोफॉर्म से भीगा हुआ रुमाल उसके मुंह और नाक पर कसकर दबा दिया।

कुछ ही सेकंड्स में तनिशा की आंखों के सामने अंधेरा छा गया और उसका शरीर निढाल हो गया। उन आदमियों ने उसे वैन में फेंका और वैन बेसमेंट से धूल उड़ाती हुई बाहर निकल गई।

भारी होने लगीं। माया का गर्म, पसीने और परफ्यूम से महकता बदन राणे के सीने से रगड़ खा रहा था।

"मुझसे ये ज़िल्लत बर्दाश्त नहीं हो रही राणे," माया ने अपने होंठ राणे के कान के पास ले जाकर फुसफुसाया। "मुझे बस एक फोन कॉल करना है। मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगी... और अगर तुमने मेरी मदद की, तो आज रात ये पूरा जिस्म सिर्फ तुम्हारा होगा।"

माया ने राणे के होठों को चूम लिया। ये एक ऐसा मादक और हवस से भरा चुंबन था कि राणे अपना सारा होश, अपनी ड्यूटी और अपना ज़मीर भूल गया। उसने कांपते हाथों से अपना स्मार्टफोन निकाला और माया के हाथ में रख दिया।

माया ने चुंबन तोड़ा, एक कातिलाना मुस्कान दी और फोन लेकर बाथरूम में चली गई। राणे बाहर खड़ा हांफ रहा था, अपनी हवस पूरी होने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन उसे नहीं पता था कि माया ने इस एक फोन कॉल से राज्य की राजनीति में एक नया ज़हर घोल दिया था।

शाम के छह बज चुके थे। 'द नेशनल ट्रुथ' न्यूज़ चैनल की बेसमेंट पार्किंग में सन्नाटा था।

तनिशा अपनी डेस्क पर दिन भर की थका देने वाली कवरेज के बाद घर जाने के लिए अपनी मर्सिडीज की तरफ बढ़ रही थी। उसके दिमाग में आर्यन का वो सीक्रेट मैसेज घूम रहा था। वो जानती थी कि आर्यन कोई बहुत बड़ा धमाका करने वाला है।

जैसे ही तनिशा ने अपनी कार का दरवाज़ा खोला, पीछे से एक काले रंग की वैन तेज़ी से आकर उसके बिल्कुल बगल में रुकी।

इससे पहले कि तनिशा कुछ समझ पाती या चीख पाती, वैन का दरवाज़ा खुला और काले नकाब पहने तीन हट्टे-कट्टे आदमियों ने उसे दबोच लिया। तनिशा ने संघर्ष किया, अपने नाखूनों से एक नकाबपोश का चेहरा खरोंच दिया, लेकिन तभी किसी ने पीछे से एक क्लोरोफॉर्म से भीगा हुआ रुमाल उसके मुंह और नाक पर कसकर दबा दिया।

कुछ ही सेकंड्स में तनिशा की आंखों के सामने अंधेरा छा गया और उसका शरीर निढाल हो गया। उन आदमियों ने उसे वैन में फेंका और वैन बेसमेंट से धूल उड़ाती हुई बाहर निकल गई।

ये निहारिका सिंघानिया की प्राइवेट मर्सिनरी टीम थी। शांतनु मुखर्जी का दिया हुआ वो खौफनाक आइडिया अब ज़मीन पर उतर चुका था। आर्यन प्रताप की सबसे बड़ी कमज़ोरी—उसकी दोस्त और साथी—अब दुश्मनों के कब्ज़े में थी।

रात के आठ बजे। दिल्ली के बाहरी इलाके की कोल्ड-स्टोरेज फैक्ट्री में आर्यन प्रताप हथियारों की सफाई कर रहा था। तभी मेज़ पर रखा उसका सीक्रेट फोन बजने लगा।

आर्यन ने स्क्रीन देखी। ये तनिशा का नंबर था।

आर्यन ने तुरंत फोन उठाया। "तनिशा? सब ठीक है?"

फोन के दूसरी तरफ तनिशा की आवाज़ नहीं, बल्कि निहारिका सिंघानिया की भारी और क्रूर हँसी गूंजी।

"लगता है द घोस्ट (प्रेत) को भी इंसानों की फिक्र होने लगी है," निहारिका ने व्यंग्य कसते हुए कहा।

आर्यन की उंगलियां पिस्तौल की ग्रिप पर कस गईं। उसका जबड़ा भिंच गया। "निहारिका सिंघानिया। तुमने अपनी मौत को खुद बुलावा दिया है।"

"मौत तो आज रात बंटेगी आर्यन, लेकिन किसके हिस्से में आएगी, ये देखना दिलचस्प होगा," निहारिका ने वीडियो कॉल ऑन कर दिया।

स्क्रीन पर जो नज़ारा था, उसे देखकर आर्यन के सीने में एक तेज़ दर्द उठा। तनिशा एक कुर्सी से बंधी हुई थी। उसके होठों से खून रिस रहा था और वो बेहोशी की हालत में थी। उसके पीछे विक्रांत रायचंद खड़ा था, जिसके हाथ में एक लोहे की रॉड थी।

"आर्यन!" निहारिका की आवाज़ अब एक खूंखार आदेश में बदल गई। "रायचंद टावर्स की सबसे ऊपरी मंज़िल। रात के ठीक बारह बजे। अगर तुम पुलिस लेकर आए, या बारह बजने में एक सेकंड की भी देरी हुई, तो मैं इस खूबसूरत जर्नलिस्ट को इसी टावर की छत से नीचे फेंक दूंगी।"

"मैं आऊंगा," आर्यन ने अपनी आवाज़ को बिल्कुल शांत और बर्फ की तरह ठंडा रखा। "लेकिन याद रखना निहारिका, जब मैं उस इमारत में घुसूंगा, तो वहां से कोई भी ज़िंदा बाहर नहीं निकलेगा।"

आर्यन ने फोन काट दिया।

गजराज, जो सब सुन रहा था, आर्यन के पास आया। "बॉस, ये एक सुसाइड मिशन है! रायचंद टावर्स एक किले की तरह है। वहां चप्पे-चप्पे पर निहारिका के स्नाइपर्स और कमांडोज़ होंगे। वो चाहते ही हैं कि आप वहां जाएं ताकि वो आपको गोलियों से भून सकें।"

"मुझे पता है गजराज। शांतनु ने निहारिका को मेरी इंसानियत का इस्तेमाल करने का आइडिया दिया है," आर्यन ने अपनी पिस्तौल को होल्स्टर में डालते हुए कहा। उसकी आंखों में एक खौफनाक सन्नाटा था।

"तो फिर हम क्या करेंगे बॉस?"

आर्यन ने टेबल पर रखे दिल्ली के नक्शे पर रायचंद टावर्स की लोकेशन को देखा। "वो मेरे लिए चक्रव्यूह बना रहे हैं। उन्हें लगता है कि मैं मेन गेट से घुसूंगा। लेकिन हम उस इमारत में ऐसे दाखिल होंगे, जिसकी कल्पना निहारिका के बाप ने भी नहीं की होगी।"

आर्यन ने अपना फोन उठाया और डायरेक्टर वर्मा (सीबीआई) का नंबर डायल किया। "वर्मा जी, आपने पूछा था ना कि मुझे क्या चाहिए? मुझे रायचंद टावर्स के सिक्योरिटी सिस्टम के मास्टर-कोड्स और दिल्ली एयर-ट्रैफिक कंट्रोल से आधे घंटे के लिए उस इलाके का नो-फ्लाई ज़ोन क्लीयरेंस चाहिए।"

डायरेक्टर वर्मा कांप गया। "नो-फ्लाई ज़ोन? आर्यन, तुम क्या करने वाले हो?"

"मैं आसमान से मौत बरसाने वाला हूं," आर्यन ने फोन काट दिया।

रात के ग्यारह बजकर पैंतालीस मिनट (11:45 PM)।

मुंबई नहीं, बल्कि दिल्ली में बने रायचंद ग्रुप के दूसरे सबसे बड़े 'रायचंद टावर्स' की 50वीं मंज़िल (फ्लैट) पर मौत का सन्नाटा पसरा था। पूरा टावर खाली करवा लिया गया था। इमारत के हर फ्लोर, हर सीढ़ी और छतों पर निहारिका के हाई-टेक मर्सिनरीज़ तैनात थे। उनके हाथों में नाइट-विज़न गॉगल्स और साइलेंसर लगी स्नाइपर राइफल्स थीं।

फ्लैट के बड़े से हॉल में तनिशा एक कुर्सी से बंधी थी। उसे होश आ चुका था। उसके सामने विक्रांत रायचंद और निहारिका सिंघानिया खड़े थे।

"वो नहीं आएगा," तनिशा ने खून थूकते हुए कहा। "आर्यन बेवकूफ नहीं है कि तुम्हारी इस मौत की बिछी हुई चादर पर पैर रखेगा।"

निहारिका ने एक ठंडी मुस्कान के साथ अपनी घड़ी देखी। "ग्यारह पचास (11:50)। वो आएगा तनिशा। और जैसे ही वो इस इमारत के ग्राउंड फ्लोर पर कदम रखेगा, मेरे कमांडोज़ उसे गोलियों से छलनी कर देंगे। आज द घोस्ट की कहानी हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।"

लेकिन निहारिका की नज़रें नीचे थीं, उसे अंदाज़ा नहीं था कि खतरा ज़मीन से नहीं, बल्कि आसमान से आ रहा था।

रायचंद टावर्स के ठीक ऊपर, बादलों के बीच एक ब्लैक-हॉक हेलीकॉप्टर बिल्कुल बिना आवाज़ किए (स्टेल्थ मोड में) उड़ रहा था। ये हेलीकॉप्टर सीबीआई के स्पेशल ऑपरेशंस का था, जिसे आर्यन ने डायरेक्टर वर्मा को ब्लैकमेल करके हासिल किया था।

हेलीकॉप्टर का दरवाज़ा खुला। आर्यन प्रताप बिल्कुल किनारे पर खड़ा था। उसने फुल टैक्टिकल गियर, बुलेटप्रूफ वेस्ट और एक विंग-सूट पहना हुआ था। उसके चेहरे पर एक ब्लैक मास्क था और उसकी पीठ पर दो स्नाइपर राइफल्स बंधी थीं।

"बॉस, ड्रॉप ज़ोन 500 मीटर नीचे है। विंड स्पीड नॉर्मल है," गजराज ने हेडफोन पर कहा।

"रायचंद का गुरूर आसमान छूता है गजराज। आज हम उसे उसी के आसमान से नीचे गिराएंगे," आर्यन ने कहा।

रात के ठीक 11:55 बजे, आर्यन प्रताप ने हेलीकॉप्टर से 50 मंज़िला रायचंद टावर्स की छत की तरफ छलांग लगा दी।

हवा को चीरते हुए, मौत का ये फरिश्ता सीधे निहारिका के उस खौफनाक चक्रव्यूह के बिल्कुल बीचों-बीच, आसमान से उतर रहा था। आज रात दिल्ली के इतिहास का सबसे बड़ा, खूनी और रोंगटे खड़े कर देने वाला महायुद्ध शुरू होने वाला था।

## अध्याय 25:

रात के गहराते अंधेरे में दिल्ली के आसमान पर सन्नाटा था। ज़मीन से हज़ार फीट ऊपर, 50 मंज़िला रायचंद टावर्स के ठीक ऊपर मंडराते काले बादलों को चीरता हुआ एक साया नीचे की तरफ गोता लगा रहा था।

आर्यन प्रताप हवा में 200 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गिर रहा था। उसके चेहरे पर लगा ब्लैक टैक्टिकल मास्क बर्फीली हवा को रोक रहा था। नीचे, रायचंद टावर्स का विशाल ग्लास फ्लैट चमक रहा था। आर्यन ने अपनी कलाई पर बंधे अल्टीमीटर (Altimeter) पर नज़र डाली। 500 फीट... 300 फीट...

ठीक 150 फीट की ऊंचाई पर आर्यन ने अपना विंग-सूट (Wingsuit) खोला और हवा को चीरते हुए अपनी गति को धीमा किया। वो इमारत के सीधे ऊपर आने के बजाय एक घुमावदार कट मारते हुए फ्लैट के ऊपर बने प्राइवेट हेलीपैड की तरफ ग्लाइड करने लगा।

हेलीपैड पर निहारिका के दो बेस्ट स्नाइपर्स नाइट-विज़न गॉगल्स लगाए नीचे सड़क की तरफ अपनी राइफल्स ताने लेटे थे। उन्हें आसमान से खतरे की कोई उम्मीद नहीं थी।

आर्यन बिल्कुल बिना आवाज़ किए हेलीपैड के एक अंधेरे कोने में उतरा। उसने फुर्ती से अपना विंग-सूट उतारा और अपने दोनों हाथों में कार्बन-स्टील के कॉम्बैट चाकू निकाल लिए। वो किसी खामोश तेंदुए की तरह रेंगते हुए पहले स्नाइपर के पीछे पहुंचा। एक हाथ से उसका मुंह दबाया और दूसरे हाथ से चाकू उसकी गर्दन की नस में उतार दिया। स्नाइपर बिना फड़फड़ाए ढेर हो गया।

दूसरे स्नाइपर को कुछ आहट महसूस हुई। वो मुड़ा, लेकिन इससे पहले कि वो अपनी उंगली ट्रिगर पर दबा पाता, आर्यन का दूसरा चाकू हवा को चीरता हुआ सीधा उसके गले के आर-पार हो गया।

छत अब पूरी तरह आर्यन के कब्ज़े में थी। उसने अपनी बेल्ट से एक हाई-टेंशन रैपलिंग रोप (Rappelling Rope) निकाली, उसे हेलीपैड के लोहे के पिलर से बांधा और फ्लैट की कांच की दीवारों के ठीक ऊपर से नीचे लटक गया। अंदर का नज़ारा उसे साफ दिखाई दे रहा था।

फ्लैट के विशाल और आलीशान हॉल में मौत का सन्नाटा पसरा था। तनिशा एक भारी ओक-वुड की कुर्सी से बंधी हुई थी। उसके चेहरे पर खरोंचें थीं और होंठ से रिसता हुआ खून सूख चुका था। लेकिन उसकी आंखों में डर नहीं, बल्कि एक अजेय गुरूर था।

"तुम्हारी घड़ी में बारह बज चुके हैं निहारिका," तनिशा ने एक खुरदुरी मुस्कान के साथ कहा। "द घोस्ट (प्रेत) तुम्हारे बिछाए हुए ज़मीनी जाल में नहीं फंसा। तुम हार गई।"

निहारिका सिंघानिया हाथ में स्कॉच का ग्लास लिए मॉनिटर्स की तरफ देख रही थी, जिनमें ग्राउंड फ्लोर और बेसमेंट की सीसीटीवी फुटेज चल रही थी। वहां सब शांत था। निहारिका के चेहरे पर एक अजीब सी झुंझलाहट और गुस्सा उभर आया।

विक्रांत रायचंद का बुरा हाल था। वो पसीने से भीग चुका था और कमरे में पागलों की तरह टहल रहा था। "वो पुलिस लेकर आ रहा होगा निहारिका! हमें यहां से निकलना चाहिए। वो पागल है, वो हमें ज़िंदा नहीं छोड़ेगा!"

निहारिका ने स्कॉच का एक बड़ा घूंट लिया और विक्रांत की तरफ मुड़ी। विक्रांत का ये खौफ और उसकी ये कमज़ोरी निहारिका के अंदर एक खौफनाक और जंगली हवस पैदा कर रही थी। निहारिका को सत्ता और खौफ का ये खेल किसी मादक नशे की तरह लगता था।

वो अपनी लंबी टांगों से चलती हुई विक्रांत के बिल्कुल करीब आई। उसने विक्रांत की आंखों में देखा। "मुझे वो मर्द बहुत पसंद हैं जो मौत के खौफ से कांप रहे होते हैं विक्रांत। तुम्हारा ये डर... तुम्हारे जिस्म से उठती ये पसीने की गंध... मुझे पागल कर रही है।"

विक्रांत कुछ समझ पाता, इससे पहले ही निहारिका ने विक्रांत के कॉलर को दोनों हाथों से जकड़ा और उसे अपनी तरफ खींचकर उसके होठों को बेरहमी से चूमने लगी। ये कोई प्यार भरा चुंबन नहीं था; ये एक ऐसा चुंबन था जिसमें खून, खौफ और डोमिनेंस (वर्चस्व) की पूरी गर्मी थी।

निहारिका के नाख़ून विक्रांत की गर्दन को खरोंच रहे थे। विक्रांत भी इस खौफनाक पल में खुद को भूल गया और उसने निहारिका की कमर को कसकर पकड़ लिया। दोनों की भारी सांसें उस बड़े से हॉल में गूंजने लगीं। निहारिका ने विक्रांत को पीछे धकेला, जिससे वो एक बड़े से लेदर सोफे पर गिर पड़ा। निहारिका उसके ऊपर चढ़ गई और विक्रांत की शर्ट के बटन एक ही झटके में तोड़ दिए।

तनिशा ने घिन से अपना चेहरा दूसरी तरफ फेर लिया। "तुम दोनों सच में जानवर हो। मौत तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ी है और तुम यहां अपनी हवस मिटा रहे हो।"

निहारिका ने तनिशा की तरफ देखा, विक्रांत की छाती पर हाथ फेरते हुए एक कातिलाना मुस्कान दी। "मौत तो मैं खुद हूं तनिशा। आर्यन प्रताप को आने दो, मैं उसे भी इसी बिस्तर पर..."

लेकिन निहारिका अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाई।

'क्रैश!'

फ्लैट की एक पूरी कांच की दीवार एक भयंकर और कानफाड़ू धमाके के साथ अंदर की तरफ टूट कर गिरी। हज़ारों कांच के टुकड़े बारिश की तरह हॉल में बिखर गए। हवा का एक तेज़ झोंका अंदर आया, जिसने कमरे के सारे पर्दे और लाइटें बुझा दीं।

निहारिका और विक्रांत झटके से सोफे से नीचे गिरे।

"फायर! फायर!" निहारिका चिल्लाई।

हॉल के अंधेरे कोनों में छिपे निहारिका के पांच एलिट मर्सिनरीज़ ने टूटी हुई खिड़की की तरफ अपनी ऑटोमैटिक राइफल्स से अंधाधुंध गोलियों की बौछार कर दी। गोलियों की आवाज़ से पूरा टावर गूंज उठा।

लेकिन टूटी हुई खिड़की से कोई इंसान अंदर नहीं आया था, सिर्फ दो स्मोक ग्रेनेड (Smoke Grenades) अंदर फेंके गए थे। कुछ ही सेकंड में पूरा हॉल घने सफेद धुएं से भर गया।

कमांडोज़ को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वो लेज़र लाइट्स के ज़रिए धुएं में दुश्मन को ढूंढ रहे थे।

तभी छत पर लगे वेंटिलेशन शाफ्ट की जाली टूटी और एक साया सीधे एक कमांडो के कंधों पर आकर गिरा। आर्यन प्रताप!

आर्यन ने हवा में ही उस कमांडो की गर्दन को अपने पैरों में फंसाया और एक ज़ोरदार झटके के साथ उसे ज़मीन पर पटक कर बेहोश कर दिया।

अगले दो मिनट फ्लैट में गन-फू (Gun-fu) स्टाइल का वो खूनी तांडव चला, जो किसी ने सपने में भी नहीं सोचा होगा। आर्यन धुएं में किसी प्रेत की तरह गायब होता और फिर अचानक किसी कमांडो के पीछे प्रकट होता।

एक कमांडो ने आर्यन पर गोली चलाई, लेकिन आर्यन ने बिजली की फुर्ती से झुककर उसके हाथ को मरोड़ा। कमांडो की राइफल से निकली गोलियां उसी के दूसरे साथी के सीने में जा धंसीं। आर्यन ने अपनी कोहनी से उस कमांडो के जबड़े पर इतना ज़ोरदार वार किया कि वो खून थूकता हुआ दूर जा गिरा।

तीसरा और चौथा कमांडो एक साथ आर्यन की तरफ झपटे। आर्यन ने अपनी 9mm पिस्तौल निकाली। 'बैंग! बैंग!' दो सटीक गोलियां दोनों कमांडोज़ के घुटनों को चीरती हुई निकल गईं। वो दर्द से चीखते हुए फर्श पर गिर पड़े।

धुआं छंटने लगा था।

इमरजेंसी रेड लाइट्स ऑन हो गईं। पूरा हॉल लाल रोशनी और खून के छींटों से सन चुका था।

निहारिका सिंघानिया अपनी जगह से खड़ी हुई। उसके हाथ में एक छोटी सिल्वर रिवॉल्वर थी, जिसका निशाना सीधा आर्यन के सीने पर था। विक्रांत उसके पीछे खौफ से कांपते हुए ज़मीन पर बैठा था।

आर्यन प्रताप हॉल के बीचों-बीच खड़ा था। उसके कॉम्बैट सूट पर कांच के टुकड़े चिपके थे। उसने अपनी पिस्तौल सीधी निहारिका के माथे पर तान दी।

"खेल खत्म निहारिका," आर्यन की भारी और सर्द आवाज़ हॉल में गूंजी।

निहारिका के चेहरे पर मौत का कोई खौफ नहीं था। उसकी वो खूंखार मुस्कान अभी भी उसके चेहरे पर चिपकी थी। "तुम्हें क्या लगा आर्यन? मैं माया चौधरी जैसी कोई सस्ती मोहरी हूं जो तुम्हारे सामने घुटने टेक दूंगी?"

निहारिका ने अपनी रिवॉल्वर नीचे की और अपनी कलाई पर बंधी एक हाई-टेक स्मार्टवॉच का ढक्कन खोला। वहां एक लाल रंग का बटन ब्लिंक कर रहा था।

आर्यन की आंखें सिकुड़ गईं।

"ये एक डेड-मैन्स स्विच (Dead-man's switch) है आर्यन," निहारिका ने ज़ोर से हंसते हुए कहा। "तुम्हें लगता है कि तुमने के.के. रायचंद को डरा लिया? बेवकूफ! के.के. रायचंद ने मुझे आदेश दिया है कि अगर द घोस्ट इस बिल्डिंग में आता है, तो मैं इस पूरे फ्लैट को बम से उड़ा दूं। रायचंद साम्राज्य को बचाने के लिए के.के. अपने बेटे विक्रांत को भी कुर्बान करने के लिए तैयार है।"

ये सुनते ही विक्रांत रायचंद की सांसें रुक गईं। "क्या? डैड ने... डैड ने मुझे मरने के लिए छोड़ दिया? निहारिका, तुम झूठ बोल रही हो!" विक्रांत पागलों की तरह चिल्लाने लगा।

निहारिका ने विक्रांत की तरफ हिकारत से देखा। "तुम सिर्फ एक कमज़ोर कीड़े हो विक्रांत। तुम्हारी कुर्बानी से रायचंद ग्रुप हमेशा के लिए सेफ हो जाएगा।"

निहारिका ने आर्यन की तरफ देखा। "पूरे 50वें फ्लोर पर C4 एक्सप्लोसिव लगा है आर्यन। मैं ये बटन दबाऊंगी, और हम चारों जलकर राख हो जाएंगे। न कोई सुबूत बचेगा, न कोई गवाह, और न ही कोई घोस्ट।"

तनिशा, जो अभी भी कुर्सी से बंधी थी, उसकी आंखों में खौफ तैर गया। आर्यन ने तनिशा की तरफ देखा। उसे हर हाल में तनिशा को यहां से ज़िंदा बाहर निकालना था।

"तुम मौत से नहीं डरती निहारिका, लेकिन तुम हारने से डरती हो," आर्यन ने अपनी पिस्तौल को अपनी बेल्ट में रखा।

"क्या मतलब?" निहारिका ने बटन पर उंगली रखते हुए पूछा।

"तुम सोच रही हो कि के.के. रायचंद तुम्हें एक शहीद का दर्ज़ा देगा? मैंने के.के. का फोन रिकॉर्ड कर लिया है। उसने सीबीआई को ये बयान भेजा है कि तुम, निहारिका सिंघानिया, ही असली मास्टरमाइंड हो। उसने तुम्हें और विक्रांत को इंटरनेशनल टेररिस्ट घोषित कर दिया है। अगर तुम ये बम फोड़ोगी, तो तुम एक आतंकवादी की तरह मरोगी, और के.के. रायचंद सारे पैसे लेकर देश से भाग जाएगा," आर्यन ने अपना मास्टरस्ट्रोक खेल दिया था।

निहारिका की खूंखार मुस्कान अचानक गायब हो गई। "झूठ! तुम मुझे फंसा रहे हो!"

"चेक योर फोन, निहारिका," आर्यन ने ठंडी आवाज़ में कहा।

निहारिका ने जैसे ही अपना दूसरा फोन निकाला और स्क्रीन देखी, हर न्यूज़ चैनल पर फ्लैश हो रहा था: *'रायचंद कॉर्प के चेयरमैन के.के. रायचंद ने अपनी कंपनी की वकील निहारिका सिंघानिया पर लगाया यूरेनियम चोरी और देशद्रोह का आरोप।'*

निहारिका के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। के.के. रायचंद ने उसे सरेआम धोखा दे दिया था! जिस वफादारी और गुरूर में वो जल रही थी, वो सब एक धोखा था।

उसी एक सेकंड के डिस्ट्रैक्शन (ध्यान भटकने) का आर्यन को इंतज़ार था।

आर्यन ने अपनी बेल्ट से एक टैक्टिकल फ्लैश-बैंग (Flash-bang) निकाला और सीधा निहारिका के पैरों के पास फेंक दिया।

'बूम!'

एक अंधा कर देने वाली तेज़ रोशनी और कान फाड़ देने वाली आवाज़ हुई। निहारिका चीखते हुए पीछे गिरी। विक्रांत ने अपनी आंखें बंद कर लीं।

आर्यन ने बिजली की फुर्ती से तनिशा की तरफ छलांग लगाई। उसने अपने कॉम्बैट चाकू से तनिशा की रस्सियां काटीं।

"आर्यन! भागो!" तनिशा ने रस्सियां खुलते ही चिल्लाया।

निहारिका की आंखों में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन गुस्से और बदले की आग में अंधी होकर उसने उस स्मार्टवॉच का लाल बटन दबा दिया।

"मर जाओ कमीनों!" निहारिका चीखी।

फ्लैट की दीवारों में छिपे हुए C4 एक्सप्लोसिव्स में बीप-बीप की तेज़ आवाज़ होने लगी। सिर्फ 15 सेकंड का टाइमर स्टार्ट हो चुका था!

"पकड़ कर रखना!" आर्यन ने तनिशा को अपनी बाहों में कसकर जकड़ा। उसने अपनी रैपलिंग रोप का हुक तनिशा की बेल्ट में फंसाया और उसे लेकर टूटी हुई कांच की दीवार की तरफ दौड़ पड़ा।

विक्रांत ज़मीन पर पड़ा रो रहा था। निहारिका अपनी रिवॉल्वर से हवा में अंधी गोलियां चला रही थी।

ठीक उसी पल जब टाइमर शून्य (0) पर पहुंचा, आर्यन ने तनिशा के साथ उस 50 मंज़िला इमारत की टूटी हुई खिड़की से हवा में छलांग लगा दी।

'भड़ाम!'

एक ऐसा भयंकर और कानफाड़ू धमाका हुआ कि पूरी दिल्ली दहल गई। रायचंद टावर्स की 50वीं मंज़िल आग के एक विशाल गोले में तब्दील हो गई।

कांच के लाखों टुकड़े आग के शोले बनकर आसमान से बारिश की तरह नीचे गिरने लगे।

निहारिका सिंघानिया और विक्रांत रायचंद उस आग के बवंडर में हमेशा के लिए खाक हो गए। सत्ता, हवस और कॉर्पोरेट माफिया का एक बहुत बड़ा अध्याय राख बन चुका था।

लेकिन नीचे, आग के उन गिरते हुए शोलों के बीच, एक काली रस्सी के सहारे हवा में झूलते हुए आर्यन और तनिशा मौत के मुंह से बाहर आ चुके थे।

आर्यन ने तनिशा को कसकर पकड़ा हुआ था। नीचे पुलिस के सायरन बज रहे थे। के.के. रायचंद ने अपना मोहरा चलकर खुद को बचाने की कोशिश की थी, लेकिन उसे अंदाज़ा नहीं था कि आर्यन प्रताप अब उसके खून का प्यासा हो चुका था।

रायचंद साम्राज्य की सबसे बड़ी रात अभी खत्म नहीं हुई थी। खेल का सबसे आखिरी और खूंखार दुश्मन अब आर्यन के निशाने पर था।

## अध्याय 26:

रायचंद टावर्स की 50वीं मंज़िल अब आग के एक धधकते हुए ज्वालामुखी में बदल चुकी थी। धुएं का गुबार दिल्ली के आसमान को काला कर रहा था। ज़मीन पर फायर ब्रिगेड और पुलिस की दर्जनों गाड़ियां सायरन बजा रही थीं, लेकिन किसी की भी नज़र उस अंधेरे हिस्से पर नहीं गई, जहां 40वीं मंज़िल की एक खिड़की का कांच तोड़कर आर्यन और तनिशा अंदर दाखिल हुए थे।

रैपलिंग रोप (Rappelling rope) से लटकते हुए आर्यन ने हवा में ही खिड़की तोड़ी थी और तनिशा को सुरक्षित अंदर खींच लिया था। तनिशा ज़मीन पर गिरते ही भारी सांसें लेने लगी। उसकी आंखों के सामने अभी भी मौत नाच रही थी।

"हम बच गए... आर्यन, हम बच गए," तनिशा की आवाज़ कांप रही थी।

आर्यन ने अपनी बेल्ट से रस्सी खोली और एक नज़र ऊपर जलती हुई छत की तरफ देखा। उसकी आंखों में कोई राहत नहीं थी। "विक्रांत और निहारिका सिर्फ मोहरे थे तनिशा। जब तक सांप का सिर नहीं कुचला जाता, ज़हर फैलता रहेगा।"

आर्यन ने अपना कम्युनिकेटर ऑन किया। "गजराज, एक्सट्रैक्शन पॉइंट पर पहुंचो।"

कुछ ही मिनटों बाद, दोनों सर्विस एलिवेटर से होते हुए बेसमेंट में पहुंचे, जहां गजराज एक चोरी की हुई एंबुलेंस लेकर उनका इंतज़ार कर रहा था। पुलिस की भीड़ और अफरातफरी के बीच, वो एंबुलेंस सायरन बजाते हुए बड़े आराम से पुलिस के घेरे को पार कर गई।

तनिशा ने एंबुलेंस में बैठते हुए पूछा, "अब क्या आर्यन? के.के. रायचंद मुंबई में है। वो देश छोड़कर भागने वाला होगा।"

आर्यन ने अपनी बुलेटप्रूफ जैकेट उतारते हुए एक खूंखार मुस्कान दी। "मैंने सीबीआई डायरेक्टर वर्मा को सिर्फ हेलीकॉप्टर के लिए ब्लैकमेल नहीं किया था तनिशा। मैंने उससे एक स्पेशल मिलिट्री जेट भी मांगा है, जो हिंडन एयरबेस पर मेरा इंतज़ार कर रहा है। के.के. रायचंद का गुरूर आसमान छूता है, आज मैं उसे उसी के आसमान से नीचे खींचूंगा।"

मुंबई। छत्रपति शिवाजी इंटरनेशनल एयरपोर्ट का वीआईपी प्राइवेट हैंगर।

रात के दो बज चुके थे। शहर सो रहा था, लेकिन के.के. रायचंद का प्राइवेट गल्फस्ट्रीम G650 जेट टेकऑफ के लिए तैयार किया जा रहा था। इस जेट का डेस्टिनेशन था— माल्टा (Malta), एक ऐसा देश जहां से प्रत्यर्पण (Extradition) लगभग नामुमकिन था।

हैंगर के बेहद लग्ज़री प्राइवेट वीआईपी लाउंज में के.के. रायचंद बैठा था। उसने टीवी पर रायचंद टावर्स में हुए धमाके की न्यूज़ देखी थी। उसे पता चल चुका था कि उसका बेटा विक्रांत और उसकी सबसे शातिर वकील निहारिका, दोनों मारे जा चुके हैं।

लेकिन के.के. रायचंद के चेहरे पर एक पिता का दर्द नहीं, बल्कि एक शैतान की राहत थी। "बेवकूफ विक्रांत... मैंने हमेशा कहा था कि वो औरत उसे खा जाएगी। लेकिन खैर, उन्होंने जाते-जाते आर्यन प्रताप को भी अपने साथ मार दिया। अब मेरे रास्ते का हर कांटा साफ है।"

के.के. ने पास ही रखे एक स्टील के ब्रीफकेस को थपथपाया, जिसमें हज़ारों करोड़ के स्विस बियरर बांड्स (Swiss Bearer Bonds) रखे थे।

तभी वीआईपी लाउंज का दरवाज़ा खुला और ज़ोया अंदर आई। 25 साल की ज़ोया, आधी रशियन और आधी इंडियन, के.के. रायचंद की प्राइवेट एयर-होस्टेस और उसकी सबसे महंगी रखैल थी। ज़ोया ने जेट-ब्लैक रंग की एक बेहद टाइट और पारदर्शी सिल्क ड्रेस पहनी हुई थी, जिसका स्लिट उसकी जांघों के बहुत ऊपर तक था। उसकी गहरी नीली आंखें और सुडौल बदन किसी भी मर्द को मदहोश करने के लिए काफी था।

"सर, जेट दस मिनट में टेकऑफ के लिए रेडी है," ज़ोया ने अपनी नशीली आवाज़ में कहा।

के.के. रायचंद ने अपने हाथ में पकड़ा शैम्पेन का ग्लास मेज़ पर रखा। जीत के गुरूर और सत्ता के नशे ने उसके अंदर एक अलग ही किस्म की हवस पैदा कर दी थी। अपने बेटे के मरने का कोई मातम नहीं, सिर्फ अपनी जान बचने और करोड़ों का खज़ाना साथ ले जाने की खुशी।

"दस मिनट बहुत होते हैं ज़ोया," के.के. ने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा। उसकी नज़रें ज़ोया के जिस्म को बुरी तरह घूर रही थीं। "आज मैं पूरी दुनिया को हराकर यहां से निकल रहा हूं। मुझे एक सेलिब्रेशन चाहिए।"

ज़ोया मुस्कुराई। वो जानती थी कि उसे किस चीज़ के पैसे मिलते हैं। वो इत्मीनान से चलकर के.के. के करीब आई। उसने अपने सिल्क ड्रेस की ज़िप को हल्के से नीचे सरकाया, जिससे उसका गोरा और मखमली सीना आधा नंगा हो गया।

"आज की रात सिर्फ आपकी है सर," ज़ोया ने के.के. रायचंद के गले में अपनी बाहें डालते हुए उसके होठों को चूम लिया।

के.के. रायचंद के अंदर की हवस बेकाबू हो गई। उसने ज़ोया को बाहों में उठाया और लाउंज में रखे एक बड़े से लेदर सोफे पर गिरा दिया। ज़ोया की ड्रेस उसके कंधों से खिसक चुकी थी। के.के. उसके बदन पर टूट पड़ा। पसीने, शैम्पेन और महंगे परफ्यूम की महक उस कमरे में फैल गई। के.के. अपने खुरदुरे हाथों से ज़ोया के जिस्म को इस तरह नोच रहा था जैसे वो कोई इंसान नहीं, बल्कि उसकी जीती हुई कोई ट्रॉफी हो। ज़ोया की मादक सिसकियां लाउंज के सन्नाटे को तोड़ रही थीं। के.के. इस जिस्मानी खेल में इतना अंधा हो चुका था कि उसे बाहर हैंगर में होने वाली खामोश आहटों का कोई अंदाज़ा नहीं था।

"मैं किंग हूं..." के.के. रायचंद ने ज़ोया की गर्दन को चूमते हुए हांफती आवाज़ में कहा। "कोई मुझे नहीं हरा सकता..."

अचानक, वीआईपी लाउंज की सारी लाइटें एक झटके में बुझ गईं।

के.के. रायचंद की हवस का नशा पल भर में टूट गया। "ये क्या बकवास है? सिक्योरिटी!" के.के. चिल्लाया।

ज़ोया घबराकर सोफे के कोने में सिकुड़ गई और उसने अपनी ड्रेस से खुद को ढकने की कोशिश की।

कुछ ही सेकंड बाद, लाउंज की बड़ी एलईडी स्क्रीन अपने आप ऑन हो गई। स्क्रीन से छनकर आती नीली रोशनी में के.के. रायचंद का डरा हुआ चेहरा साफ दिख रहा था।

स्क्रीन पर कोई न्यूज़ चैनल नहीं चल रहा था। स्क्रीन पर स्विस बैंक के विदेशी सर्वर्स का डेटा फ्लैश हो रहा था।

के.के. की आंखें फटी की फटी रह गईं। स्क्रीन पर उसका अकाउंट नंबर लिखा था, और उसके नीचे बैलेंस दिखा रहा था: **$2.5 Billion**

लेकिन अगले ही सेकंड, वो बैलेंस तेज़ी से कम होने लगा। $2 Billion... $1 Billion... $500 Million... **$0.00**

"नहीं! नहीं! ये कैसे हो सकता है!" के.के. रायचंद पागलों की तरह स्क्रीन की तरफ दौड़ा। उसने अपने स्टील के ब्रीफकेस को खोला। ब्रीफकेस के अंदर रखे वो बांड्स अचानक धुएं के साथ जलने लगे! ब्रीफकेस में एक छोटा सा फास्फोरस डिवाइस लगा था, जिसे रिमोट से एक्टिवेट किया गया था। चंद सेकंड में उसके हज़ारों करोड़ के बांड्स राख में बदल गए।

"मेरा पैसा! मेरी ज़िंदगी की कमाई!" के.के. ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गया और राख को मुट्ठी में भींचकर रोने लगा।

तभी, लाउंज के दरवाज़े से एक भारी बूट की आवाज़ आई। दरवाज़ा खुला और नीली रोशनी के बीच एक लंबा-चौड़ा साया अंदर दाखिल हुआ।

के.के. ने झटके से पीछे मुड़कर देखा।

काले कॉम्बैट सूट में, चेहरे पर खून के हल्के निशान और हाथों में 9mm की दो पिस्तौल लिए... आर्यन प्रताप खड़ा था। उसकी आंखों में एक ऐसा खौफनाक अंधकार था, जिसे देखकर मौत भी कांप जाए।

"तुम..." के.के. के हलक से आवाज़ नहीं निकल रही थी। "तुम तो उस धमाके में..."

"मुर्दे किसी धमाके में नहीं मरते के.के.," आर्यन ने बिल्कुल शांत, लेकिन ज़हरीली आवाज़ में कहा। वो धीरे-धीरे चलते हुए के.के. के पास आया। ज़ोया डर के मारे एक कोने में कांप रही थी।

"तुमने अपने ही बेटे को मरने के लिए छोड़ दिया, ताकि तुम अपना पैसा लेकर भाग सको," आर्यन ने के.के. के बालों को मुट्ठी में पकड़कर उसका चेहरा ऊपर उठाया। "लेकिन तुम्हें क्या लगा? द घोस्ट सिर्फ गोलियां चलाता है? तुम्हारा स्विस बैंक का सारा पैसा मैंने देश के अनाथालयों और किसान राहत कोष में ट्रांसफर कर दिया है। और वो जो बांड्स जले हैं... वो मैंने तुम्हारे ही एक प्राइवेट सिक्योरिटी गार्ड को खरीदकर जलवाए हैं।"

"तुम... तुम एक शैतान हो!" के.के. रायचंद की आंखों से आंसू बह रहे थे। उसका गुरूर, उसका पैसा, उसका साम्राज्य... सब कुछ महज़ दो मिनट में खाक हो चुका था।

"मैंने तुमसे कहा था के.के.," आर्यन ने अपनी पिस्तौल की ठंडी बैरल के.के. रायचंद के पसीने से लथपथ माथे पर टिका दी। "तुम्हारे इस सिस्टम ने मुझे बनाया है। और अब मैं इस सिस्टम को जड़ से उखाड़ दूंगा।"

"आर्यन... मुझे मत मारो! मैं तुम्हें वो सब वापस दिलवा दूंगा जो शांतनु और माया ने तुमसे छीना था! मैं तुम्हें मुख्यमंत्री बनाऊंगा!" के.के. रायचंद अब एक भिखारी की तरह गिड़गिड़ा रहा था।

आर्यन के चेहरे पर एक खौफनाक मुस्कान आ गई। "मुझे कुर्सी नहीं चाहिए के.के.। मुझे वो चीखें चाहिए जो तुमने उन बेगुनाह लोगों को दी हैं, जिनका खून पीकर तुमने ये साम्राज्य खड़ा किया है।"

आर्यन ने अपनी पिस्तौल का हैमर पीछे खींचा। 'क्लिक' की आवाज़ मौत के आखिरी फरमान जैसी थी।

"राम-राम, मिस्टर रायचंद।"

'बैंग!'

वीआईपी लाउंज में गोली की गूंज उठी। के.के. रायचंद का शरीर एक झटके के साथ पीछे गिरा। देश के सबसे बड़े कॉर्पोरेट माफिया का खौफनाक अंत हो चुका था।

ज़ोया डर के मारे अपनी आंखें बंद करके चीख पड़ी। आर्यन ने एक नज़र उस कांपती हुई लड़की पर डाली। उसने अपनी पिस्तौल वापस बेल्ट में रखी और ज़ोया की तरफ एक बैग फेंक दिया।

"इस बैग में दस लाख रुपये हैं। अपनी ये ज़िंदगी छोड़ो और किसी ऐसी जगह चली जाओ, जहां सत्ता की ये गंदी हवा न पहुंच सके," आर्यन ने कहा।

आर्यन मुड़ा और वीआईपी लाउंज से बाहर निकल गया। बाहर हैंगर में गजराज और तनिशा उसका इंतज़ार कर रहे थे।

सुबह की पहली किरण मुंबई के आसमान पर फूट रही थी। आर्यन का इंतकाम पूरा हो चुका था। शांतनु अपाहिज होकर जेल में था, माया चौधरी का पर्दाफाश हो चुका था, और रायचंद का साम्राज्य राख में मिल गया था।

तनिशा ने आर्यन को बाहर आते देखा। "सब खत्म हो गया आर्यन?"

आर्यन ने आसमान की तरफ देखा और एक गहरी सांस ली। उसके चेहरे पर लंबे समय बाद एक अजीब सा सुकून था।

"ये शतरंज का खेल खत्म हुआ है तनिशा," आर्यन ने एक ठंडी मुस्कान के साथ कहा। "लेकिन जब तक इस देश में सत्ता की भूख है, कोई न कोई नया खिलाड़ी पैदा होगा। और जब भी ऐसा होगा... द घोस्ट वापस आएगा।"

आर्यन अंधेरे की तरफ बढ़ गया, पीछे एक ऐसा खौफ और एक ऐसी लेगेसी छोड़कर, जिसे ये देश कभी नहीं भूल पाएगा।

**--- सत्ता का स्कैंडल (समाप्त) ---**